RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Div./244/2020-2022
Desp. Date - 02 October, 2021

अंक – 04 (मासिक) वर्ष – 17 अक्टूबर, 2021 मूल्य 20/–

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

वरिष्ठजन विशेषांक

UPSC में 18वीं रैंक
राधिका गुप्ता

वाइस डिस्ट्रिक्ट गवर्नर बने
ओमप्रकाश गग्गड़

35 वर्ष में जीता विश्वास
10 हजार करोड़ पार
बुलडाना अर्बन बैंक

विश्वास के प्रतिमान

वैवाहिक डायरेक्ट्री
श्री माहेश्वरी मेलापक 2021
का प्रकाशन प्रारंभ

Visit us @
srimaheshwaritimes.com

SMT NEWS
VIDEO NEWS BULLETIN

RR KĀBEL

MAKE THE
RIGHT CHOICE
FOR YOUR HOME

DO THE
AKALMAND
THING!

RR GLOBAL
RAM RATNA GROUP

R R KABEL LTD. Regd. Office : Ram Ratna House, Oasis Complex, P. B. Marg, Worli, Mumbai - 400 013.
T : +91 - 22 - 2494 9009 / 2492 4144 • **F** : +91 - 22 - 2491 2586 • **E** : mumbai.rrkabel@rrglobal.in
Corp. Office : 305/A, Windsor Plaza, R. C. Dutt Road, Alkapuri, Vadodara - 390 007.
T : +91 - 265 - 2321 891 / 2 / 3 • **F** : +91 - 265 - 2321 894 • **E** : vadodara.rrkabel@rrglobal.in
www.rrkabel.com • www.rrglobal.in

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

▸▸ अंक-04 ▸▸ अक्टूबर 2021 ▸▸वर्ष-17

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक
रमेशचन्द्र माहेश्वरी 'राजहंस', बीजनौर (उ.प्र.)

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
प्रो. कल्पना गगडानी (मुम्बई)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
■ PNB A/c. No. : 0459002100043471
IFSC- PUNB0045900
■ ICICI A/c. No. : 030005001198
IFSC- ICIC0000300
Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

समाज के समस्त वरिष्ठजनों का हार्दिक अभिनंदन, प्रणाम एवं मंगलकामनाएं

श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार

विचार क्रान्ति

आदर करें वे महारथी, अपमान करें वे अर्धरथी

महाभारत कथा प्रमाण है हस्तिनापुर में जिस दिन से अंधे धृतराष्ट्र के हाथों में सत्ता के सूत्र आए, बुजुर्गों की अवज्ञा व अपमान आम बात हो गई थी। यही वृत्ति कुलनाश का कारण बनी। स्वयं धृतराष्ट्र अपने जन्मदाता महर्षि वेदव्यास, संरक्षक भीष्म और परिवार के बुजुर्ग बाह्लीक आदि की हितकारी बातों को एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देता था। न गुनता था, न आज्ञानुरूप करता था। वह आज्ञापालन के दिखावे की ओट में जीवनभर मनमानी करते हुए अपयश को प्राप्त हुआ। अंधे राजा का कुपुत्र दुर्योधन पिता से इस मामले में कई कदम आगे था। उसने घर के सारे बड़ों की उपस्थिति में अपनी भाभी द्रौपदी का अपमान कर डाला। फिर वेदव्यास, भीष्म, गुरु द्रोण, काका विदुर, अपने माता-पिता सहित अनेक वयोवृद्ध ऋषि-मुनियों की समझाइश के बावजूद पाण्डवों से युद्ध किया। परिणाम में भाइयों सहित मारा गया।

मनुष्य बुजुर्गों की अवहेलना और अपमान के कुसंस्कार घर के साथ कुसंगति से ग्रहण करता हैं। दुर्योधन में ये वृत्ति कर्ण की कुसंगत में और अधिक फली-फूली थी। उसका परम मित्र कर्ण भी बुजुर्गों का अपमान करने में नहीं हिचकता था। महायुद्ध से पहले अर्जुन से हुई हर झड़प में कर्ण बुरी तरह हारा था लेकिन जब महायुद्ध की तैयारी होने लगी तब भी आत्मप्रशंसा में डूबा रहा। उद्योग पर्व में युद्ध पूर्व तीन अलग-अलग प्रसंगों में भीष्म के सामने बड़बोलापन करने पर कर्ण को भीष्म ने डाँट लगाई थी। श्रीकृष्ण के शांतिदूत बन आने से पहले जब भीष्म आदि बुजुर्ग दुर्योधन को सन्धि के लिए समझा रहे थे, तब आत्मप्रशंसा के कारण भीष्म की फटकार से गुस्सा कर कर्ण सभा त्यागकर चला गया था।

आगे की कथा में रथी-महारथियों की गणना करते समय भीष्म ने कर्ण को 'अर्धरथी' कहा था और द्रोण ने उनका समर्थन किया था। उस घड़ी क्रोधित कर्ण ने भीष्म के अपमान की वह पराकाष्ठा कर डाली थी कि भीष्म उसे मार डालने को उठ खड़े हुए थे। इसी वाक् युद्ध के कारण कर्ण ने भीष्म के मारे जाने के बाद ही युद्ध में शामिल होने की सौगंध खाई थी और 18 दिन के युद्ध में दस दिन बाद शस्त्र उठाया था। मात्र छह दिन लड़कर सातवें दिन द्वैरथ युद्ध में अर्जुन के हाथों मारा गया था।

कर्ण महारथी था लेकिन 'अर्धरथी' माना गया। इसे प्रतीक के रूप में समझे तो जो लोग बुजुर्गों का अपमान करते हैं, वे इस कृत्य से अपने आधे 'तेज' का क्षय कर डालते हैं और परिणाम में वैसे ही नाश को प्राप्त होते हैं जैसे दुर्योधन और कर्ण हुए। मानो बुजुर्गों का आदर करने वाले ही सच्चे महारथी हैं और अपमान करने वाले अर्धरथी। इनसे उलट जो युधिष्ठिर की भाँति बड़े-बुजुर्गों के प्रति विनत होते हैं, उनकी सदा विजय होती है।

■ डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

यह हमारे 'साठ साल के जवान'

कभी टीवी पर इस वाक्य के साथ एक कंपनी अपने प्रॉडक्ट का विज्ञापन करती थी। यह विज्ञापन उन लोगों के लिए बड़ा प्रेरणादायी भी बना जो अब उम्र के उतार पर अपने आप को पा रहे थे। प्रॉडक्ट पर कितने लोगों ने विश्वास किया यह तो पता नहीं लेकिन मैं ऐसे अपने मित्र को जानता हूं जो इस वाक्य से प्रभावित होकर अपने आप को फिर से जवान बनाने में जुट गए। उनकी शारीरिक जवानी तो नहीं लौटी लेकिन इस उधेड़बून में उस पुराने फलसफे तक पहुंच गए जिसका आशय यह है कि जवान रहने के लिए शरीर नहीं दिल को जवान रखना जरूरी है। यानी जिसका दिल जवान है, उसके लिए शारीरिक बुढ़ापा कोई मायने नहीं रखता। वे उम्र के उतार पर भी ऐसा कुछ कर जाते हैं, कि जिससे उनकी जिंदादिली दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाती है। फिर क्या था, उन्होंने धरती को हराभरा करने का मिशन हाथ में ले लिया। आज वे अपने मिशन के साथ शहर के सैकड़ों बुजूर्गों को भी इस काम में जोड़ चुके हैं।

हमारे इस अंक का सारांश भी यही है। यह अंक हमने समाज के उन 60 साल या इससे अधिक उम्र के उन जवानों को समर्पित किया है, जो उम्रदराज होकर भी जवानों की तरह जुटे हैं। उनकी रचनात्मकता और सक्रियता हमें इस बात के लिए प्रोत्साहित करती है कि आपकी सोच के आगे उम्र कोई मायने नहीं रखती। इनके जीवन वृत्त की एक और बड़ी सीख यह है कि यदि आपको अपनी उम्र की चौथाई में अपने आप को जवान यानी सक्रिय रखना है तो इसकी तैयारी जवानी से ही शुरू करना होगी। अपने काम-धंधे, रोजगार और अन्य जिम्मेदारियों को निभाते हुए यदि आपने अपना कोई सर्वहिताय लक्ष्य तैयार कर लिया तो जब आप उस उम्र में आएंगे तो आपके सामने कोई दोराहा नहीं होगा कि अब क्या कर? आपका अपना लक्ष्य आपको प्रेरित करेगा और लोग आपके साथ होंगे। तब आप अकेले नहीं समाज आपके पीछे होगा। आप अपने आसपास एक नए संसार को महसूस करेंगे।

बीकानेर के गोवर्धनदास बिन्नानी ने लेखन को अपनाया। लेखन के माध्यम से न केवल उन्हें सम्मान मिला बल्कि वे समाज के मार्गदर्शक भी बने। उज्जैन के ओपी तोतला ने सीए के अपने प्रोफेशन के साथ समाज सेवा को लक्ष्य बनाया। विभिन्न संगठनों के माध्यम से समाज के वंचित वर्ग की मदद की। सीकर के महावीर प्रसाद काबरा सेवा के भामाशाह के रुप में जाने जाते हैं। उन्होंने शिक्षादान को लक्ष्य बनाकर समाज में शिक्षा का प्रसार किया। नीमच के सत्यनारायण गगरानी ने नेत्रदान जैसे पुण्यदायी अभियान को अपना लक्ष्य बना कर अपने शहर को देशभर पर में पहचान दिलाई। समाज में यदि हम अपने आसपास भी नजर डालें तो ऐसे कई बुजूर्ग जवान मिल सकते हैं। निश्चित ही वे समाज को जो कुछ दे रहे हैं, वह इस मायने में अतुलनीय है कि उनकी उम्र के कई ऐसे लोग हैं जो जिंदगी से थक कर बैठ गए हैं। निश्चित यह अंक न केवल उम्र के उतार पर आ रहे लोगों के लिए तो प्रेरक होगा ही युवाओं के लिए भी यह उतना ही प्रेरणीय बनेगा।

इस कड़ी में युवाओं की बात भी जरूरी है। आलीराजपुर की राधिका बाहेती को पूरा समाज बधाई दे रहा है। उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा में सफलता हासिल कर समाज को गौरवान्वित किया है। छोटे से शहर से सफलता का परचम फहरानी वाली राधिका युवाओं के लिए संदेश है कि इस मुकाम तक वे भी पहुंच सकते हैं। राधिका का कहना है कि जीवन का लक्ष्य बनाएं और आगे बढ़ने में पूरी ताकत लगा दें। यही सिद्धांत हर जगह काम करता है, भले वह परीक्षा, व्यवसाय हो या उद्योग। विश्वव्यापी सेवा संस्था लायंस क्लब के प्रांतीय वाईस डिप्टी गवर्नर बने ओमप्रकाश गग्गड़ को भी बहुत - बहुत बधाई। श्री गग्गड़ को बधाई विशेष रूप से इस लिये क्योंकि उन्होंने संस्था के विवादों में फंसे चुनावों में दोबारा जीत हासिल कर सिद्ध कर दिखाया कि सेवाभावना सदा चुनावी हथकंडों पर भारी पड़ती है। वास्तव में श्री गग्गड़ की जीत सेवा भावना की जीत ही है। यह अंक निश्चित तौर से आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप होगा, यह हमें विश्वास है। अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराना न भूलें।

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

बीजनौर (उ.प्र.) निवासी रमेश माहेश्वरी "राजहंस" साहित्य जगत का एक जाना-माना नाम हैं। गंज दारानगर, जहाँ भगवान श्री कृष्ण ने महात्मा विदुर का बथुआ का साग खाकर आतिथ्य ग्रहण किया था, ऐसे पावन स्थान के मूल निवासी परिवार में स्व. श्रीमती सावित्री व स्व. श्री शिवचरणदास डागा के यहाँ 5 सितम्बर 1956 को जन्मे व साहित्य जगत में "राजहंस" के नाम से ख्यात श्री माहेश्वरी ने बी.कॉम. तक शिक्षा ग्रहण की और फिर स्वव्यवसाय के रूप में वस्त्र व्यापार को अपनी आजीविका बना लिया। व्यापार-व्यवसाय की व्यस्तता के बावजूद ईश्वर प्रदत्त साहित्यिक अभिरूचि अभिव्यक्त हुए बिना नहीं रही। आप गत कई वर्षों से गीत, कविता, गीतिका, दोहा के साथ ही लघु कथा आदि का लेखन करते हुए हिन्दी साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। वर्ष 2003 में आपके लघु कथा संकलन "मोती के आंसू" का प्रकाशन भी हो चुका है। विभिन्न पत्र-पत्रिका, काव्य मंच तथा आकाशवाणी नजीबाबाद से आपकी साहित्यिक कृतियों की अभिव्यक्ति होती रही है।

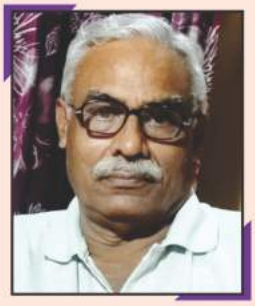

समय के अनुकूल बनाऐं सामंजस्य

स्वाभाविक है, आज जो युवा पीढ़ी है, उसे आने वाले कल में वरिष्ठता की श्रेणी में आना ही है। सरकारी तौर पर भी 60+ के लोग सीनियर सिटीजन (वरिष्ठ नागरिक) के दायरे में आते हैं। बचपन से किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था, यह तो सृष्टि का क्रम है। किसी भी परिवार में सभी सदस्यों की मानसिकता व जीवन जीने का ढंग एक समान होना असम्भव होता है। प्रौढ़ता की ओर अग्रसर व्यक्ति की सोच, व्यवहार में परिवर्तन आना भी स्वाभाविक होता है।

कई बार सुना ही नहीं, अपितु देखा जाता है कि वरिष्ठता को प्राप्त जन युवा पीढ़ी के साथ सामंजस्य नहीं बैठा पाते। वरिष्ठ जन चाहे पुरुष वर्ग से हों अथवा महिला वर्ग से, जनरेशन गैप की अवधारणा इस सार्वभौमिक सत्य को बल प्रदान करती है। सामंजस्य बनाने में भी कई चुनौतियाँ हैं। विचारणीय बिन्दु यह है कि इस बदलाव को स्वीकार करते हुए वरिष्ठ जनों की जीवन चर्या व लौकिक व्यवहार कैसा हो? वहीं दूसरी ओर युवा पीढ़ी का व्यवहार वरिष्ठ जनों के प्रति कैसा हो?

इस तथ्य को दोहराना समीचीन होगा कि भावी पीढ़ियों की सोच, व्यवहार, रहन-सहन आदि में बदलाव को नकारा नहीं जा सकता। उस स्थिति में केवल और केवल सामंजस्य ही एक मात्र रास्ता हो सकता है। बहुत से बुजुर्ग आज नई पीढ़ी को उलाहना देते देखे जाते हैं। मसलन हमारे समय में ऐसा होता था, वैसा होता था। माना उनका यह कथन शत प्रतिशत सत्य है, किन्तु आज के परिपेक्ष में युवा पीढ़ी इसे अपने ऊपर 'थोपे जाना' जैसा समझती है।

परिणामतः उच्छृंखलता, अनुशासनहीनता पनपने लगती है। प्रश्न उठता है, फिर क्या किया जाए? नये दौर में युवा पीढ़ी को बहुत अधिक सलाह बिना माँगे देने से बचना चाहिए। सांकेतिक रूप से किसी भी कृत्य के अच्छे बुरे परिणाम के विषय में बता देना पर्याप्त है, अधिकता ठीक नहीं। वरिष्ठ हो गये अथवा होने वाले जनों को उम्र के इस पड़ाव पर अपने स्वास्थ्य, दिनचर्या, खानपान पर विशेष ध्यान देना चाहिए, ताकि उन्हें आश्रित न होना पड़े। बच्चों के साथ हिलना- मिलना तथा उन्हें प्रोत्साहित करते रहने से घरेलू वातावरण माधुर्य पूर्ण बना रहता है। अनावश्यक दखल परिवार के विघटन का कारण बनता है। हमउम्र लोगों से सम्पर्क बनाये रखना वरिष्ठ जनों के लिए टॉनिक का काम करता है। कारण एक-दूजे से सुख-दुख का जिक्र कर व्यक्ति स्वयं को हल्का महसूस करता है। अतः यदाकदा पार्क जैसे स्थानों पर वरिष्ठ जनों को आपस में मिलने-जुलने का अवसर भी नहीं गँवाना चाहिए। इन छोटी-मोटी बातों का ध्यानपूर्वक पालन करते हुए वरिष्ठ जनों द्वारा युवा वर्ग के साथ सामंजस्य पूर्वक सुखमय जीवन जिया जा सकता है।

सार रूप में देखा जाऐ तो हम यह कोशिश करें कि स्वयं भी अपने आदर्शों के साथ स्वतंत्रतापूर्वक जियें और युवा पीढ़ी को भी जीने दें। हमारा दायित्व भले-बूरे की स्थिति के प्रति उन्हें सतर्क करना है, अपनी सोच के अनुसार बाध्य करना नहीं। इस उम्र में अपने उन सभी सपनों को भी पूर्ण करने की कोशिश करें जो जिम्मेदारियों के कारण अधूरे रह गये।

रमेशचन्द्र माहेश्वरी "राजहंस"
बीजनौर (उ.प्र.)

श्री गायल माताजी

गायल माताजी-माहेश्वरी समाज की झंवर, बजाज, लाहोटी एवं इनकी समस्त खांपों की कुल देवी है।

टीम SMT

माताजी का मंदिर राजस्थान के जोधपुर जिले के ग्राम 'आसोप' में स्थित हैं जो कि जोधपुर से लगभग 90 किलोमीटर दूर है। वैसे तो माताजी का मूल मंदिर आसोप से लगभग 20 किलोमीटर दूर ग्राम 'हर-खेड़ा' गांव में स्थित है, जहाँ पर माताजी स्वयंभू प्रकट हुई थी।

बाद में कालान्तर में मंदिर की स्थापना संवत 1667 में ग्राम 'आसोप' में हुई। माताजी की मूर्ति अत्यन्त चमत्कारी है, कहा जाता है कि मन में श्रद्धा रखकर माँ का ध्यान करें तो माँ भक्तगणों के कार्यों को शीघ्र ही पूरा कर देती है।

सुविधाएं - मंदिर में यात्री भक्तों के ठहरने के लिये धर्मशाला में हर मौसमानुकूल सुविधा उपलब्ध हैं। यहां पर शुद्ध सात्विक भोजन भी उपलब्ध रहता है।

उत्सव-आयोजन - दोनों नवरात्रों (चैत्र एवं शारदीय) पर पूरे दिवस उत्सव, भजन कीर्तनों का आयोजन होता है व खूब धूम-धाम रहती है।

आरती एवं भोग

आरती - सुबह 7.30 बजे

भोग - सुबह 10 से 10.30 बजे

संध्या एवं शयन आरती - सायंकाल 6 से 6.30 बजे, उसके बाद मंदिर के पट बन्द हो जाते हैं।

पहुँचने की व्यवस्था -

⏭ आसोपा के निकट जोधपुर है जो कि बस, ट्रेन, विमान सेवा द्वारा जुड़ा हुआ है।

⏭ अजमेर से नागौर और नागौर से आसोप बस या कार द्वारा जाया जा सकता है।

जानकारियॉ हेतु सम्पर्क :

⏭ मंदिर ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष श्री गोरधन झंवर है, फोन - 0291-2644941, मो. 94144-18587 है। इनसे जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

⏭ सुधीर जे. कालाणी फोन- 0291-2542368, मो. 9414300306 से भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

उत्तरोत्तर विकास पथ पर अग्रसर महेश बैंक

बैंक की पारदर्शी कार्यप्रणाली को झुठलाने वालों की कोशिशें हुई नाकाम-श्री बंग

हैदराबाद। कुछ चुनिंदा स्वार्थी पद के लोभी लोगों के एक झुण्ड ने येन केन प्रकारेण महेश बैंक के प्रबन्धन पर झुठे मनघड़न्त आरोप लगा कर बैंक को बदनाम करने की सोची-समझी साजिश के तहत वर्ष 2019 में ए.पी. महेश कोआपरेटिव अर्बन बैंक के 20 दिसम्बर 2020 को होने वाले चुनावों के पहले जिस तरह से समाचार पत्र, मीडिया आदि माध्यमों से बैंक की प्रगति, पारदर्शी व सक्षम कार्यप्रणाली को झुठलाते हुये नकारात्मक प्रचार कर सामान्य जनता, ग्राहक एवं शेयर होल्डर्स को गुमराह करने की लगातार कोशिशें की गई, सभी जानते हैं। जबकि माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी बैंक में किसी तरह की कोई गड़बड़ी नहीं होने की बात कर चुनाव के खिलाफ की गयी अपील को खारिज कर दिया।

उपरोक्त आरोप लगाते हुए महेश बैंक के चेयरमेन रमेशकुमार बंग ने बताया कि वर्ष 2019 में अस्तित्व में आई इस संस्था की प्रारम्भिक शिकायत बैंक में चेयरमैन इमीरेट्स का पद बनाने के लिये ही की गई थी। चुनावों के पहले 30.11.2020 को इस एसोसिएशन ने पहला गोला निदेशक मण्डल के प्रस्तावित चुनावों को लेकर रीट पेटीशन के रूप में दागा। निर्वाचन अधिकारी को चुनाव प्रक्रिया में आगे बढ़ने से रोकने के लिये माननीय न्यायालय से अंतरिम आदेश पाने में विफल रहने के बाद एसोसिएशन ने पुलिस को 02.01.2021 और 3.1.2021 को डाक द्वारा झूठी शिकायतें भेजने का हथकन्डा अपनाया। फरवरी 2020 में भी चुनाव पारदर्शी तरीके से नहीं होने की शंका जताते हुए एक याचिका दाखिल की गई थी जिसे हाईकोर्ट के विद्वान न्यायाधीश ने खारिज कर दिया था। न्यायालय में असफल रहने के बाद इन चुनिंदा लोगों ने सरकारी रसुख का इस्तेमाल करते हुये एक मंत्री से पुलिस कमिश्नर को जाँच का निर्देश दिलाया। जबकि तब पुलिस विभाग ने कोई एफआईआर दर्ज ही नहीं की थी।

न्यायालयों में मुंह की खानी पड़ी

श्री बंग ने बताया कि भारत के सर्वोच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश इंदिरा बेनर्जी एवं वी.रामसुब्रमण्यम की खण्डपीठ ने तेलंगाना प्रदेश के हाईकोर्ट द्वारा बंजारा हिल्स पुलिस स्टेशन में 2021 में दर्ज क्रिमिनल शिकायत संख्या 218 और 222 पर बैंक के चेयरमैन वाइस चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक की गिरफ्तारी पर रोक लगाते हुये किसी तरह की कोई कार्यवाही नहीं करने के आदेश को चुनौती देने वाली स्पेशियल लीव पेटीशन को खारिज करते हुये अपना निर्णय दिया। ए.पी. महेश कोआपरेटिव अर्बन बैंक शेयर होल्डर्स एसोसिएशन ने बैंक एवं प्रबंधन को मानसिक प्रताड़ना देने एवं बैंक की प्रतिष्ठा को धूमिल करने के लिये विभिन्न न्यायालयों में अपीलें दायर की। इस याचिका में बोगस वोटर, नेचुरल न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन, लोन फ्रॉड, मल्टी स्टेट कोआपरेटिव बैंक अधिनियम 2002 के तहत दिये गये अधिकारों का उल्लंघन जैसे झुठे आरोप लगाये गये थे। इन सबके परिप्रेक्ष्य में उच्च न्यायालय रीट याचिकाओं में कोई संशोधन करने को इच्छुक नहीं था। अतः ए.पी. महेश कोआपरेटिव अर्बन बैंक शेयर होल्डर्स एसोसिएशन के प्रतिनिधि के रूप में ओमप्रकाश मोदाणी ने 8 सितम्बर 2021 को अपनी रीट याचिका वापिस ले ली।

सत्य की हुई जीत

महेश बैंक के चेयरमैन रमेशकुमार बंग ने न्यायालय के निर्णय का स्वागत करते हुये कहा कि यह सच्चाई की जीत है और झूठ की करारी हार। ए.पी. महेश कोआपरेटिव अर्बन बैंक शेयर होल्डर्स ऐसोसिएशन द्वारा रीट याचिका वापिस लेने ने सिद्ध किया है कि कुछ चुनिंदा स्वार्थी लोगों के हाथों की कठपुतली बने संस्था के प्रतिनिधि के आरोप झूठे और दुर्भावना पूर्ण थे। विगत 10 महिनों से निजी स्वार्थ पूर्ति हेतु दुर्भावना ग्रस्त ऐसे लोगों की कठपुतली बने संस्था के प्रतिनिधि द्वारा बैंक के निदेशक मण्डल, निष्ठावान कर्मचारियों, सक्षम अधिकारियों एवं पूर्णतया पारदर्शी कार्यप्रणाली को बदनाम करने के लिये हर तरीके से कोशिश की गयी। बैंक के कामकाज को रोकने, अधिकारियों का मनोबल तोड़ने हेतु सोशियल मीडिया, समाचार पत्र, न्यूज चैनल का अनुचित इस्तेमाल किया। श्री बंग ने कहा कि इस तरह के दुर्भावना पूर्ण कामों से बैंक के कामकाज को भी भरपूर नुकसान पहुँचाने की कोशिश की गयी, परन्तु बैंक के ग्राहकों, शेयरहोल्डर्स ने अपूर्व धैर्य एवं विश्वास के साथ बैंक कर्मियों का सदैव मनोबल बढ़ाया एवं पूर्ण समर्थन दिया। महेश बैंक परिवार इस विश्वास एवं समर्थन के बल पर विषम परिस्थितियों में भी निष्ठावान बैंककर्मियों के सहयोग से उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है।

माहेश्वरी सभा की नवीन कार्यकारिणी गठित

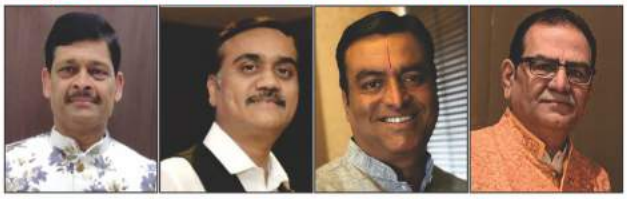

बैंगलुरू। माहेश्वरी सभा की 46वीं वार्षिक साधारण सभा जूम एप के माध्यम से तथा सामयिक परिस्थितियों एवं सरकारी नियमों की अनुकूलता को देखते हुए अब प्रत्यक्ष रूप से माहेश्वरी भवन में भी आयोजित की गई। इस अवसर पर सरकार द्वारा कोरोना महामारी के सारे नियम पालन किये गए। माहेश्वरी सभा अध्यक्ष निर्मलकुमार तापड़िया, माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्षा कांता काबरा, माहेश्वरी युवा संघ के अध्यक्ष अरविंद लोया, माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के चेयरमेन मोहनलाल माहेश्वरी, माहेश्वरी फाउंडेशन के चेयरमेन राजगोपाल भूतड़ा तथा माहेश्वरी सौहार्द्र क्रेडिट को-ऑपरेटिव लिमिटेड के अध्यक्ष नंदकिशोर मालू आदि उपस्थित थे। इसी अवसर पर नई कार्यसमिति का गठन भी हुआ। इसमें सर्वसम्मति से निर्मलकुमार तापड़िया अध्यक्ष, नवलकिशोर मालू उपाध्यक्ष, भगवानदास लाहोटी सचिव, सत्यनारायण मालाणी सहसचिव, राजगोपाल मर्दा कोषाध्यक्ष तथा विनीत बियानी सहकोषाध्यक्ष चुने गये। इनके साथ कार्यसमिति सदस्य भी चुने गये।

माहेश्वरी समाज के चुनाव सम्पन्न

सूरत। गत 17 अगस्त को मेवाड़ माहेश्वरी समाज सूरत के निर्विरोध चुनाव सम्पन्न हुए। इसमें सुरेश झंवर अध्यक्ष, मुकेश कोठारी सचिव, ओमप्रकाश देवपुरा वरिष्ठ उपाध्यक्ष, गोपाल डाड कोषाध्यक्ष एवं रामसहाय सोनी संगठन सचिव मनोनीत किये गये। कार्यकारिणी सदस्यों का चयन भी हुआ।

तीजोत्सव का किया आयोजन

सूरत। मारवाड़ी माहेश्वरी महिलाओं ने सातुड़ी तीज के अवसर पर निर्जला उपवास रख कर सायं तीज माता की पूजा कर चंद्रमा को अर्ग देकर अपना उपवास सम्पूर्ण किया।

पौधारोपण व रोजगार प्रशिक्षण

उदयपुर। संस्था माहेश्वरी गौरव द्वारा वृक्षारोपण किया गया, जिसमें पीपल, गिलोय, बरगद, अश्वगंधा तथा तुलसी के औषधीय पौधे लगाये गये। इसके साथ ही पौधे आसपास के लोगों को भी भेंट किए। संगठन की सदस्या श्रद्धा गटटानी ने ओरियन्टल पैलेस रिसोर्ट में 50-60 महिलाओं को रोजगार से संबंधित प्रशिक्षण देकर सभी को आत्मनिर्भर बनाते हुए रोजगार दिलाया। इस मौके पर सभी पदाधिकारी मौजूद थीं। अपनी गतिविधियों के अंतर्गत माहेश्वरी महिला गौरव द्वारा आभा फार्म हाऊस पर सावन व भादो में आने वाले सभी त्यौहार मनाये। संस्थापिका कौशल्या गटटानी के आवास पर जन्माष्टमी धूमधाम से मनायी गयी। इसमें जिलाध्यक्ष मंजू गांधी व उनकी टीम ने भजन प्रस्तुति दी। अध्यक्ष आशा नरानीवाल व सचिव सीमा लाहोटी भी उपस्थित थी। छाया भदादा, रीमा सोमानी, राजकुमारी आदि उपस्थित थीं।

तीज मिलन समारोह सम्पन्न

पटना। माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा तीज मिलन समारोह बहादुरपुर श्याम मंदिर के प्रांगण में आयोजित किया गया। अध्यक्ष आरती राठी व मीडिया प्रभारी राजकुमार लढ़ा ने बताया कि इसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। अध्यक्ष आरती राठी, सचिव- श्वेता मोहता, सह सचिव-हीना साबू, कोषाध्यक्ष- वीणा डागा सहित कार्यकारिणी सदस्याऐं एवम महिला संगठन की सदस्याऐं उपस्थित थीं।

दुनिया की हर चीज ठोकर लगने से टूट जाती है पर एक कामयाबी ही है, जो ठोकर खाकर मिलती है।

उज्जैन। विगत दिनो 12 सितम्बर रविवार को माहेश्वरी सोशल क्लब उज्जैन द्वारा ज्योर्तिलिंग ॐकारेश्वर की धार्मिक यात्रा का आयोजन क्लब अध्यक्ष प्रमोद-वंदना जैथलिया एवं संयोजक नरेन्द्र-शीला राठी के नेतृत्व में सम्पन्न हुई।

भूदान के लिए सोमानी सम्मानित

अहमदाबाद। माहेश्वरी समाज पलाना खुर्द का स्नेह मिलन समारोह गत दिनों आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता समाजसेवी छीतरमल असावा ने की। इस अवसर पर रामजस बाबुलाल सत्यनारायण सोमानी को माहेश्वरी समाज पलाना में भूदान करने के लिए स्मृति चिन्ह एवम भामाशाह सम्मान पत्र भेट कर सम्मानित किया गया। इस समारोह में माहेश्वरी समाज पलाना के रामनिवास, कन्हैयालाल, दिलीप कुमार, रमेश चन्द्र, राजकुमार मंडोवरा, मांगीलाल मालीवाल, ओम चण्डक, प्रकाश मालू, सत्यनारायण बाहेती, शांतिलाल ओमप्रकाश सोमानी आदि समाजजन उपस्थित थे। इस अवसर पर स्नेह भोज भी आयोजित किया गया।

जाजू सुपर 50 एडवोकेट में शामिल

भीलवाड़ा। ख्यात एडवोकेट अमित जाजू को एशियन लीगल बिजनेस मैग्जीन द्वारा नामित इंडिया के सुपर 50 एडवोकेट 2021 के लिए चयन कर सम्मानित किया गया। इसके लिए उन्होंने अपने माता पिता सत्यनारायण जाजू एवं मधु जाजू (पूर्व सभापति नगर परिषद भीलवाड़ा) को अपना प्रेरणास्रोत बताया। उन्होंने मुंबई में वर्ष 2004 से बार काउंसलिंग ऑफ मुंबई के सक्रिय मेंबर होकर वकालत की प्रैक्टिस चालू की थी। मुंबई शबनम कॉलेज ऑफ कॉमर्स से ग्रेजुएशन किया व 2004 को मुंबई गवर्नमेंट लॉ कॉलेज से एलएलबी की डिग्री प्राप्त की एवं वहीं पर वहां की प्रख्यात सॉलिसिटर फर्म के साथ जुड़कर प्रैक्टिस शुरू की वे वर्तमान में एक इंटरनेशनल लॉ फर्म में पार्टनर भी हैं।

माहेश्वरी समाज में सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली
अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की मासिक पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

को सम्पूर्ण राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक एवं गुजरात में जिला तथा तहसील स्तर पर

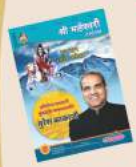

ऊर्जावान एवं कर्मठ प्रतिनिधियों की आवश्यकता है

आत्मविश्वास से भरपूर व पर्याप्त शैक्षणिक योग्यता वाले उम्मीदवारों को प्रथमिकता आकर्षक कमीशन/ वेतन एवं प्रेस कार्ड देय होगा। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा पूर्ण जानकारी के साथ ई-मेल करें।

smt4news@gmail.com
मो. - 094250-91161

SMT NEWS
VIDEO NEWS BULLETIN

सतत चली सेवा गतिविधियाँ

दिल्ली। प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की स्वाध्याय व आध्यात्म समिति एवं साहित्य चिंतन मनन समिति ने उत्तरांचल में आयोजित पंच दिवसीय भक्तियोग में भाग लिया। दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्यामा भांगड़िया ने अध्यक्षीय उदबोधन दिया। पीपीटी प्रेजेंटेशन में दिल्ली प्रदेश की अर्धवार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। आयोजन का संचालन एवं लेखन सचिव प्रभा जाजू ने किया। राष्ट्रीय प्रतियोगिता ''हर सीट हॉट सीट'' में प्रथम स्थान पर मधु राठी व प्रश्न 2 ग्रुप 1 की विजेजा दीप्ति कोठारी रही। ''कोरोना पर मुकदमा'' लघु नाटिका की 3 चयनित रचनाएं राष्ट्रीय स्तर पर भेज दी गई हैं। विवाह संबंध सहयोग गठबंधन समिति द्वारा अगस्त माह में दिल्ली प्रदेश में आठ जोड़ियाँ एवं अखिल भारतवर्षीय विवाह संबंध सहयोग समिति गठबंधन ने 1 जोड़ी बनाने में योगदान दिया। बाल एवं किशोरी विकास समिति द्वारा दोस्ती दिवस के दिन आयोजित कार्यक्रम में बच्चों ने फायरलेस कुकिंग प्रतियोगिता में भाग लिया व फ्रेंडशिप बैंड्स बनाकर पहनाएं। कंप्यूटर नेटवर्किंग व एडवांस तकनीकी समिति अंतर्गत डिजिटल आयोजनों में इस समिति का सामर्थ्य दिनों दिन निखर रहा है। ग्राम विकास व राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति द्वारा कोरोना काल में जरूरतमंद माहेश्वरी परिवारों की आर्थिक सेवा निरंतर जारी है। कोरोना पीड़ित परिवारों में भोजन पहुंचाया जाता है। उत्तरांचल अधिवेशन भक्ति योग में दिल्ली प्रदेश को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

नंदोत्सव का किया आयोजन

जोधपुर। माहेश्वरी महिला संगठन पूर्वी क्षेत्र द्वारा नंदोत्सव का आयोजन रामोल्ला रोड शनि मंदिर के समीप सुशीला बजाज की अध्यक्षता में किया गया। इसकी संयोजक गुलाब बूब व सहसंयोजक सरला बूब थीं। बबीता चांडक, सुनीता भट्टड़, भगवती बूब, संजू सोनी ने भजन प्रस्तुति किये। करीबन 100 सदस्य इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। सुनिता डागा ने बताया कि सुमन माहेश्वरी एवं शिल्पा बेदी ने कृष्ण-राधा की सुंदर झांकी सजाकर सबका मन मोह लिया। सुरभि राठी, मंजू गटटानी, सूर्यकांता डागा, शोभा डागा, संगीता भट्टड़, हेमलता बंग, किशन संतोष धूत आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान किया।

राष्ट्र की आंतरिक चुनौतियों पर व्याख्यान

अड़ाजन (सूरत)। श्री माहेश्वरी समाज सूरत द्वारा गत 12 सितम्बर को संजीव कुमार आडिटोरियम, अड़ाजन सूरत में आयोजित, कार्यक्रम में ''राष्ट्र की आंतरिक चुनौतियां'' विषय पर प्रखरवक्ता पुष्पेन्द्र कुलश्रेष्ठ के व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस समारोह में गुजरात प्रांत माहेश्वरी सभा अध्यक्ष गजानंद राठी, सूरत जिला माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष अविनाश चांडक, सचिव संदीप धूत, राम अवतार साबू, शंकर लाल सोमानी, मदनमोहन पेड़ीवाल, हरि शंकर तोषनीवाल, रामसहाय सोनी, हनुमान लोहिया, क्षैत्रिय माहेश्वरी सभा अध्यक्ष, सचिव एवं अग्रवाल समाज के महेश बंसल, ओमप्रकाश सतनालीवाला, सूरत मर्केंटाइल एसोसिएशन के नरेन्द्र साबू, हैदराबाद से विशेष रुप से आये ए के वाजपेई आदि सहित अनेक प्रबुद्ध एवं आमंत्रित जन उपस्थित थे। सुरेश तोषनीवाल, मांणक राठी एवं विमला साबू द्वारा स्मृति चिन्ह, शाल देकर एवं साफा पहनाकर श्री कुलश्रेष्ठ का सम्मान किया गया। अन्त में सूरत जिला माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष श्री अविनाश चांडक ने सभा में आए हुए सभी आंगुतकों का आभार व्यक्त किया।

जिंगल बनाओ, स्वदेशी अपनाओ प्रतियोगिता

बालोतरा। सखी ग्रुप द्वारा ''जिंगल बनाओ, स्वदेशी अपनाओ'' प्रतियोगिता का आयोजन कर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पतंजलि महिला योग समिति जिला संगठन मंत्री कमला चौहान थीं। उन्होंने कहा कि स्वदेशी की शुरुआत हम सभी महिलाओं को अपने घर से ही करनी होगी। ग्रुप फाउंडर स्वाति मानधना ने बताया कि प्रतियोगिता के लिए बालोतरा के साथ पुणे, अहमदाबाद, जयपुर आदि शहरों से भी प्रविष्टियां आई। उन्होंने स्वदेशी उत्पादों को अधिकाधिक काम में लेने की सभी से अपील की है। सखी ग्रुप भविष्य में सामाजिक सरोकार से सम्बन्धित विषयों पर भी कार्य करता रहेगा।

दुखी रहना है तो, सब में कमी खोजों और प्रसन्न रहना है तो, सब में गुण खोजों। विचारों को पढ़कर, बदलाव नहीं आता है विचारों पर चलकर ही बदलाव आता है।

छठी प्रसाद समारोह का हुआ आयोजन

रांची। श्री माहेश्वरी सभा द्वारा भगवान श्री कृष्ण का छठी प्रसाद समारोह रक्तदान शिविर एवं सम्मान समारोह के साथ आयोजित किया गया। गिरिजा शंकर पेड़ीवाल ने बताया कि लक्ष्मीनारायण मंदिर में भगवान की छठी पर महाभोग लगा कर मंगल आरती की गई। माहेश्वरी भवन में आयोजित महाप्रसाद में समाज के साथ विभिन्न संस्थाओं के अतिथियों ने भी प्रसाद ग्रहण किया। छठी प्रसाद के संयोजक किशन साबू एवं ओम प्रकाश बोड़ा थे। माहेश्वरी भवन में सुबह से रक्तदान शिविर चला, जिसमें 56 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। इसके संयोजक बिपिन भाला और दिनेश काबरा थे। इसके बाद रांची की बेटी मंजू टावरी जो अभी केंद्रीय विद्यालय हैदराबाद में कार्यरत है, उनका सम्मान श्री माहेश्वरी सभा राँची व प्रदेश माहेश्वरी सभा के पूर्व अध्यक्ष पवन मंत्री द्वारा किया गया। मंजू रांची के स्वर्गीय हरिराम साबू की पुत्री एवं निवर्तमान सभा सचिव विजय साबू की बहन हैं। इन्हें 2016 में शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रपति पुरस्कार मिल चुका है।

शिक्षक दिवस पर शिक्षाविद् सम्मान

ब्यावर (राज.)। श्री माहेश्वरी पंचायत ब्यावर के तत्वावधान में प्रथम बार शिक्षक दिवस पर समाज के शिक्षाविदों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम संयोजक-सुनील कुमार मूंदड़ा ने बताया कि कार्यक्रम का विधिवत् शुभारम्भ-भगवान शिव प्रतिमा व डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर अध्यक्ष-विष्णुगोपाल हेड़ा, उपाध्यक्ष-सत्यनारायण तापड़िया, मंत्री-दिलीप कुमार जाजू, संयोजक-सुनील कुमार मूंदड़ा, कोषाध्यक्ष-कैलाश जाजू, उपमंत्री-अमरचंद मुंदड़ा आदि पदाधिकारीगणों ने दीप प्रज्जवलित व माल्यार्पण कर किया। संयोजक-सुनील कुमार मूंदड़ा ने स्वागत भाषण दिया। माहेश्वरी समाज के शिक्षाविद् शिक्षकों को मंचासीन अतिथियों द्वारा श्रीफल, दुपट्टा (ऊपरणा) सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन - राजेन्द्र काबरा ने किया। अध्यक्ष-विष्णुगोपाल हेड़ा, उपाध्यक्ष-सत्यनारायण तापड़िया, मंत्री-दिलीप कुमार जाजू, सयोजक-सुनील कुमार मूंदड़ा, कोषाध्यक्ष-कैलाश जाजू, एवं अमरचंद मुंदड़ा, प्रशांत भराड़िया, सुशील कुमार झंवर, ललित भूतड़ा, प्रवीण हेड़ा, महेश चितलांग्या, मुकेश झवर, अशोक कुमार नवाल आदि इस अवसर पर उपस्थित थे।

महिला मण्डल ने किया शिक्षक सम्मान

दुर्ग। माहेश्वरी महिला मंडल दुर्ग द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें समाज के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकगणों का सम्मान किया गया। विगत दिनों आयोजित स्पर्धा तीज ट्रायो के परिणामों की भी घोषणा की गई। कार्यक्रम जूम एप्प पर आयोजित किया गया था। मुख्य अतिथि प्रादेशिक प्रकल्प प्रमुख मधु सोमानी तथा विशिष्ट अतिथि उपाध्यक्ष छग प्रादेशिक माहेश्वरी सभा राजकुमार गांधी रहे। अभिनंदन कार्यक्रम के तहत समाज के शिक्षकों का उनके घर जाकर सम्मान किया गया जिसमें कल्पना माहेश्वरी, ममता टावरी, नेहा टावरी, पायल राठी, जगदीश चाण्डक का सम्मान किया गया। विगत दिनों तीज ट्रायो प्रतियोगिता ऑनलाइन मोड पर आयोजित की गई जिसमें आराधना प्रतियोगिता, रीक्रिएट ओल्ड सॉन्ग प्रतियोगिता और सीटिंग डांस प्रतियोगिता आदि आयोजित की गई। कार्यक्रम का संचालन रश्मि चांडक एवं मेघा राठी ने किया। कार्यक्रम के संयोजन हेतु सरला भूतड़ा एवं अध्यक्ष महिला मण्डल नीतू गाँधी की प्रमुख भूमिका रही। कार्यक्रम का संचालन अध्यक्ष दुर्ग जिला माहेश्वरी सभा नरेंद्र राठी एवं माया राठी द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन सचिव अंजली लाखोटिया द्वारा किया गया।

बछबारस का किया उद्यापन

हैदराबाद। संस्कार धारा द्वारा बछबारस का उद्यापन गत 4 सितम्बर को सुल्तान बाजार स्थित श्री नृसिंह मंदिर में किया गया। संस्कार धारा की संस्थापिका कलावती जाजू ने बताया कि कोविड महामारी को ध्यान में रखते हुए उद्यापन में बैठाकर भोजन नहीं कराया गया, टिफिन देने की व्यवस्था की गई। संस्था की अध्यक्ष श्यामा नावंदर व मंत्री अंजना अटल ने बताया कि केवल 19 महिलाओं का सामूहिक उद्यापन कराया गया। कोषाध्यक्ष प्रेमलता काकानी ने अपना पूरा-पूरा सहयोग दिया।

जब सोच में मोच आती है,
तब रिश्तों में खरोंच आती है।

बछबारस का सामूहिक उद्यापन

देवास (कांटाफोड़)। माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा प्रथम बार बछबारस के सामूहिक उद्यापन का आयोजन किया गया। इसमें 14 महिलाओं द्वारा उद्यापन किया गया। संयोजिका मंगला सिंगी, कला पसारी एवं शोभा सिंगी ने जवाबदारी को बखूबी निभाया। कार्यक्रम का संचालन स्थानीय सचिव हर्षिता सोमानी ने किया। अध्यक्ष जयश्री होलानी द्वारा समस्त महिला मंडल का आभार व्यक्त किया गया। उक्त जानकारी स्थानीय अध्यक्ष जयश्री होलानी व सचिव हर्षिता सोमानी द्वारा दी गई।

माहेश्वरी बने वीडी बैंक अध्यक्ष

उज्जैन। विक्रमादित्य नागरिक सहकारी बैंक के पदाधिकारियों के चुनाव गत दिनों सम्पन्न हुए। इसमें अध्यक्ष राजेश माहेश्वरी व पदाधिकारी सुनीता पलोड़ एवं बैंक के अन्य पदाधिकारियों का सम्मान माहेश्वरी समाज द्वारा किया गया। उज्जैन जिला माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष महेश लड्ढा, सचिव महेश चांडक, उज्जैन माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष सुरेश काकानी, सचिव भूपेंद्र जाजू, प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य ओम प्रकाश काबरा, महेश पारमार्थिक न्यास के अध्यक्ष कैलाश माहेश्वरी, रूपनारायण झंवर, नवीन बाहेती, सत्यनारायण मूंदड़ा, संजय बजाज, सत्यनारायण खड़लोया आदि मौजूद थे। राजेश गिल्डा द्वारा सहयोग के लिए सभी का आभार व्यक्त किया गया।

प्रेरणा-पुंज का हुआ लोकार्पण

वाराणसी। अपने समाज की विभूतियों से प्रेरणा लेने के लिए आवश्यक है कि वे हमारी स्मृति के अंग बने रहें। इसी भावना से प्रेरित होकर कोठारी बंधु शौर्य स्मृति ट्रस्ट के सौजन्य से पूर्वी उत्तरप्रदेश माहेश्वरी सभा 'प्रेरणा-पुंज' शीर्षक के अंतर्गत एक वीडियो श्रृंखला का निर्माण करवा रही है। इसका लोकार्पण महासभा के पूर्व सभापति रामपाल सोनी, सभापति श्यामसुंदर सोनी तथा महामंत्री संदीप काबरा ने संयुक्त रूप से महासभा कार्यसमिति की जूम बैठक में गत 29 अगस्त को किया।

नई परम्पराओं से किया कन्यादान

मुर्तिजापुर। एक स्त्री वैसे ही पति के खो जाने पर दुखी रहती है इस पर भी दुखों का पहाड़ और भी बड़ा बन जाता है, जब उसी के बेटी के विवाह में अपने वैधव्य के कारण वह कन्यादान नही कर पाती। मुर्तिजापुर निवासी, संगीता-प्रमोद बंग की सुपुत्री प्रिया का चंद्रपुर निवासी पनपालिया परिवार में विवाह तय हुआ। यहां भी यही स्थिति बनी लेकिन स्व. श्री प्रमोद बंग ने देहांत से पहले ईच्छा जताई थी कि उनके बाद उनकी धर्मपत्नी संगीता पूरे रीतिरिवाजो के साथ प्रिया का कन्यादान करेंगी। बंग परिवार का मानना है कि रीतिरीवाज खुशीयां देने के लिए होने चाहिए ना कि दुःखो का अहसास कराने के लिए। दिवंगत पति की अंतिम ईच्छा का पालन कर संगीता जी ने भी कन्यादान करने का निर्णय लिया, जिसका दोनो पक्ष ने स्वागत किया। गत 15 जुलाई 2021 को चंद्रपुर महेश भवन में, सोशल डिस्टेन्स को ध्यान में रखते हुए, धूमधाम से चेतन और प्रिया का विवाह संपन्न हुआ। इसमें संगीताजी ने अपने कन्यादान के सुंदर सपनो को आत्मविश्वास से सजीव किया और वे समाज में एक सुंदर बदलाव की लहर लायी।

निःशुल्क फेस मास्क का वितरण

चंद्रपुर। गत 7 सितम्बर को कृषि उपज मंडी समिति रामनगर में अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद, चंद्रपुर जिला द्वारा समस्त सब्जी एवं फल विक्रेता एवं सब्जी ठेले वालों को फ्री फेस मास्क का वितरण किया गया। उक्त जानकारी अधिवक्ता आशीष मुंधड़ा ने दी।

एक चीज हमेशा याद रखना
दुनिया में कुछ मिले ना मिले
दो चीज हक से लेना चाहिये अपनो का
आशीर्वाद और अपनो का प्यार।

डिजिटल मार्केटिंग के सिखाए गूर

कोटा। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के तत्वावधान में व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति द्वारा गत 6 सितंबर को ''प्रयास से परिवर्तन'' कार्यशाला का आयोजन किया गया। समिति प्रभारी नम्रता बियाणी ने अतिथि स्वागत के साथ ही किये गए कार्यों की जानकारी दी गई। समिति प्रमुख मंगल मर्दा ने शुभकामनाऐं प्रेषित की। राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की गई। उन्होंने स्वागत उद्बोधन दिया। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के अध्यक्ष श्याम सोनी ने प्रशिक्षण के महत्व को सरल शब्दों में समझाते हुए कहा कि प्रशिक्षित बहनें ही वास्तव में संगठन की पूंजी है। अतः ऐसे आयोजनों की बहुत सार्थकता है। मधु राठी ने वक्ता डॉ. अमित माहेश्वरी का परिचय दिया। डाक्टर अमित माहेश्वरी ने बिजनेस मार्केटिंग एवं डिजिटल अपडेटिंग के नुस्खे बताए। उन्होंने बताया कि जिसके अंदर भी कला है वो अपनी कला को फेसबुक, लिंकेडन, टवीटर, इन्स्टा एवं यूट्यूबक पर अपलोड करके अपनी रेटिंग को बढ़ा सकते है एवं आमदनी भी कर सकते है।

DIGITAL MARKET CEW AMAZON जैसी बड़ी कंपनी के साथ मिलकर अपना भविष्य चुन सकते है। राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बाँगड ने कार्यक्रम की समीक्षा की। प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम उत्तरांचल सहप्रभारी डा. उर्वशी साबु एवं पश्चिमांचल सहप्रभारी मनीषा मूंदडा ने प्रस्तुत किया। डाक्टर अमित माहेश्वरी ने सभी प्रश्नों के बड़ी ही सहजता से जवाब दिए। धन्यवाद ज्ञापन उतरांचल सह प्रभारी शोभा भूतड़ा द्वारा किया गया। कार्यकम का सफल संचालन पूर्वांचल सह प्रभारी वर्षा डागा ने किया।

117 विजेता समाजजनों को किया पुरस्कृत

भीलवाड़ा। श्रीनगर माहेश्वरी सभा के तत्वावधान में महेश छात्रावास (रोडवेज बस स्टैंड के पास) में आयोजित पारितोषिक वितरण समारोह में 117 श्रेष्ठ रहे प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र व नगद पारितोषिक से सम्मानित किया गया। भीलवाड़ा नगर परिषद 2021 में जीते माहेश्वरी पार्षदों का स्वागत अभिनंदन भी किया गया जिसमें उन्हें दुपट्टा पहना पगड़ी पहनाकर प्रशस्ति पत्र भेंट किए गए। विभिन्न वर्चुअल प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ रहे 117 प्रतिभागियों को समाज द्वारा पारितोषिक वितरण कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया है। कार्यक्रम प्रभारी दिनेश काबरा के अनुसार 14 वर्चुअल प्रतियोगिताओं में माहेश्वरी समाजजनों ने भाग लिया। इसमें समाज के जीते सभी पार्टियों के पार्षदों का सम्मान समारोह के तहत किया गया जिसमें ओम नारायणीवाल, ओम आगाल, कैलाश मूंदड़ा, शांतिलाल डाड, विजय लड्ढा, ओम गगरानी आदि शामिल थे। जिला माहेश्वरी सभा अध्यक्ष दीनदयाल मारू, जिला मंत्री देवेंद्र सोमानी, नगर अध्यक्ष केदार जागेटिया, नगर मंत्री अतुल राठी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राधेश्याम सोमानी, प्रदेश महिला मंत्री अनिला अजमेरा आदि कई पदाधिकारी उपस्थित थे।

सबसे छोटी हस्तलेखन का विश्व रिकॉर्ड

जोधपुर (राज.)। समाज की प्रतिभा श्रुति पुंगलिया को सबसे छोटी हस्तलेखन (अंग्रेजी) के लिए हाई रेंज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा सम्मानित किया गया। इस उपलब्धि पर समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

जन्माष्टमी पर रात्रिजागरण

महेसाणा (महा.)। माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा जन्माष्ठमी के अवसर पर रात्रि जागरण एवंम अन्नकूट का आयोजन किया गया। समाज के अध्यक्ष जितेन्द्र झवर, मंत्री जिग्नेश काबरा तथा सांस्कृतिक एवं युवा विकास मंत्री रौनक गिलड़ा, शुभम मेलाना, हर्ष सोनी, निखिल सेठिया, राहुल चेचाणी सहित समस्त सदस्यों का योगदान रहा।

निलेश व अनिकेत झंवर को आयरनमेन उपाधि

नाशिक (महाराष्ट्र)। समाज सदस्य सीए. निलेश गणेश झंवर व अनिकेत अनिल झंवर ने जर्मनी में आयोजित आयरनमेन ट्रायएथेलॉन में भाग लिया। इसमें हर साल विश्व के अधिकांश देशों से प्रतिस्पर्धी सहभागी होते है। इसमें हर प्रतिभागी को तैराकी में 3.8, सायकलिंग में 108.2 तथा दौड़ में 42.2 किमी इस तरह कुल 226.2 किमी की दूरी तय करनी होती है। इन दोनों ने स्पर्धा को निश्चित समयसारणी में पूर्ण करके आयरनमेन की उपाधि हासिल की।

चलें गांव की ओर में स्नेह मिलन

नागौर। गत 5 सितम्बर को नागौर जिला माहेश्वरी सभा के सात सूत्रीय कार्यक्रम के तहत ''चलें गांव की ओर'' के अंतर्गत नागौर तहसील के ग्राम पांचौड़ी में वहां के सभी परिवारों के 32 समाजबंधुओं के साथ माहेश्वरी भवन में दोपहर 1 बजे स्नेह मिलन समारोह का कार्यक्रम रखा गया। इसमें जिलाध्यक्ष सत्यनारायण भण्डारी द्वारा जिले के सात सूत्रीय कार्यक्रम तथा महासभा व प्रदेश सभा के तहत सभी ट्रस्टों द्वारा प्रदत्त सुविधाओं की जानकारी दी गई। जिला आई.टी. प्रभारी अशोक मूंदड़ा द्वारा ए.बी.एम.एम. सम्पर्क ऐप के बारे में जानकारी दी गई। इसी बैठक में पांचौड़ी के परिवारों ने अपनी कई समस्याओं के बारे में जानकारी दी। पांचौड़ी ग्राम से बिरलोका ग्राम में दोपहर 3.15 बजे पहुंचे। वहां पर श्री सत्यनारायण लाहोटी के निवास पर बैठक आयोजित हुई। बिरलोका ग्राम से खींवसर कस्बे पहुँचे। यहाँ शाम 5 बजे माहेश्वरी भवन में वहां के अध्यक्ष जगदीश राठी के सानिध्य में बैठक आयोजित हुई। वरिष्ठतम सदस्य लक्ष्मीनारायण जाजू, महासभा सदस्य बिहारी चाण्डक व जिला पदाधिकारी नंदकिशोर कर्वा तथा स्थानीय अन्य समाजबंधु उपस्थित थे। वहां पर उपरोक्त सभी जानकारी जिलाध्यक्ष द्वारा दी गई। खींवसर से लालाप ग्राम पहुंच शाम 7 बजे 3 परिवारों से तथा यहां से ग्राम भाकरोद रात 8.30 बजे 3 परिवारों से संपर्क किया।

टीकाकरण अभियान में योगदान

धामनोद। नगर माहेश्वरी युवा मंडल द्वारा महाविद्यालय में आयोजित महा कोरोना टीकाकरण अभियान में टीका लगवाने आये लोगों को शीतल पेय वितरित किया गया। धामनोद युवा संगठन के अध्यक्ष अमित नागवाडिया और सचिव सुमित परवाल ने बताया कि यह क्रम आगे भी जारी रहेगा। इस कार्यक्रम में समाज के सभी लोगों द्वारा बढ़-चढ़कर सहभागिता दर्ज करवाई गई।

बहुत छोटी सी पर बहुत सच्ची बात है
आपका स्वभाव ही आपका भविष्य है

कजली तीज का आयोजन

भीलवाड़ा। आर.के. आर.सी. व्यास माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत सुहाग पर्व कजली तीज के उपलक्ष में 'हरियाली बनड़ी' और 'सावन के झूले' प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। अध्यक्ष इंदिरा हेड़ा व सचिव चेतना जागेटिया के नेतृत्व में आयोजित की गई इन प्रतियोगिताओं में मंडल की सदस्याओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। प्रचार मंत्री मीनू झंवर ने बताया कि सावन के झूले प्रतियोगिता में प्रथम सविता शारदा सुनीता बिरला ग्रुप, द्वितीय मंजुला मंत्री ग्रुप, तृतीय सुनीता नारानीवाल ग्रुप रहा। हरियाली बनड़ी प्रतियोगिता में प्रथम अमृता सोमानी, द्वितीय गजल जागेटिया व अन्नपूर्णा लड्ढा, तृतीय स्नेहलता तोषनीवाल रहीं। सांत्वना पुरस्कार के साथ-साथ सभी प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिताओं के आयोजन में कार्यक्रम प्रभारी रंजना बिड़ला, सुशीला अजमेरा, सुमित्रा दरगड, चंद्रकांता गगरानी, सुनीता नाराणीवाल, सुचिता कोगटा आदि का विशेष योगदान रहा।

ऋषिपंचमी पर्व का आयोजन

फारबिसगंज। स्थानीय माहेश्वरी समाज द्वारा ऋषिपंचमी व्रत का आयोजन किया गया। चुन्नी देवी शारदा ने बताया कि आम तौर पर भारत में रक्षाबंधन का त्योंहार श्रावण पूर्णिमा (नारळी पूर्णिमा) को मनाया जाता है, लेकिन माहेश्वरी गुरुओं के वंशज जिन्हे वर्तमान में छः न्याति समाज के नाम से जाना जाता है अर्थात पारीक, दाधीच, सारस्वत, गौड़, गुर्जर गौड़, शिखवाल आदि एवं डीडू माहेश्वरी, थारी माहेश्वरी, धाटी माहेश्वरी, खंडेलवाल माहेश्वरी आदि माहेश्वरी समाज में रक्षा-बंधन का त्यौहार ऋषिपंचमी के दिन मनाने की परंपरा है। इस परंपरा का सम्बन्ध माहेश्वरी वंशोत्पत्ति से जुड़ा हुआ है। श्रावण पूर्णिमा के दिन राखी बांधकर बहन अपने भाई से स्वयं की रक्षा करते रहने की प्रार्थना करती है। जबकि ऋषि पंचमी के दिन बहन उपवास कर भाई को राखी बांधकर भगवान से हमेशा अपने भाई की कुशल-मंगल की कामना करती है।

मांगलिक भवन का हुआ लोकार्पण

बाग। जैसा सदभाव व सामंजस्यता बाग माहेश्वरी समाज में दिखती है वैसी बहुत ही कम शहरों और गाँवो में देखने को मिलती है। उक्त उद्‌गार धार जिले के बाग माहेश्वरी समाज के मांगलिक भवन के लोकार्पण समारोह ओर दानदाताओ के सम्मान समारोह में मध्यप्रदेश पश्चिमांचल महासभा के अध्यक्ष ओमप्रकाश भराणी ने व्यक्त किये। इस अवसर पर आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए गुजरात माहेश्वरी महासभा के सदस्य, चारभुजा ट्रस्ट छोटा उदयपुर के अशोक अजमेरा ''सावरु सेठ'' ने कहा कि समाज और संगठन की जो भावना मैंने बाग माहेश्वरी समाज में देखी वह सराहनीय व प्रशंसनीय है। इस अवसर पर लाभार्थी परिवार के सेठ बालकृष्ण चौधरी का सम्मान भी समाज द्वारा किया गया। सावरु सेठ ने बाग माहेश्वरी समाज को अपनी ओर से 500 भोजन थाली सेट देने की घोषणा भी की। कार्यकम को प्रादेशिक युवा संगठन के उपाध्यक्ष रोहित झंवर ने सम्बोधित किया। पूर्व अध्यक्ष मदनलाल मानधन्या ने अपनी माताजी की स्मृति में 25 कुर्सी देने की घोषणा की। समाज अध्यक्ष प्रदीप अगाल ने समाज की गतिविधियों के साथ आगामी कार्ययोजनाओं की जानकारी भी दी। आयोजन में पश्चिमांचल माहेश्वरी प्रादेशिक सभा के अध्यक्ष ओमप्रकाश भराणी व अशोक अजमेरा को भी अभिनंदन पत्र भेंट किये गए, वहीं ओमप्रकाश झंवर एवं रोहित झंवर को स्मृतिचिन्ह दिए गए। माहेश्वरी समाज की संचालन समिति के उपाध्यक्ष नीलेश डांगरा, महामंत्री सन्तोष बाहेती, सचिव दिलीप बाहेती, कोषाध्यक्ष ब्रजमोहन जाजू, धार्मिक मंत्री धनराज जाजू, सदस्यगण ब्रजमोहन तापड़िया, रमेश चन्द्र झवर, अमृतलाल झवर, सुरेश अगाल, आशीष तापड़िया आदि भी उपस्थित थे।

माहेश्वरी बॉक्स क्रिकेट लीग का हुआ आयोजन

रांची। स्थानीय माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा आयोजित माहेश्वरी बॉक्स क्रिकेट लीग का स्थानीय ईस्टर्न मॉल के आठवें माले पर समापन हुआ। झारखंड बिहार प्रदेश सह मीडिया प्रभारी राज कुमार लढ़ा ने बताया कि गत 19 सिंतबर को पहला सेमीफाइनल त्रिवेग ट्विस्टर्स और रुद्रा राइडर्स के बीच हुआ था जिसमें रुद्रा राइडर्स ने जीत हासिल की। दूसरा सेमीफाइनल राठी रॉयल्स और साबू सुपरस्टार्स के बीच हुआ था जिसमें राठी रॉयल्स ने जीत हासिल की। उसके बाद राठी रॉयल्स और रुद्रा राइडर्स के बीच हुए रोमांचक मैच में गौतम राठी एवं अनमोल साबू की टीम राठी रॉयल्स ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए फाइनल मैच जीतकर विनर ट्रॉफी अपने नाम की। कुल 8 टीम के बीच हुए इस टूर्नामेंट के संयोजक विनय मंत्री, हर्षित चितलांगिया, कुणाल बोड़ा एवं अंकित मंत्री थे। मैच के समापन के पश्चात श्री माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष शिव शंकर साबू, सचिव नरेंद्र लाखोटिया, प्रदेश उपाध्यक्ष राजकुमार मारू, निवर्तमान प्रदेश युवा अध्यक्ष गिरिजा शंकर पेड़ीवाल, प्रदेश युवा उपाध्यक्ष नीरज चितलांगिया, महिला समिति अध्यक्षा विजय साबू एवं सचिव अनीता साबू एवं ट्रॉफी स्पॉन्सर राजकुमार चितलांगिया और सुमन चितलांगिया के हाथों पुरस्कार वितरण किया गया।

भरत को जेईई मेंस में 99.89 पर्सेन्टाईल

चास बोकोरो। समाज सदस्य रमेश एवम अनिता काबरा के पुत्र भरत काबरा ने जेईई मेंस 2021 में 99.89 पर्सेन्टाईल प्राप्त कर समाज एवं परिवार का नाम रोशन किया। माहेश्वरी समाज के सभी पदाधिकारियों ने फोन द्वारा बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

पूर्वी मध्यप्रदेश महिला संगठन की बैठक संपन्न

रायसेन। पूर्वी मध्यप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन की प्रादेशिक बैठक ''चलें गांव की ओर'' नर्मदा संभाग के रायसेन जिले में अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की महामंत्री मंजू बांगड़ के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुई। नर्मदा संभाग की उपाध्यक्ष उर्मिला सादानी एवम् प्रादेशिक मीडिया प्रभारी हंसा केला ने बताया कि कोरोना काल में दिवंगतों के प्रति 2 मिनिट का मौन रखकर सदन में कार्य समिति सदस्या प्रतिभा झंवर द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करवाई गई। प्रदेश संगठन की ओर से मानद मंत्री दीपक चांडक ने राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ का आत्मीय स्वागत करते हुए, महिला संगठन की सराहना की व भावी योजनाओं की जानकारी दी। तत्पश्चात रायसेन जिले की जिला अध्यक्ष प्रेमा झंवर द्वारा स्वागत उद्बोधन के साथ जिले की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। प्रादेशिक अध्यक्षा अनिता जावंधिया ने पूर्वी मध्यप्रदेश द्वारा किये गए कार्यों, बैठकों, प्रदेश में सेमिनार, वेबिनार, चारो संभाग द्वारा किये जा रहे कार्यो आदि की विस्तृत जानकारी दी।

समझौता करना सीखिये, क्योंकि थोड़ा सा झुक जाना किसी रिश्ते को हमेशा के लिये तोड़ देने से बहुत बेहतर है।

विशिष्ट वर्ग परिचय सम्मेलन संपन्न

पुणे। परिचय सम्मेलन समिति- महाराष्ट्र प्रदेश, प्रदेश महिला तथा युवा संगठन तथा संस्था रिश्ते-धागे पुणे द्वारा समिति के प्रमुख संयोजक श्रीकांत लखोटिया के मार्गदर्शन में ऑनलाइन विशिष्ट वर्ग परिचय सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। महेश पूजन से श्रीकांत लखोटिया, पांडुरंग मरदा, घनश्याम लड्ढा, धीरज मरदा, ईश्वर लद्दड तथा नीरज लखोटिया के करकमलों से सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन प्रदेश अध्यक्ष श्रीकिशन भंसाली के करकमलों द्वारा हुआ। प्रमुख अतिथि महाराष्ट्र प्रदेश महिला संगठन के अध्यक्ष अनुसया मालू, महाराष्ट्र प्रदेश युवा संगठन के अध्यक्ष हार्दिक सारडा, अखिल भारतीय महिला संगठन के सहमंत्री पुष्पा तोषनीवाल, प्रदेश महिला विवाह प्रकोष्ठ प्रमुख संगीता लाहोटी आदि थीं। प्रदेश परिचय सम्मेलन के प्रमुख संयोजक श्रीकांत लखोटिया ने सबका स्वागत किया।

सीए में माहेश्वरी प्रतिभाऐं सफल

सपना लखोटिया | मुकुंद मून्दड़ा | ऋषभ काबरा | पियूष सोमानी

धनबाद (झारखंड)। झारखंड बिहार माहेश्वरी सभा के संगठन मंत्री आदित्य मून्दड़ा के छोटे भाई आलोक मून्दड़ा के पुत्र मुकुंद मून्दड़ा, धनबाद माहेश्वरी सभा सदस्य राजेश सोमानी के पुत्र पियूष सोमानी, फारबिसगंज निवासी पूर्व फारबिसगंज माहेश्वरी सभा अध्यक्ष रामोतार लखोटिया की पोती सपना लखोटिया पिता रवि लखोटिया एवं फारबिसगंज माहेश्वरी सभा अध्यक्ष प्रदीप राठी के भांजे ऋषभ काबरा पिता स्वर्गीय श्री कैलाश काबरा ने सीए फाइनल में सफलता प्राप्त की। प्रदेश सभा के सभी पदाधिकारियों ने उनको फोन कर बधाई दी और उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

जन्माष्टमी पर्व का हुआ आयोजन

खरगोन। माहेश्वरी समाज ने पुष्पा जाजू के निवास पर जन्माष्टमी का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया। इसमें श्री कृष्ण की मनमोहक झांकी सजाई गई व सभी को गेम खेलाया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष अलका सोमानी, जानकी खटोड़, पुष्पा जाजू, स्मिता बियानी, उमा सोमानी, सुमन खटोड़, निशा भट्टड़, अंजली जाजू, आशा मंडोरा, गिरजा झंवर आदि उपस्थित थीं।

महिला परिषद् ने किया रूद्राभिषेक

जयपुर। श्री माहेश्वरी महिला परिषद कार्यकारिणी सदस्याओं ने पवित्र श्रावण माह में राष्ट्रसंत गोविंददेव गिरि जी महाराज द्वारा स्थापित ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ, पुष्कर के सिद्ध स्थल मृत्युंजय महादेव मंदिर में पूर्ण विधि-विधान से पूजा-अर्चना व रुद्राभिषेक किया तथा कोरोना से शीघ्र मुक्ति के लिए मंगलकामना की। परिषद अध्यक्ष रजनी माहेश्वरी ने बताया कि 13 अगस्त को प्रातः डीलक्स बस द्वारा रवाना होकर परिषद कार्यकारिणी सदस्याएं इस अनुष्ठान हेतु पुष्कर पहुंचीं। वहां परिषद की ओर से वेद विद्यापीठ में अध्ययनरत बटुकों के शिक्षा सहयोग हेतु अनुदान राशि व उपहार भेंट किए गए तथा उन्हें भोजन कराया गया। महामृत्युंजय महादेव मंदिर में रुद्राभिषेक की मुख्य यजमान ज्योति तोतला थीं।

पुण्यतिथि पर प्रतिभा सम्मान

अमेठी (उ.प्र.)। पंकज माहेश्वरी स्मृति महाविद्यालय, नन्दग्राम, जायस, अमेठी (उ.प्र.) द्वारा स्मृति शेष स्व. श्री पंकज माहेश्वरी की पुण्यतिथि 14 सितम्बर पर प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। इसके साथ ही हिन्दी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में वक्ताओं ने हिन्दी के महत्व पर व्याख्यान तथा कविताओं की प्रस्तुति दी। प्रबंधक मनोज माहेश्वरी ने हँसाकर तथा रुलाकर सब को दिखाया कि हिन्दी और हिन्दी साहित्य की हृदय स्पर्शी शक्ति क्या है?

अगर दुनिया आपकी ईमानदारी पर शक करे तो दुःखी नहीं होना क्योंकि शक सोने की शुद्धता पर ही किया जाना है लोहे की नही।

मोक्षधाम नवीनीकरण योजना का शुभारंभ

जयपुर। श्री महेश्वरी समाज जयपुर के तत्वावधान में सर्व धर्म मोक्षधाम चांदपोल के नवीनीकरण, विकास एवं नियमित संचालन की योजना का शुभारंभ किया गया। राजस्थान सरकार ने इसके लिए मोक्ष धाम परिसर में 4479 वर्ग मीटर भूमि श्री माहेश्वरी समाज को दी है। श्री माहेश्वरी समाज और सरकार मिलकर इसका विकास करेंगे। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने श्री माहेश्वरी समाज के सेवा कार्यक्रमों की प्रशंसा की। श्री खाचरियावास ने इस अवसर पर 1100000 रुपए इस योजना हेतु श्री माहेश्वरी समाज को देने की घोषणा की। इसके साथ उन्होंने यहां विद्युत शवदाह गृह के निर्माण में भी सहायता करने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि किशनपोल विधायक अमीन कागजी ने अपने कोष से 2500000 रुपए देने की घोषणा की है। माहेश्वरी समाज जयपुर के अध्यक्ष प्रदीप बाहेती ने बताया कि इस योजना के तहत आधुनिक सुविधाओं के साथ, 5 दाह संस्कार स्थल, दो हॉल, मंदिर, विश्रांति स्थल, अस्ति संग्रह व पेयजल सुविधा आदि का काम प्रस्तावित है इसे आने वाले 4 माह में आमजन के लिए तैयार करवाने का पूरा प्रयास रहेगा। इसमें सरकार भी सहयोग कर रही है और माहेश्वरी समाज के लोग भी आर्थिक मदद कर रहे हैं। इससे पूर्व समाज के पूर्व अध्यक्ष और संरक्षक आर डी बाहेती ने नवीनीकरण स्थल का भूमि पूजन किया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में समाज की ओर से प्रमुख समाजसेवी नटवर गोपाल मालपानी एवं अतिथि के रूप में समाज संरक्षक ज्योति कुमार माहेश्वरी मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जयपुर हेरिटेज महापौर मुनेश गुर्जर ने की। मोक्षधाम समिति के अध्यक्ष व पार्षद मनोज मुद्गल, वार्ड क्रमांक 55 के पार्षद जितेंद्र कुमार लखवानी, उपायुक्त सोहन राम चौधरी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। समाज महामंत्री गोपाल लाल मालपानी, चांदपोल मोक्षधाम भवन निर्माण समिति के चेयरमैन सुशील काबरा, सचिव तेजकरण चौधरी, सहित अनेक पदाधिकारी व गणमान्यजन उपस्थित थे।

''पधारो बीरा भोजाई संग'' कार्यक्रम संपन्न

निजामाबाद। स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा आयोजित ''पधारो बीरा भोजाई के संग'' कार्यक्रम गत 5 सितम्बर को माहेश्वरी भवन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि हैदराबाद निवासी अनीता सोनी व विशेष अतिथि निजामाबाद निवासी प्रमुख समाज सेवी लक्ष्मण जाजू थे। इस कार्यक्रम में पुरुषोत्तम सोमानी, ओमप्रकाश मोदानी, कुंज बिहारी मूंदड़ा, हैदराबाद से पधारी हुई आंध्रप्रदेश तेलंगाना के माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्षा उर्मिला साबू, सचिव रजनी राठी, कोषाध्यक्ष मंजू व अन्य गणमान्य महिलाएं उपस्थित थीं। सभी भाई-भाभियों को शाही भोज करवा कर पंडित द्वारा मंत्रोच्चार से बहनों ने भाई और भाभी को राखी बांधी। तंबोला सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद सह भोज का आयोजन किया गया। माहेश्वरी महिला मंडल निजामाबाद अध्यक्षा पुष्पा सोमानी ने कार्यक्रम का नेतृत्व किया। माहेश्वरी युवा मंच, माहेश्वरी सभा व माहेश्वरी भवन ट्रस्ट का भी पूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम की संयोजिका मंजू सारडा थी। माहेश्वरी मंडल की सचिव श्रीमती शारदा ने आभार माना।

राधाष्टमी का हुआ आयोजन

बिल्सी। मौहल्ला नंबर दो में स्थित श्री बांके बिहारी मंदिर में श्री राधा अष्टमी जन्म उत्सव बड़े ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्रीराधा जी को छप्पन व्यंजनों का भोग लगाया गया। कार्यक्रम में पश्चिमी उत्तर प्रदेश माहेश्वरी सभा के प्रदेश मंत्री सुभाष चंद बाहेती, दिनेश चंद्र असावा, जयप्रकाश लड्ढा, दीपक माहेश्वरी (बाबा), पवन बाहेती, नीरज बाहेती पंकज बाहेती, विपिन बाहेती, राकेश माहेश्वरी सर्राफ, उमेश तोषनीवाल, सुबीन माहेश्वरी, राजीव माहेश्वरी, राजीव असावा, मुकुंद मालपानी, चंद्रसेन माहेश्वरी, सचिन असावा, वरुण गुप्ता आदि कई श्रद्धालु मौजूद थे।

मधु भूतड़ा 'अक्षरा' एवं स्वाति जैसलमेरिया 'सरु' सम्मानित

जोधपुर। नशा मुक्ति राष्ट्रीय अभियान के तत्वावधान में साहित्य संगम संस्थान द्वारा आयोजित जनजागृति के काव्य गोष्ठी कार्यक्रम में केंद्रीय राज्यमंत्री कौशल किशोर को आमंत्रित किया गया। इसमें मधु भूतड़ा एवं स्वाति जैसलमेरिया जोधपुर ने मंच संचालन किया। उन्होंने संचालन के दौरान नशे को 'ना' कहकर एक सशक्त आवाज़ से अपने मन के उद्गार काव्य के माध्यम से मंच पर रखे, जिसे मंत्री जी के साथ ही सभी कवियों एवं उपस्थित प्रबुद्धज़नों द्वारा भी खूब सराहा गया।

जीवन में हमेशा एक-दूसरे को समझने का प्रयत्न करिए परखने का नहीं।

पर्यावरण शुद्ध करती - शिखा महेश्वरी

मोदीनगर (उ.प्र.)। पर्यावरण को स्वस्थ और प्रदूषण मुक्त बनाने की दिशा में ही कार्य कर रही हैं मोदीनगर के समाजसेवी विनोद माहेश्वरी के भाई नरेंद्र महेश्वरी की पुत्रवधु शिखा माहेश्वरी। शिखा को प्रकृति और हरियाली से बहुत प्रेम है और इसी प्रेम की वजह से मोदीनगर में पिछले कई सालों से अपनी नर्सरी द्वारा पर्यावरण को स्वच्छ व स्वस्थ बनाने में प्रयासरत हैं। उनका मानना है कि शहर का प्रत्येक घर भी यदि अपने आस पास की वायु को शुद्ध बनाने का प्रयत्न करे तो निश्चित ही उस शहर का पर्यावरण स्वच्छ होता जाएगा। शिखा वर्टीकल गार्डनिंग द्वारा एक तरफ जहाँ वातावरण को हरा भरा और तरोताज़ा रखने में मदद करती हैं, वही इसके द्वारा पर्यावरण से प्रदूषण भी कम करती हैं। घर के बाहर ही नहीं बल्कि घर के अंदर की वायु को भी शुद्ध करने के लिए शिखा प्रयासरत हैं यानी कि ऐसे पौधों की खेती करती हैं जो इनडोर एयर को फ़िल्टर करने में मदद करते हैं। शिखा स्कूल, कॉलेजों, हॉस्पिटल्स, कॉर्पोरेट्स में टेबल टॉप पौधे प्रोवाइड कराती हैं जो वातावरण को शुद्ध करने में काफ़ी सहायक होते हैं।

श्रीमती मुंदड़ा का सम्मान

इंदौर। जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा सतत आटा प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक संपन्न होने के पश्चात पिकनिक का कार्यक्रम गत 16 सितम्बर को राऊ में मनाया गया। इस अवसर पर वनबंधु परिषद की राष्ट्रीय टीम में पहली बार किसी महिला महामंत्री के रूप में कार्यभार ग्रहण किये जाने पर महिला संगठन की गीता मुंदड़ा को सम्मानित किया गया। संस्था अध्यक्ष सुमन सारडा ने बताया कि सत्तू आटा महिला संगठन का महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट है जिसे कोविड के नियमों का पालन करते हुए संस्था की सभी बहनों के सहयोग एवं भागीदारी से बनवाया एवं वितरित किया गया। संयोजक चंद्रा मुंदड़ा एवं सरोज सोमानी ने पर्यावरण से संबंधित रोचक गेम खिलाकर पर्यावरण के प्रति जागरुकता का संदेश दिया। सहसंयोजक विनिता जैथलिया, शीला काबरा द्वारा फिजिकल फिटनेस संबंधित गेम एवं तम्बोला खिलाया गया। इस अवसर पर संस्था पदाधिकारी अर्चना माहेश्वरी, पुष्पा मोलासारिया, दमयंती मणियार, डिंपल माहेश्वरी, मीरा बंग, मीनाक्षी नवाल सहित कई सदस्याऐं उपस्थिति थीं।

मालानी बने मानव अधिकार कोषाध्यक्ष

अमरावती। जिला माहेश्वरी संगठन के उपाध्यक्ष कमल किशोर मालानी प्रतिष्ठित संस्था मानव अधिकार सुरक्षा संगठन महाराष्ट्र के कोषाध्यक्ष मनोनीत किये गये। इस उपलब्धि पर विदर्भ प्रदेश माहेश्वरी संगठन द्वारा अध्यक्ष एडवोकेट रमेशचंद्र चांडक के नेतृत्व में श्री मालाणी का शाल, श्रीफल एवं पुष्पगुच्छ देखकर सत्कार किया गया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेश चांडक चार्टर्ड अकाउंटेंट, प्राचार्य विजयकुमार भांगड़िया एवं अशोक सोनी सदस्य अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा, अमरावती जिला माहेश्वरी संगठन के सचिव प्रमोद राठी, उपाध्यक्ष डॉक्टर नंदकिशोर भूतड़ा, कोषाध्यक्ष बिहारीलाल बूब, कार्यकारी समिति के मंत्री अमित मंत्री उत्तर प्रभाग के अध्यक्ष प्रा. सीताराम राठी, मोहित सारड़ा आदि उपस्थित थे।

युवा संगठन ने किया चंद्रपूर जिला भ्रमण

चंद्रपूर। विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के कार्यकारणी सदस्यों द्वारा "संगठन आपके" द्वारा उपक्रम के अंतर्गत चंद्रपुर शहर समेत 7 तहसीलों का दौरा किया गया। इस दौरे में वरोरा, चिमूर, ब्रम्हपुरी, नागभीड, बल्लारपुर एवं राजुरा तहसील सम्मिलित थीं। कार्यकारणी सदस्यों के प्रवास का प्रमुख उद्देश्य चंद्रपुर की सभी तहसीलों के माहेश्वरी समाज के युवाओं को आपस में जोड़ना एवं प्रत्येक तहसील की अपनी कार्यकारिणी स्थापित करना था। कार्यकारणी सदस्यों ने प्रत्येक तहसील के उपस्थित माहेश्वरी समाज के सदस्यों को सामाजिक एकता एवं बंधुभाव रखने हेतु स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित किया। विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष हिमांशु चांडक ने बताया कि इस दौरे में राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य श्रीनिवास मोहता, प्रदेश अध्यक्ष हिमांशु चांडक, प्रदेश मंत्री प्रवीण कलंत्री, प्रदेश उपाध्यक्ष सचिन झंवर, प्रदेश सह सचिव प्रतीक बागड़ी, प्रदेश सह सचिव सागर मुंधडा, प्रदेश प्रचार मंत्री प्रकाश असावा, प्रदेश सांस्कृतिक मंत्री भावेश लड्ढा, प्रदेश खेल मंत्री दीपक सोमानी, जिला अध्यक्ष अश्विन सारडा, जिला सचिव पीयूष माहेश्वरी आदि कई सदस्य व पदाधिकारी शामिल थे।

विचार और व्यवहार हमारे
बगीचे के वो फूल हैं, जो
हमारे पूरे व्यक्तित्व को महका देंगे।

शिक्षा के साथ-साथ संस्कार भी दें

जयपुर। प्रबंधन गुरू व चिंतक पं. विजय शंकर मेहता ने कहा कि मनुष्य के लिए सबसे महत्वपर्ण परिवार होता है, उसकी हर कीमत पर रक्षा करनी चाहिए क्योंकि आप भौतिक सुख-सुविधाओं की सारी चीजें कमा सकते हैं, लेकिन रिश्ते नहीं कमा सकते। पं. मेहता माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, जवाहर नगर में शिक्षक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में व्याख्यान दे रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन जयपुर माहेश्वरी समाज की ओर से किया गया था। विशिष्ट अतिथि प्रमुख व्यवसायी वीरेन्द्र कुमार सारडा थे। मुख्य अतिथि किशनपोल विधायक अमीन कागजी रहे। कार्यक्रम में संस्था के श्रेष्ठ शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया। ईसीएमएस के महासचिव शिक्षा नटवर लाल अजमेरा, ईसीएमएस अध्यक्ष प्रदीप बाहेती, उपाध्यक्ष रमेश कुमार सोमानी, कोषाध्यक्ष नटवर कुमार सारड़ा, एमपीएस कालवाड़ सचिव मनोज बिड़ला, भवन मंत्री मनीष सोमानी आदि मौजूद रहें।

मांगलिक भवन का हुआ लोकार्पण

बाग (म.प्र.)। स्थानीय माहेश्वरी समाज ने गत 14 सितम्बर को नवनिर्मित माहेश्वरी मांगलिक भवन का लोकार्पण किया। दो दिवसीय लोकार्पण का कार्यक्रम सत्यनारायण भगवान की कथा से प्रारंभ होकर समाज के दान-दाताओं के सम्मान व सहभोज के साथ सम्पन्न हुआ। समाज के लोकार्पण के लाभार्थी झंवर परिवार का विशेष सम्मान किया गया। मुख्य यजमान लाभार्थी परिवार के अखिलेश झंवर ने कार्यक्रम की शुरूआत की। तपोभूमि श्री गंगाकूई धाम के पूज्य संत श्री सूरजपूरीजी महाराज के सानिध्य में आयोजित सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पश्चिमांचल माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष ओमप्रकाश भराणी, विशेष अतिथि अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के गुजरात प्रांत के सदस्य अशोक कुमार अजमेरा, प्रादेशिक महासभा के संयुक्त मंत्री ओमप्रकाश झंवर, प्रादेशिक युवा संगठन के उपाध्यक्ष रोहित झंवर, समाज अध्यक्ष प्रदीप अगाल व संचालन समिति के सभी सदस्यों ने लाभार्थी परिवारजनों बालकृष्ण झंवर, दिनेश झंवर, उमेश झंवर, अखिलेश झंवर, का सम्मान कर अभिनंदन पत्र भेंट किया गया। समाज द्वारा बालकृष्ण झंवर को "समाज रत्न" की उपाधि प्रदान की।

जेसीआई सप्ताह का हुआ आयोजन

चंद्रपुर। जेसीआई चंद्रपुर एलीट ने 09 सितंबर से 15 सितंबर तक जेसीआई साप्ताहिक मनाया। इसमें सप्ताह भर में कई सामाजिक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस जेसीआई साप्ताहिक कार्यक्रम के मुख्य परियोजना समन्वयक सीए पंकज मुंदड़ा थे। आशीष मुंधड़ा ने विशेष योगदान दिया। इस साप्ताहिक कार्यक्रम में भरत बजाज, अनूप गांधी, प्रतीक सारदा, अनूप काबरा आदि ने विशेष सहयोग दिया।

सत्तु का आटा किया तैयार

उज्जैन। श्री माहेश्वरी महिला मंडल नरसिंह मंदिर द्वारा हमेशा की तरह इस बार भी सत्तू का आटा तैयार किया गया जो कि उज्जैन के साथ दूसरे शहरों में भी भेजा गया। महिला मंडल द्वारा बछ बारस के सामूहिक उद्यापन भी किए गए। अध्यक्ष रेखा लड्ढा ने भविष्य में और भी उद्यापन कराए जाने की बात कही। उक्त जानकारी सचिव उषा भट्टड ने दी।

खरी-खरी

लेने के लिये ज्ञान है
देने के लिये दान

भजने के लिये राम के
आदर्श का गुणगान

तजना है द्वेष, दम्भ
लोभ, स्वार्थ को तजो

पर भूल से तजना न
कभी, आप स्वाभिमान.

© राजेन्द्र गट्टानी, भोपाल
94250-16939, 87702-21707

बछबारस का सामूहिक उद्यापन

नागदा। स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा माहेश्वरी भवन में बछबारस व्रत का सामूहिक उद्यापन करवाया गया। भाद्रपद कृष्ण पक्ष की द्वादशी पर महिलाओं द्वारा गाय-बछड़े की पूजा अर्चना कर गुड़ चने तथा बेसन के लड्डू खिलाये गये तथा संतान की दीर्घायु व रक्षा के लिए गोमाता से प्रार्थना की गई। महिला मंडल अध्यक्ष प्रीति मालपानी ने बताया कि 11 महिलाओं ने सामूहिक उद्यापन किया व उपहार भेंट किये। प्रीति मालपानी, सीमा मालपानी, उमा डांगरा, उषा मालपानी, किरण बजाज, अलका नवाल, निक्की राठी, ज्योति गगरानी, रेणु राठी आदि उपस्थित थीं।

मनभावन हरियाली तीज समारोह संपन्न

अमरावती। स्वयंसिद्धा माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा मनभावन हरियाली तीज का कार्यक्रम मेधावी छात्रों के सत्कार के साथ आयोजित किया गया। अध्यक्ष वर्षा जाजू और सचिव दुर्गा हेडा, उमा राठी, संध्या राठी, इंदिरा सारडा, गीता लड्ढा, सरला गांधी की उपस्थिति में 2020-21 में 10वीं और 12वीं के छात्राओं को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में जयमाला चितलांगे, तारा टवाणी, साधना गट्टानी, सुषमा करवा, मीरा चांडक, दुर्गा जाजू, रोशनी गांधी, रश्मी मूंदड़ा, अलका आदि कई सदस्याऐं उपस्थित थीं।

असावा परिवार में तिहरी सफलता

भंडारा। संतोष-लालचंद असावा की सुपुत्री कु उमेश्वरी ने कंपनी सेक्रेटरी का कोर्स सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया है, साथ में उन्होंने सीए फाइनल का एक ग्रुप भी उत्तीर्ण कर लिया है। श्री असावा की सुपुत्री कु. ऐश्वर्या ने नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, वरंगल से एमएससी मैथमेटिक्स की डिग्री प्राप्त की। साथ में ही ऐश्वर्या ने गेट मैथमेटिक्स 2021 की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। उनके सुपुत्र जयेश असावा को इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, दिल्ली में मास्टर ऑफ़ कंप्यूटर टेक्नोलॉजी में प्रवेश मिला है। जयेश को गेट कंप्यूटर साइंस 2021 की परीक्षा में आल इंडिया रैंक 401 हासिल हुई थी।

श्रद्धा उल्लास के साथ नंदोत्सव संपन्न

जयपुर। माहेश्वरी महिला परिषद कार्यकारिणी व सक्रिय सदस्याओं ने 6 सितंबर को अत्यंत श्रद्धा व उल्लास के साथ नंदोत्सव मनाया। एमपीएस जवाहर नगर स्थित तक्षशिला सभागार में आयोजित नंदोत्सव की मुख्य अतिथि ऊषा कोठारी एवं विशिष्ट अतिथि सरला माहेश्वरी (मारू) ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। परिषद अध्यक्ष रजनी माहेश्वरी, सचिव स्नेहलता साबू एवं कार्यक्रम संयोजक ममता जाजू ने अतिथियों का स्वागत दुपट्टे ओढ़ा कर किया। पीत परिधानों में सजी-धजी सदस्याओं ने कृष्ण भजनों की प्रस्तुति दी गई। सविता राठी एवं सुनीता जेथलिया ने मंच संचालन किया। सामूहिक नृत्यों में भाग लेने वाली सभी कलाकारों को आराधना सोमानी की ओर से 500 - 500 रू. के गिफ्ट वाउचर तथा परिषद की ओर से पारितोषिक वितरित किए गए।

श्रद्धांजलि

हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रेमनारायण सोमानी

वाराणसी। हृदय रोग विशेषज्ञ और आईएमएस बीएचयू के पूर्व निदेशक डॉ. प्रेम नारायण सोमानी का बुधवार की सुबह करीब 9.30 बजे जवाहर नगर स्थित आवास पर 93 वर्ष की अवधि में हृदय गति रुकने से निधन हो गया। डॉ. सोमानी आईएमएस बीएचयू में वर्ष 1961 से बतौर रीडर जुड़े थे व वर्ष 1991 में आईएमएस निदेशक पद से सेवानिवृत्त हुए थे। आप बीएचयू अस्पताल के पहले कॉर्डियोलॉजिस्ट थे। उन्होंने बीएचयू में कार्डियोलॉजी विभाग की शुरुआत की थी। आप अपने पीछे पत्नी ऊषा सोमानी व तीन बेटे सिद्धार्थ सोमानी, प्रफुल्ल सोमानी और अनुराग सोमानी का भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनका अंतिम संस्कार हरिशचंद्र घाट पर किया गया। मुखाग्नि बड़े बेटे प्रफुल्ल सोमानी ने दी। उनकी अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में कई गणमान्यजन शामिल हुए।

श्रद्धासुमन अर्पित

चिकित्सा विज्ञान संस्थान बीएचयू के पूर्व निदेशक प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ आदरणीय प्रोफेसर (डॉ.) पीएन सोमानी, वाराणसी का स्वर्गवास समाज की अपूरणीय क्षति है। समाज प्रेम की अविरल धारा उनके हृदय में बहती रहती थी। समाज की अद्भूत सेवा करने वाले डॉक्टर साहब हमेशा याद किए जाएंगे। समाज ने अपना एक श्रेष्ठ समाजसेवी व्यक्तित्व खो दिया। पूर्वी उत्तर प्रदेश माहेश्वरी सभा उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए भगवान से प्रार्थना करती है कि शोक संतप्त परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

-श्रीराम माहेश्वरी, प्रदेश अध्यक्ष
पूर्वी उत्तरप्रदेश माहेश्वरी सभा

सजल को राज्य शूटिंग में तीन पदक

कांटाफोड़। नगर के प्रतिष्ठित गोपालदास सिंगी के पौत्र अभय सिंगी पुत्र सजल सिंगी ने 10 मीटर राइफल आइएसएसएफ जूनियर में स्वर्ण तथा सिनियर में रजक पदक हासिल किया। सजल की इस उपलब्धि पर नगर के वरिष्ठ उद्योगपति शेलेष होलानी, नटवर बियाणी, विनय सांगी आदि ने हर्ष व्यक्त किया।

डॉ. बल्दवा को उत्तम उपाध्याय पुरस्कार

वरंगल (तेलंगाना)। डॉ. विष्णुकुमार बल्दवा सुपुत्र स्व.श्री नथमल बल्दवा को रोटरी क्लब हनमकोंडा द्वारा उत्तम उपाध्याय (राष्ट्र निर्माता) पुरस्कार उपाध्याय दीनोत्सव के उपलक्ष्य में प्रदान किया गया। डॉ. बल्दवा सरकारी स्नातक कलाशाला नरसंपेट में वाणिज्य शास्त्र विभाग के सहायक आचार्य हैं। गत 20 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. बल्दवा द्वारा दी गयी अविराम सेवाओं को नजर में रख यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

स्वास्थ्य परिचर्चा का किया आयोजन

जयपुर। क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा सोडाला द्वारा नारायणा मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल के सहयोग से स्वास्थ्य परिचर्चा सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें डॉ. अंशु काबरा (हृदय रोग विशेषज्ञ) और डॉ. मुकुल गुप्ता (हार्मोन्स एवं डायबिटीज रोग विशेषज्ञ) द्वारा हृदय रोग एवं डायबिटीज पर विस्तृत स्वास्थ्य संबोधन दिया गया। डॉ. अंशु काबरा ने हृदय रोग में वांछित ब्लड प्रेशर मानकों के महत्व पर प्रकाश डाला व बताया कि हमें अपना नियमित बीपी घर पर ही चैक करते रहना चाहिए। डॉ. मुकुल गुप्ता ने हार्मोन्स डिसआर्डर और डायबिटीज पर अपने संबोधन में कहा है कि डायबिटीज से कई खतरनाक बीमारियाँ, जैसे आंखों में धुंधलापन आना, मोटापा बढ़ना, किडनी में इंफेक्शन, शारीरिक थकावट आदि हो सकती है। क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा सोडाला, जयपुर अध्यक्ष महेश चांडक, सत्यनारायण मोदानी उपाध्यक्ष, गोपाल मूंदड़ा उपाध्यक्ष, रमेश कुमार भैय्या मंत्री, आरसी भराडिया कोषाध्यक्ष, ओमप्रकाश काबरा प्रचार एवं संगठन मंत्री आदि गणमान्य समाज बंधुओं और महिलाओं की उत्साहवर्धक भागीदारी से कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

सड़क कभी भी सीधी नहीं होती,
कुछ देर बाद मोड़ अवश्य आता है,
जिंदगी भी सड़क जैसी है,
बस धैर्य के साथ चलते रहो,
सुखद मोड़ अवश्य आएगा।

उत्कर्ष बनें जूनियर एम्बेसडर 2021

अमरावती। जापान में आयोजित एशियन पेसिफिक चिल्ड्रन कन्वेंशन के लिए जेसीआई नेशनल हेड क्वार्टर द्वारा हर वर्ष समूचे भारत से केवल छह बच्चों का चयन किया जाता है। इसमें इस बार उत्कर्ष सीताराम राठी का चयन हुआ है। यह चयन बच्चो के स्क्रेब बुक और उम्र 11 वर्ष तक के परफॉर्मेंस पर होता है। उत्कर्ष दिल्ली पब्लिक स्कूल, अमरावती के होनहार छात्र हैं। वह पढ़ाई, खेल-कूद, नृत्य, गीत-संगीत, नाटिका आदि हर क्षेत्र में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। इसी के तहत ऑल राउंडर श्रेणी में उत्कर्ष का चयन जापान के लिए किया गया। उत्कर्ष ब्रिजलाल बियानी साइंस कॉलेज के उप-प्राचार्य सीताराम राठी एवं जेसीआई राष्ट्रीय प्रशिक्षक जेसी संगीता राठी के सुपुत्र हैं। इसके पहले 2016 में इनकी सुपुत्री कु. उन्नति राठी स्वयं जापान गई थी एवं अभी वह ब्रिज क्लब इंडिया की सेंट्रल झोन कोऑर्डिनेटर हैं।

कविता

हम बुढढे हो गये कभी मत कहो

लखनलाल माहेश्वरी
पूर्व व्याख्याता, अजमेर

वरिष्ठ नागरिकों ये कभी मत कहो
हम तो बुढढे हो गये हैं
आप सभी तो तप कर सोना बन गये हो
आप हम सबके लिये आदर्श बन गये हो।
उम्र का बढ़ना तो जरुरी होता है
महसूस मत करो इस बढती उम्र को
उम्र को हराना है, अपने शौको को जिन्दा रखो
घुटने चलें या ना चले मन को हवा में उड़ाते रखो।।
जीवन में मुश्किलें तो आती रहती है
इन्हे आर्ट ऑफ लाइफ मानते रहो
इनसे हंसकर बाहर निकलना है
इसी को तो आर्ट ऑफ लाइफ कहते हैं।।
जिन्दगी में सफेद बाल तो आना मुमकिन है
जो तप कर अपने बाल सफेद करते हैं
वे अपने अनुभवों से सबको लाभ देते हैं
वे ही वरिष्ठ नागरिक जन कहलाते हैं।।
वरिष्ठ नागरिक ऐसे ही नहीं बनते हैं
अपनी जिनदगी में अच्छे काम करते हैं
अपनी सेवा का लाभ समाज को देते हैं
तभी तप कर उनके बाल सफेद होते हैं।
हर वरिष्ठ नागरिक बुढढा नहीं होता है
कुछ कारण ही उसे बुढढा बना देते हैं
प्रेम लखन का कहना है जीवन की परिस्थितियां ही
उन्हे बुढ्ढा होने को मजबूर कर देती हैं।।

प्रणय को सी.ए. में 47 वीं रेंक

चित्तौड़गढ़। प्रणय सामरिया सुपुत्र स्व.श्री रामप्रकाश सामरिया ने सी.ए. फाईनल परीक्षा अखिल भारतीय स्तर पर 47 वीं रेंक के साथ उतीर्ण कर माहेश्वरी समाज का नाम रोशन किया। नगर माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष सत्यनारायण आगाल व महामंत्री राजेश ईनाणी ने श्री सामरिया की सफलता पर हर्ष व्यक्त किया।

आयुष को 99.2 % अंक

उज्जैन। आयुष माहेश्वरी पौत्र आर के माहेश्वरी व सुपुत्र शैलेष-अंजु माहेश्वरी ने बी. टेक इलेक्ट्रॉनिक्स एंड टेलीकम्यूनिकेशन की फाइनल ईयर की परीक्षा 99.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की। इसके साथ ही दो आईटी कंपनियों कैपजेमिनी (Capgemini) एवं एक्सेंचर (Accenture) में भी कैंपस प्लेसमेंट प्राप्त हुआ है।

पंकज बने सीए

जयपुर (राजस्थान)। समाज सदस्या श्रीमती भारती माहेश्वरी के सुपुत्र तथा स्व. श्री सामनदास व रूख्मणी पनपालिया के दोहित्र पंकज माहेश्वरी ने सीए फायनल की परीक्षा ऑल इंडिया 45वीं रेंक के साथ उत्तीर्ण की। इसमें उन्होंने मात्र 19 वर्ष की उम्र में सीए बनने का कीर्तिमान स्थापित किया।

समृद्धि को 94.2 प्रतिशत अंक

बरेली। समाज सदस्य प्रदीप -बबीता परवाल की सुपुत्री समृद्धि ने आईसीएसई 10वीं की परीक्षा 94.2 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की।

वैभव को 94 प्रतिशत अंक

बरेली। समाज सदस्य अमित व कविता मोहता के सुपत्र वैभव ने आईसीएसई 10वीं की परीक्षा 94 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की।

मयुरी बनी सीए

बीड (महाराष्ट्र)। समाज सदस्य श्याम लाहोटी की सुपुत्री तथा महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा के पूर्व अध्यक्ष बांगड माहेश्वरी मेडिकल भीलवाड़ा के ट्रस्टी व आदित्य विक्रम बिरला के मराठवाड़ा संयोजक सत्यनारायण लाहोटी की पोत्री मयूरी लाहोटी ने 21 वर्ष की उम्र में सीए में सफलता प्राप्त की है। समस्त स्नेहीजनों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

पीयूष बने सीए

हैदराबाद (तेलंगाना)। खैरताबाद निवासी प्रदीप कुमार व सपना मूंदड़ा के सुपुत्र पीयुष ने आईसीएआई द्वारा आयोजित सीए अंतिम वर्ष की दोनों ग्रुप की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस उपलब्धि पर समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

कविश को सी.ए. में सफलता

उदयपुर। मोहनलाल देवपुरा सी.ए. के प्रपोत्र तथा राजेश देवपुरा के सुपुत्र कविश देवपुरा ने सी.ए. की परीक्षा में सफलता प्राप्त की। इस उपलब्धि पर समस्त स्नेही व परिवारजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

दिव्यांश को 96% अंक

सूरत। समाज सदस्य विनोद तथा मीनू बिन्नानी के सुपुत्र दिव्यांश ने 12वीं बोर्ड की परीक्षा डीपीएस से 96% अंकों के साथ उत्तीर्ण की। उन्होंने बिट्स पिलानी के दुबई केम्पस में इंजीनियरिंग सीएस ब्रांच में प्रवेश लिया है।

न हथियार से मिलती है
न अधिकार से मिलती है
दिलों में जगह आपके
व्यवहार से मिलती है।

वैजयंती बनी सीए

सोलापुर, (महाराष्ट्र)। वैजयंती वरदराज बंग ने अपने पहले ही प्रयास में सीए की परीक्षा उत्तीर्ण कर प्रशंसनीय कार्य किया है। वे अपनी सफलता का श्रेय अपने दादाजी श्री रंगनाथ जी बंग और दादी श्रीमती पुष्पा देवी बंग को देती हैं ।

शशांक बने सीए

वाराणसी। समाज की प्रतिभा शशांक चाण्डक सी ए परीक्षा उत्तीर्ण कर चार्टर्ड अकाउंटेंट बने। शशांक श्रीमती इन्दू और संजीव चाण्डक के सुपुत्र हैं।

अक्षत सीए फाउंडेशन उत्तीर्ण

सूरत (गुजरात)। समाज सदस्य दीपक काबरा के सुपुत्र अक्षत ने आईसीएआई द्वारा आयोजित सीए फाउंडेशन की परीक्षा उत्तीर्ण की।

जय बने सीए

फतहनगर (जिला-उदयपुर राज.)। समाज सदस्य प्रकाश मूंदड़ा के सुपुत्र जय ने आईसीएआई द्वारा आयोजित सीए अंतिम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसमें उन्होंने 214 अंक प्राप्त किये।

अंशिका को 90 प्रतिशत अंक

बरेली। समाज सदस्य रमेश व संगीता परवाल की सुपुत्री अंशिका ने सीबीएसई 12वीं की परीक्षा 90 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की।

हर्ष को 95 प्रतिशत अंक

बरेली। समाज सदस्य विनोद रीता लखोटिया के सुपुत्र हर्ष ने सीबीएसई 12वीं की परीक्षा 95 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की।

जयपुर निवासी वरिष्ठ समाजसेवी ओमप्रकाश गग्गड़ प्रख्यात अंतर्राष्ट्रीय समाजसेवी संस्था लायंस क्लब में एक ऐसा नाम है, जो न सिर्फ स्वयं बल्कि अपने पूरे परिवार के साथ लायंस क्लब के माध्यम से मानवता की सेवा में अपना योगदान दे रहे हैं। अपनी इसी उत्कृष्ट सेवा भावना के कारण श्री गग्गड़ ने वर्ष 2021-2022 में अपने प्रतिद्वंद्वी को दो बार चुनाव में पराजित कर समाजसेवा के क्षेत्र में एक इतिहास बना दिया।

■ टीम SMT

द्वितीय सह प्रान्तपाल बने
लायन ओमप्रकाश गग्गड़

वैसे तो जयपुर निवासी वरिष्ठ समाजसेवी ओमप्रकाश गग्गड़ की पहचान एक व्यवसायी तथा लायंस क्लब अंतर्राष्ट्रीय प्रांत- 3233-ई-1 के सह प्रांतपाल द्वितीय के रूप में है, लेकिन उन्हें जानने वाले उन्हें जीवटता से ओतप्रोत एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में मानते हैं, जिनका जीवन निराशा से दूर सदैव आशा से जगमगाता है। ऐसी सकारात्मक विचारधारा वाले लायन ओम प्रकाश गग्गड़ बड़ी शिद्दत से अपने रिश्तों और दोस्ती को निभाते हैं। खासतौर पर उनकी सबसे बड़ी खूबी है। महिलाओं के प्रति गहन आदर भाव। अत्यन्त संवेदनशील और भावुक होने के कारण आप कई बार वास्तविकता के धरातल पर धराशाही भी किये जाते हैं पर आपका मानव जाति पर विश्वास व भरोसा कहीं कम नहीं होता।

पैतृक रूप से मिली समाजसेवा

लायन्स प्रान्त प्रशासनिक मण्डल के सर्वोच्च पद को दो बार सुशोभित करने वाले पूर्व केबिनेट सचिव, लायन ओम प्रकाश गग्गड़ का जन्म एक छोटे से गाँव रायला (भीलवाड़ा) में हुआ था। कलयुग में सतयुग की मिसाल कायम करने वाले मातृ-पितृ भक्त ओमप्रकाश गग्गड़ अपने पिता स्व. श्री भंवरलाल गग्गड़ और माता श्रीमती कंचनदेवी की सेवा भावना अपनी रग-रग में समाये हैं। धर्मपरायण दादाजी स्व. श्री मोहनलाल जी के सान्निध्य में रहकर धार्मिक संस्कार प्राप्त किये, वहीं उनके कठोर अनुशासन ने मेधावी छात्र के रूप में इन्हें तराशा भी। आप उच्च शिक्षा के लिए सपरिवार जयपुर आ गये और यहीं से स्नातक किया। विद्यालय और कॉलेज काल से ही सक्रिय राजनीति में आपने भाग लिया। कई बड़े समकालीन राजनेताओं से आज भी आपके घनिष्ठ सम्बन्ध है। राजनीति में भी उनका व्यवहार सदा समाजसेवी की तरह ही रहा। व्यावसायिक रूप से आप केमिकल व्यवसाय से सम्बद्ध रहे हैं।

लायंस को समर्पित पूरा परिवार

श्री गग्गड़ अपनी तमाम व्यस्तता के बावजूद न सिर्फ स्वयं ही अन्तर्राष्ट्रीय समाजसेवी संस्था लायंस के माध्यम से समाजसेवा में अपना योगदान दे रहे हैं, बल्कि पूरे परिवार को भी सदैव प्रेरित करते रहे हैं। लायंस क्लब्स अंतर्राष्ट्रीय के प्रान्त के उच्चतम पद के लिए 2021-2022 के चुनाव में अपने प्रतिद्वंदी को दो बार हरा कर विजय हासिल की। इतना कठिन और मुश्किल चुनाव प्रान्त 3233-इ-1 के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ होगा, जहां जीते हुए उम्मीदवार को दोबारा चुनाव जीतना पड़ा हो। पर आपने ये चुनाव जीत कर यह साबित कर दिया कि न सिर्फ जनमत बल्कि अति विशिष्ट पूर्व प्रांतपालो ने भी आपकी काबिलियत और सेवा कार्यों के प्रति जूनून को देखते हुए भरपूर साथ दिया। उल्लेखनीय है कि न्यायालयीन प्रकरण के कारण दुबारा उन्हें चुनाव लड़ना पड़ा था और इसमें भी वे दोबारा विजयी हुए। अभी आप सह प्रांतपाल द्वितीय के रूप में लायंस क्लब्स इंटरनेशनल में पदासीन हैं। लायंस डिस्ट्रिक्ट 3233-इ-1 जो कि आधा राजस्थान व आधा मध्य प्रदेश में आता है। इस डिस्ट्रिक्ट के 65 सालों के इतिहास में यह तीसरी बार है, जब किसी माहेश्वरी बंधु को यह अवसर मिला। आपकी धर्मपत्नी लायन सरला अत्यन्त सरल, धर्मपरायण और सेवा भावना में लीन अपने कर्तव्यों का पूर्ण निष्ठा से पालन करती है। आपका आज्ञाकारी पुत्र लायन श्रीहान माहेश्वरी एम.बी.ए. की शिक्षा के पश्चात् आपके केमिकल के व्यापार में हाथ बँटाते हैं। आपकी मेधावी पुत्री लायन खुशबू माहेश्वरी सी.ए. हैं। आपके छोटे सुपुत्र लायन शुभम माहेश्वरी जयपुर में वकालत की प्रैक्टिस कर रहे हैं।

बुलढाणा अर्बन कोऑपरेटिव क्रेडिट सोसायटी, वास्तव में सहकारिता के क्षेत्र में इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर ही अंकित रहेगी। कारण है इसकी विशिष्ट विकास यात्रा। 35वर्ष पूर्व मात्र 12 हजार रूपये की अंशपूंजी से इसके संस्थापक राधेश्याम चांडक के प्रयासों से प्रारम्भ यह संस्था वर्तमान में 10 हजार करोड़ से ज्यादा की जमा राशि वाली एक अत्यंत वृहद सहकारी संस्था बन चुकी है। यह धरणा किसी चमत्कार से कम नहीं है।

35 वर्ष की अल्पावधि में बुलडाणा अर्बन का डिपॉजिट 10000 करोड़ पार

जब भी देश के सहकारिता आंदोलन का इतिहास लिखा जाऐगा तो उसमें बुलढाणा निवासी भाई जी श्री राधेश्याम चांडक का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। कारण है उनके दिमाग व मन की कोमल भावनाओं की सोच की उपज ''बुलढाणा अर्बन को-ऑपरेटिव क्रेडिट सोसायटी''। इसकी शुरुआत तो एक छोटे से पौधे के रूप में हुई थी लेकिन वर्तमान में यह संस्था न सिर्फ देश बल्कि सम्पूर्ण एशिया की सबसे बड़ी सहकारी संस्था बन चुकी है। यदि 35 वर्ष पूर्व के वर्ष 1986 के दृश्य को देखा जाऐ तो श्री चांडक ने जब लोगों को साहूकारों के चंगुल से निकालने के लिये सहकारी संस्था की स्थापना की कल्पना की तो अधिकांश परिचितों ने इसे घाटे का काम बताकर हतोत्साहित ही किया। फिर भी वे रूके नहीं। अपने मित्रों के सहयोग से मात्र 72 सदस्य तथा 12 हजार रुपये की अंशपूंजी से उन्होंने इसकी शुरूआत कर ही डाली।

ऐसे चली संस्था की विकास यात्रा

भाईजी के स्वयं के जीवन की शुरुआत आर्थिक परेशानियों से हुई थी। अतः उन्होंने आमव्यक्ति की तकलीफ को अत्यंत निकट से देखा। आम व्यक्ति के विकास के लिये सहकारिता के महत्व को समझ श्री चांडक ने इस आंदोलन का शेष महाराष्ट्र में नेतृत्व करने की ठान ली और जून 1986 में बुलढाणा अर्बन को-ऑपरेटिव क्रेडिट सोसायटी की स्थापना बुलढाणा में की। वैसे तो उनसे पूर्व भी कई लोगों ने सहकारिता आंदोलन की बागडोर संभाली लेकिन सभी असफल हो गये। अतः उनके इस प्रयास को भी लोगों ने दुस्साहस नाम ही दिया। अपनी लोकप्रियता के कारण लोगों के बीच भाईजी के नाम से जाने-जाने वाले श्री चांडक ने लोगों के विश्वास को अपना आधार बनाया और कार्य के प्रति समर्पण, योग्यता व अनुशासन को शक्ति बनाकर अपने प्रयासों को प्रारंभ कर दिया। उनकी तीक्ष्ण बुद्धि, भावनात्मक जनसंपर्क व मेहनत पर विश्वास ने उन्हें सफलता के मार्ग पर ऐसा अग्रसर किया कि उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। एक बीज रूप में प्रारंभ ''बुलढाणा अर्बन को-ऑपरेटिव सोसायटी'' धीरे-धीरे एक वृहद वटवृक्ष बनती चली गई। संस्था की सेवा का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उसने ऐसे लोगों की भी ऋण देकर आर्थिक मदद दी है, जिनका कोई मददगार नहीं होता। यही कारण है कि अपने इन योगदानों से श्री चांडक की स्थिति ठीक वैसी बन गई कि ''जिसका कोई नहीं उसके भाईजी हैं।''

वर्तमान में संस्था बनी सेवा का वटवृक्ष

35 वर्ष पूर्व मात्र 12 हजार रुपये से प्रारम्भ इस संस्था ने वर्तमान में अपनी 35वीं वर्षगांठ मनाने के साथ ही 10 हजार करोड़ रुपये की जमा राशि का कीर्तिमान स्थापित किया है। इस बैंक ने सुलभ कर्ज योजना, आरटीजीएस सुविधा, एनईएफटी, तिरुपति बालाजी में भक्त निवास, शिर्डी में भक्त निवास, जैसी सुविधा की सौगात आदि अपने ग्राहकों को दी है। बैंक के संस्थापक अध्यक्ष राधेश्याम चांडक व संस्था के चीफ डायरेक्टर डॉ. सुकेश झंवर के साथ ही बैंक के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के अथक प्रयास से 465 शाखा, 676 गोदाम, 7 लाख 56 हजार सभासद, 7275 करोड़ का कर्ज तथा सोने के ऊपर 2100 करोड़ का कर्ज प्रदान किया है।

सेवा के वृहद आयाम

अपने देश में हर साल साधारणतः 38 हजार करोड़ रुपये मूल्य का धान और 26 हजार करोड़ रुपये मूल्य की सब्जियां-फल खराब हो जाते हैं। इसका एक कारण है कि ठीक तरह से भंडारण व्यवस्था उपलब्ध नहीं है। इसके लिये भाईजी ने 1990 से प्रयत्नपूर्वक गोदामों को बनवाना प्रारंभ किया। आज बुलडाणा अर्बन गोदामों की संख्या 627 है, जिनके भंडारण की क्षमता 903785 मे. टन है। इन गोदामों का लाभ कृषक और व्यापारी सभी ले रहे हैं। किसान अपनी कृषि उपज गिरवी रखकर ऋण ले सकते हैं, इसके लिये कम कीमत पर माल विक्रय की जल्दी की भी उन्हें आवश्यकता नहीं रहती। आज राज्य निगम के पास में बुलडाना अर्बन के गोदाम हैं और यह संख्या बढ़ेगी। इस उपक्रम में भाईजी को लोग 'वेयर हाउस मैन' के नाम से जानने लगे हैं। ग्रामीण क्षेत्र में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल, हॉस्पिटल, एम्बुलेंस शववाहन, शुद्ध पीने का पानी, एटीएम जैसे उपक्रम बुलडाणा अर्बन के माध्यम से जनता तक पहुंचाए जा रहे हैं।

मोहश्वरी परिवार की बेटियाँ अपनी प्रतिभा के मामले में कभी पीछे नहीं रहीं, यह यूपीएससी की सिविल सेवा परीक्षा के घोषित परिणाम ने फिर सिद्ध कर दिखाया। इसमें अलीराजपुर (म.प्र.) की बेटी राधिका गुप्ता ने 18वीं रेंक के साथ आईएएस हेतु अंतिम रूप से चयनित होकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा ही दिया।

■ टीम SMT

UPSC परीक्षा में 18 वीं रेंक के साथ फहराया परचम

राधिका बाहेती (गुप्ता)

गत दिनों संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा का बहुप्रतिक्षित परिणाम घोषित हुआ। इसकी घोषित मैरिट लिस्ट की जानकारी जब समाज में पहुँची तो खुशी की लहर फैल गई। समाज के कई संगठन व संस्थाऐं गत कुछ वर्षों से यह कोशिश कर रहे हैं कि माहेश्वरी परिवार के युवक युवती अधिक से अधिक संख्या प्रशासनिक सेवा में जाऐं। इस परिणाम ने यह सिद्ध कर दिखाया कि सही मार्गदर्शन मिले तो समाज में प्रतिभा की कमी नहीं है। इस परीक्षा के अंतिम परिणाम में अजीराजपुर की बेटी राधिका गुप्ता (बाहेती) ने 18वीं रेंक के साथ आईएएस हेतु चयनित होने में सफलता प्राप्त की।

व्यवसायी परिवार में लिया जन्म

राधिका का जन्म अलीराजपुर के किराना व्यवसायी पिता प्रहलाद व गृहणी माता चंदा गुप्ता की सुपुत्री के रूप में हुआ। परिवार परम्परागत रूप से व्यवसायी था, लेकिन राधिका का रूझान पढ़ाई के प्रति विशेष रूप से रहा। इसी का नतीजा रहा कि अलीराजपुर जैसे आदिवासी क्षेत्र में अपनी स्कूली पढ़ाई के दौरान भी राधिका हमेशा अव्वल ही रही। स्कूली शिक्षा के पश्चात इंदौर के एक प्रतिष्ठित कॉलेज से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बी.टेक. किया। इसके बाद प्रतिष्ठित कम्पनी होंडा में इंजीनियर के रूप में सेवा दी लेकिन इसी बीच उनके मन में प्रशासनिक सेवा का सपना इस तरह उमड़ने लगा कि जीवन की दिशा ही बदल दी।

ऐसे बढ़े सफलता की ओर कदम

कहते है 'ना जहां चाह है वहां राह है!' ठीक इसी तरह उस समय महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा प्रशासनिक सेवा मार्गदर्शन समिति के सहयोग से होशंगाबाद हरदा जिला माहेश्वरी सभा द्वारा पिपरिया में आयोजित प्रशासनिक सेवा मार्गदर्शन शिविर मे पधारे राधिका के मामाजी धीरज मूंदडा के सुझाव पर उन्होने समिति प्रमुख किशनप्रसाद दरक से संपर्क किया। दरकजी ने न केवल उसे यथोचित मार्गदर्शन किया बल्कि उसे पूरा करने के लिये दिल्ली में जयचंदलाल करवा माहेश्वरी होस्टल मे निवास की व्यवस्था के साथ ही समय समय पर प्रोत्साहित भी किया।

असफलता से हार न मानी

राधिका बिटिया ने मेहनत एवं लगन से गत सत्र में प्रथम बार मे ही प्रिलिम व फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण कर ली; किन्तु इंटरव्यू मे प्रतीक्षा सूची मे रहना पड़ा। प्रतीक्षा सूची से भारतीय रेल कार्मिक सेवा मे (फर्स्ट क्लास अफसर) चयन हो गया। लेकिन उन्होंने अपने प्रयास जारी रखे। अपने लक्ष्य की प्राप्ति लिए ट्रैनिंग करते हुए द्वितीय प्रयास मे पुनः प्रिलिम, फाइनल और इंटरव्यू के बाद केंद्रीय लोकसेवा आयोग (यूपीएससी) द्वारा इस बार घोषित अंतिम परिणामों में अखिल भारतीय स्तर पर 18 वी रैंक प्राप्त कर परिवार एवं समाज को गौरवांवित किया है।

जीवन का लक्ष्य बनाऐं- राधिका

अपनी इस सफलता से उत्साहित राधिका अपनी इस सफलता को माता-पिता के साथ ही दादीजी श्रीमती मनोरमा गुप्ता के आशीर्वाद प्रोत्साहन का परिणाम मानती है। उसके साथ ही वे इसका श्रेय समाज द्वारा संचालित योजनाओं को देते हुए कहती हैं कि इसमें किशनप्रसादजी दरक, निलेश करवा नई दिल्ली, ललितजी माहेश्वरी तथा गौरीशंकर गुप्ता का विशेष सहयोग रहा। श्री गुप्ता ने मुझे मॉक इंटरव्यूह द्वारा साक्षात्कार की तैयारी करवाई, जिससे मुझमें विशेष आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ। समाज के युवाओं को संदेश देती हुई वे कहती हैं कि जीवन में कुछ भी असंभव नहीं, बस हम जो करना चाहते हैं, उसके लिये लक्ष्य बनाना जरूरी है। महिलाओं को तो सिविल सेवा के क्षेत्र में विशेष रूप से आगे आना ही चाहिये।

IS:1786
CM/L - 6943589

GBR TMT
THE STRENGTH WITHIN
www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality
MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

आमतौर पर लोगों की सोच है कि समाजसेवा व उद्यम दो विपरीत किनारे हैं। लेकिन मोदीनगर गाजियाबाद निवासी वरिष्ठ समाजसेवी विनोद कुमार माहेश्वरी ने दोनों का संतुलन स्थापित कर यह सिद्ध कर दिखाया कि सब कुछ सम्भव है, बस मन में कुछ करने का जज्बा चाहिये।

■ टीम SMT

समाजसेवी ''उद्यमी''
विनोद माहेश्वरी

गाजियाबाद निवासी बी.ई. सिविल इंजीनियरिंग तक शिक्षित 75वर्षीय वरिष्ठ विनोदकुमार माहेश्वरी की पहचान जितनी एक सफल कृषि विशेषज्ञ तथा उद्यमी के रूप में हैं, उससे कम समाजसेवी के रूप में भी नहीं है। समाज संगठन अंतर्गत श्री माहेश्वरी वर्ष 2001-07 तक पश्चिमी उ.प्र. माहेश्वरी सभा के कार्यसमिति सदस्य तथा अध्यक्ष भी रहे हैं। वर्ष 2013-16 तक अ.भा. माहेश्वरी महासभा के उत्तरांचल उपाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवा दे चुके हैं। वर्तमान में उम्र के इस पड़ाव पर भी वर्ष 2016 से सतत रूप से अ.भा. माहेश्वरी महासभा के कार्य-समिति सदस्य के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं।

पैतृक रूप से मिली सेवा भावना

श्री माहेश्वरी का जन्म 23 फरवरी 1946 को मोदीनगर के ख्यात कृषि विशेषज्ञ स्व. श्री आनंद स्वरूप माहेश्वरी के यहां हुआ था। बचपन से ही समाजसेवा पारिवारिक संस्कारों के रूप में ही मिली। बी.ई. सिविल इंजीनियरिंग तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी आपने अपने पैतृक व्यवसाय को ही चरमोत्कर्ष की ओर बढ़ाते हुए उद्योग जगत में भी कदम रख दिया। राजनीतिक रूप से श्री माहेश्वरी का जुड़ाव कांग्रेस (ई) से रहा है। आप 10 वर्ष तक जिला कांग्रेस कमेटी उपाध्यक्ष तथा वर्ष 1985-88 तक भोजपुर ब्लाक प्रमुख रहे। राजनीति में भी आपकी पहचान एक समाजसेवी की तरह ही रही।

शिक्षा दान को भी बनाया अभियान

श्री माहेश्वरी ने उत्कृष्ट शिक्षा को जन-जन तक पहुँचाने के लिये भी एक अभियान सा प्रारम्भ कर दिया। इसके अंतर्गत प्रतिष्ठित तुलसीराम माहेश्वरी पब्लिक स्कूल से वर्ष 1975, तुलसीराम मोहश्वरी पी.बी.ए.एस. इन्टर कॉलेज से वर्ष 1988 तथा तुलसीराम माहेश्वरी पी.बी.ए.एस. गर्ल्स इन्टरकॉलेज से वर्ष 1985 से सम्बद्ध होकर सतत रूप से अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं। पश्चिम उ.प्र. माहेश्वरी सभा को तीन सत्रों वर्ष 1999-2003, वर्ष 2006-2009 तथा 2009 - 2013 तक अध्यक्ष के रूप में अपना नेतृत्व प्रदान कर चुके हैं। इसके साथ ही समाज के प्रतिष्ठित जाजू ट्रस्ट पश्चिम उ.प्र. के संयोजक भी हैं।

सेवा के वृहद आयाम

10 वर्षों में गाजियाबाद जिला सहकारी बैंक से सतत रूप से संचालक के रूप में सम्बद्ध रहते हुए वर्ष 1987 से 1988 तक इसके अध्यक्ष भी रहे। गाजियाबाद जिला नागरिक परिषद व टेलीफोन सलाहकार समिति सदस्य के साथ ही तहसील की लीगल सेल के 5 वर्षों तक नामित सदस्य भी रहे। वर्ष 1992-1993 तक रोटरी क्लब ऑफ मोदीनगर के अध्यक्ष रहें। इस दौरान रोटरी क्लब का मुख्य इवेन्ट ''रायला'' कराया। वर्ष 1994-1995 में मोदीनगर मे लायन्स क्लब मोदीनगर सेंट्रल की स्थापना की तथा उसके चार्टेड अध्यक्ष रहे। वर्ष 1999-2000 तक लायन्स क्लब इन्टरनेशनल एसोसिएशन के रिजनल-कोआर्डिनर तथा वर्ष 1997-18 तक जोन चेयरपर्सन रहे। नेताजी सुभाष स्मारक समिति मोदीनगर के वर्ष 1975-88 तक अध्यक्ष रहे हैं।

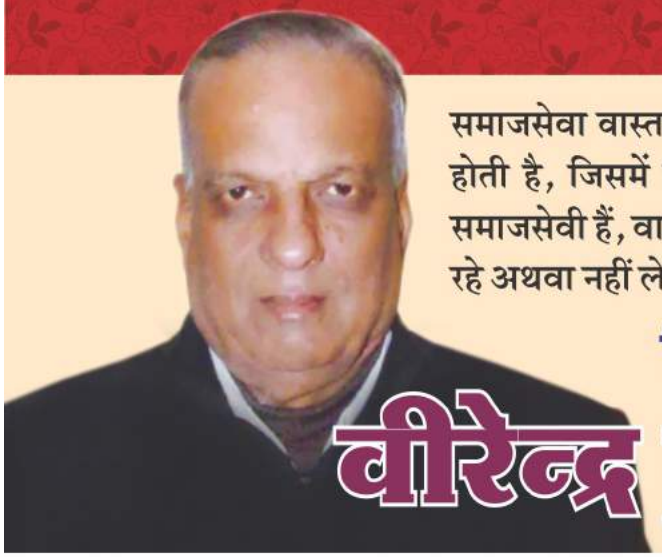

समाजसेवा वास्तव में समाज व मानवता के लिये कुछ करने की वह भावना होती है, जिसमें पद की कामना तक सामान्यतः नहीं होती। ऐसे ही वरिष्ठ समाजसेवी हैं, वाराणसी निवासी 78 वर्षीय वीरेंद्र कुमार भुरारिया, जो पद पर रहे अथवा नहीं लेकिन उनकी सेवा भावना कमजोर नहीं हुई।

■ टीम SMT

नि:स्वार्थ वरिष्ठ समाज सेवी

वीरेन्द्र कुमार भुरारिया

पूर्वी उत्तरप्रदेश माहेश्वरी सभा के इतिहास में यदि एक व्यक्ति के योगदान की चर्चा न की जाए तो प्रदेश सभा की स्थापना और प्रगति का शिलालेख अपूर्ण रह जाएगा। ये वरिष्ठ समाजसेवी हैं, वाराणसी निवासी वीरेंद्र कुमार भुरारिया। प्रदेश का यह 'कार्यकर्ता' केवल एक बार प्रदेश सभा के पद पर आया महामंत्री (प्रदेशमंत्री) के रूप में परंतु प्रदेश सभा की स्थापना की पूर्व पीठिका में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए वे आज तक स्थायी रूप से समान सक्रियता के साथ प्रदेश संगठन के लिए समर्पित हैं। प्रत्येक सत्र के पदाधिकारियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर वे संलग्न रहते हैं। किसी भी सत्र के पदाधिकारी यह शिकायत नहीं कर सकते कि उन्हें इनका कम सहयोग मिला। यदि पदाधिकारी शिथिल हो जाएं तो ये उनको प्रेरित करते हैं और पूरे उत्साह के साथ उन्हें साथ लेकर आगे बढ़ते हैं। साथी बनाना, फिर उनको साथ लेकर काम करना उनके कार्य करने की शैली है। प्रारम्भिक काल में उन्होंने कई युवाओं को अपने साथ जोड़कर समाज का कार्य करने के लिए एक सेवा-भावी टीम बना ली। इस टीम के सभी लोग उनके नेतृत्व में काम करते रहें और आज भी कर रहे हैं। साथियों को लेकर टीम भावना से काम करने से समाज में उनका महत्व स्थापित हुआ।

संघर्षों से जीवन की शुरूआत

श्री भुरारिया का जन्म 27 अगस्त 1943 को कानपुर में स्व. श्री रामेश्वर दयाल भुरारिया के यहाँ हुआ था। विद्यालय के दसवें पायदान पर पहुँचे ही थे कि पिताजी का निधन हो गया। बाद में श्री भुरारिया व्यावसायिक कारणों से कानपुर से वाराणसी आ गए और यहीं के हो गए। अपनी किशोरावस्था से लेकर युवावस्था तक उन्होंने बहुत संघर्ष किया। इस संघर्षमय जीवन को उन्होंने रो-कर नहीं बल्कि हँसते हुए हिम्मत के साथ जिया। अपने लिए खुद खाना पकाते तो दोस्तों को भी बनाकर खिलाते थे। अपने पुरूषार्थ और कुशाग्र व्यावसायिक दृष्टि से उन्होंने पूर्वांचल के चीनी व्यवसाय जगत में शिखर श्रेणी के लोगों में अपना स्थान बना लिया। वाराणसी आने के बाद से ही वे समाज के स्थानीय संगठन से जुड़ गए और आज इस उम्र में भी पूरी तरह संगठन के प्रति समर्पित भाव से सक्रिय हैं। स्थानीय संगठनों में पद पर रहने की दृष्टि से वे 'माहेश्वरी परिषद' वाराणसी के एक बार मंत्री बने थे, परंतु वाराणसी माहेश्वरी समाज के सभी संगठनों के संचालन में उनका महत्वपूर्ण योगदान जारी है। वाराणसी माहेश्वरी समाज के संगठनो का दस्तावेज भी श्री भुरारिया द्वारा किए गए कार्यो का उल्लेख किए बगैर पूरा नहीं हो सकता। वाराणसी का माहेश्वरी भवन वीरे भैया के उत्साह, लगन, परिश्रम तथा समाज प्रेम का एक जीवन्त उदाहरण है। श्री भुरारिया अ.भा. माहेश्वरी महासभा के 27वें तथा 28वें दोनों सत्र के कार्यसमिति सदस्य रहे हैं। वर्तमान 29वें सत्र में आपको श्री कोठारी बंधु शौर्य स्मृति ट्रस्ट अध्यक्ष मनोनित किया गया है।

संगठन की अद्भुत क्षमता

संगठन की उनमें अद्भुत क्षमता है। संगठन में कैसी भी परिस्थिति पैदा हो जाए उसको हल करने की तकनीक उनके पास है और वे उसका समाधान करके ही दम लेते हैं। यही कारण है कि उन्हें संगठन का संकटमोचक भी माना जाता है। संगठन संचालन में उनकी दूरदर्शी सोच बहुत उपयोगी सिद्ध होती है, जो समय की कसौटी पर खरी उतरती है। संगठन-चिंतन उनकी दैनिक चर्या का अंग है। उनकी सांसों में संगठन बसता है। संगठन में वे सदैव दूसरे के लिए काम करते रहे हैं। प्रदेश सभा की प्रगति का सौपान इस बात का साक्षी है। अपने वरिष्ठ लोगों की आकांक्षा पूरी करने, उनका मान-सम्मान बढ़ाने के लिए वे सदैव प्रगतिशील रहे। स्वयं पद लेने के स्थान पर उन्होंने अपने साथी कार्यकर्ताओं को विभिन्न पदों पर प्रतिष्ठित कराया। अब वे अपने बाद वाली पीढ़ी को आगे बढ़ाने के लिये योगदान कर रहे हैं।

आमतौर पर न सिर्फ बच्चे बल्कि परिवार भी अच्छी शिक्षा के लिये गांव से शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। लेकिन यह स्थिति सीकर (राजस्थान) के छोटे से गांव रैवास में नहीं है। इसका कारण है, वरिष्ठ समाजसेवी महावीर प्रसाद काबरा तथा उनके परिवार का शिक्षा में योगदान जिसने इसे राजस्थान की प्रमुख शिक्षा स्थली ही बना दिया।

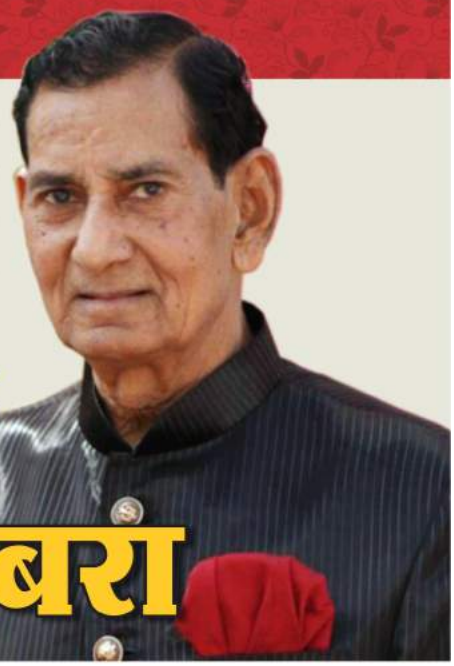

टीम SMT

जन्मभूमि के ''सच्चे लाल''

महावीर प्रसाद काबरा

लगभग 200 वर्ष से राजस्थान के शेखावटी क्षेत्र के सीकर जिले में काबरा परिवार का नाम उनके योगदानों के कारण बहुत प्रतिष्ठित रहा है। रैवासा ग्राम के निवासी स्व. श्री मोहनलाल काबरा और उनकी पत्नी श्रीमती कृष्णा देवी के नाम से उनके सुपुत्रों ने 30 वर्ष पूर्व बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने की भावना से एक विद्यालय का निर्माण किया था। आज यह 'कृष्णा देवी मोहनलाल काबरा राजकीय आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय' राजस्थान के प्रमुख विद्यालयों में से एक बन चुका है। इस विद्यालय के विकास में प्रमुख आर्थिक योगदान देने वाले है, महावीर प्रसाद काबरा, जो श्री मोहनलाल काबरा के चौथे पुत्र हैं। स्व. श्री मोहनलाल काबरा श्री छितरमल काबरा के इकलौते पोते थे। पुराने समय में रैवासा को दातार सेठ 'श्री छितरमल जी काबरा का गाँव' भी कहा जाता था, क्योंकि वे वहाँ के महादानी माने जाते थे। कुछ वैसे ही दानशील हैं उनके प्रपोत्र महावीर प्रसाद काबरा भी।

परिवार भी सेवा कार्यों में सहभागी

5 अप्रेल 1939 में रैवासा में जन्मे महावीर प्रसाद काबरा, एक सीधे सरल व्यक्तित्व के धनी हैं। बचपन से ही ये आत्म निर्भर, अच्छे तैराक और योग व ध्यान में कुशल रहे हैं। रैवासा और सीकर के विद्यालयों में पढ़ाई कर, उन्होंने कलकत्ता से बीकॉम की डिग्री प्राप्त की। उनका विवाह राजगढ़ के प्रतिष्ठित समाजसेवी श्री रामकुमार मोहता की तीसरी बेटी, 'संतोष कुमारी मोहता' से 1961 में हुआ। शादी के बाद ये दिल्ली शहर में ही रहने लगे। इनकी दो विवाहित बेटियां सीमा-संजय लखोटिया M. D. Sona Farms & Ivory Destinations तथा सारिका-आशीष बाहेती M. D. Vectus Industries Limited तथा सुपुत्र आशीष काबरा शेयर व्यवसायी है। सभी अपनी तमाम व्यावसायिक व्यस्तताओं के बावजूद तन-मन-धन से सेवा गतिविधियों में भी अपने पारिवारिक संस्कारों के अनुरूप योगदान दे रहे हैं।

सेवा गतिविधियों में भामाशाह

श्री काबरा असम के Tea Estate में Auditor की नौकरी से शुरुआत कर एक व्यवसायी बने। 82 वर्ष के ऊर्जावान, मिलनसार और दयावान स्वभाव वाले श्री काबरा, अपने परिवारजन, दोस्तों व पड़ोसियों की खातिर हमेशा तत्पर व सहयोगी रहे हैं। ये जान-अनजान लोगों के प्रति भी सद्भावना रखते हैं और जब भी, जैसे भी जो सके, मदद करने की कोशिश करते हैं। आज भी हर साल रेवासा धाम, सीकर जाते हैं और 'कृष्णा देवी मोहनलाल काबरा राजकीय आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय', 'जानकीनाथ जी के मंदिर' और अपने पुश्तैनी घर के सामने स्थित, काबरा परिवार द्वारा बनवाये 'नरसिंह भगवान के मंदिर' में ज़रूरत अनुसार आर्थिक योगदान देते हैं। हर माह वहाँ की 'गौशाला' में दान देना उनकी कई वर्षों की प्रथा जैसा है। अपने इस व्यक्तित्व के कारण से रैवासा में उन्हें 'भामाशाह' से नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। हाल ही में एक प्रख्यात वक्ता ने श्री काबरा के लिए अपने वक्तव्य में कहा था कि 'अच्छे इंसान तो कई होते हैं, मगर असली इज़्ज़त इन जैसे स्वार्थरहित दानवीर की होती है, जो शहर में रहकर भी अपनी जन्मभूमि से जुड़े रहते हैं और वहाँ के वासियों का ख्याल रखते हैं।''

पर्यावरण संरक्षण तथा अंतिम यात्रा में आने वाली परेशानी से सम्बंधित परिवार को बचाने के लिये प्रारम्भ ''स्वर्गारोहण सीढ़ी'' प्रदान करने का पुणे निवासी वरिष्ठ 71वर्षीय मुरलीधर सारडा का प्रयास एक अभियान बन गया, जिसमें अब 200 सीढ़ी प्रदान करने का लक्ष्य बन गया है। श्री सारडा का यह योगदान कोरोनाकाल में भी सतत जारी रहा जिसके लिये उन्हें ''कोरोना योद्धा'' के सम्मान से भी नवाजा जा चुका है।

■ टीम SMT

कोरोना काल में भी बने कोरोना योद्धा

मुरलीधर सारडा

वरिष्ठ समाजसेवी के रूप में पहचान रखने वाले पुणे निवासी 71वर्षीय मुरलीधर सारडा ने वर्ष 2019 में पहली स्वर्गारोहण सीढ़ी निगड़ी स्थित श्मशान भूमि में अपने बड़े भाई स्व. श्री द्वारकादास सारड़ा के पुण्य स्मरण में समर्पित की। इनकी कुछ नया करने की सोच और जोश को पुणे जिल्हा माहेश्वरी प्रगति मंडल और महेश सांस्कृतिक मंडल पिंपरी-चिंचवड़ ने बढ़ावा दिया। धीरे-धीरे यह अभियान बन गया। वर्तमान में श्री सारडा के मार्गदर्शन में 30 स्वर्गारोहण सीढ़ी का लोकार्पण पूना, तलेगांव तथा जालना में अलग अलग मुक्तिधाम में किया गया और 20 सीढ़ी का लोकार्पण सितम्बर के अंत तक इंदौर के अन्नपूर्णा क्षेत्र माहेश्वरी समाज मंडल द्वारा इंदौर स्थित अलग-अलग मुक्तिधाम में श्री सारडा के मार्गदर्शन में किया जा रहा है।

कोरोना काल में सहयोगी बना अभियान

स्वर्गारोहण सीढ़ी की उपयोगिता सर्वाधिक कोरोना काल में सभी समाज बंधुओं को समझ आयी। किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद बांस की सीढ़ी बनाने के लिए एक अनुभवी व्यक्ति की आवश्यकता होती है, लेकिन कोरोना काल में वरिष्ठ और अनुभवी लोग अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हो सके। इसे ध्यान में रखते हुए उनके द्वारा स्वर्गारोहण सीढ़ी स्टील की बनाई जा रही है और इसकी खासियत यह है कि इसे मोड़ा जा सकता है। इसे दुपहिया वाहन पर भी आसानी से एक अकेला आदमी भी ला-लेजा सकता है और विशेष रूप से, यह पर्यावरणीय हानि को कम करने में भी मदद करती है। साथ ही सीढ़ी के सामान पर होने वाला 700 रुपये का खर्च कुछ परिवारों का कम करके, उनको आर्थिक हानि से भी बचाती है। उन्हें 2022 के अंत तक 200 सीढ़ी का लक्ष्य पूरा करना है और हर गांव- शहर को इस कार्य से जोड़ना है। इस योगदान के लिये समाज द्वारा श्री सारडा को महेश नवमी पर्व पर ''कोरोना योद्धा'' की उपाधि से भी नवाजा जा चुका है।

बचपन से मिले सेवाभावी संस्कार

श्री सारडा का जन्म 15 नवम्बर 1950 में शिरूर पुणे में श्री किसन सारड़ा व श्रीमती चंद्रभागा सारडा के यहाँ हुआ। दुर्भाग्य से 8 वर्ष पश्चात वर्ष 1958 में ही माँ का देहावसान हो गया। ऐसे में सेठ शोभाचंद बाफना तथा सेठ धाड़ीवाल ने पूरे परिवार को सहारा दिया। आप 6 भाईयों में सबसे छोटे थे। अतः बड़ी भाभी का ही माँ की तरह स्नेह प्राप्त हुआ। फिर जीवन को समाजसेवी धर्मपत्नी श्रीमती रत्नमाला का साथ मिला। बी.कॉम. की पढ़ाई पूर्ण भी नहीं कर पाये थे कि आपको पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण आजीविका की ओर अग्रसर होना पड़ा।

तीन बहनों का स्नेह भी प्राप्त हुआ

वर्ष 1973 में जीजाजी श्री किसन राठी उन्हें काम की तलाश में पुणे लेकर आये तो उनकी कर्मभूमि ही धीरे-धीरे पिंपरी-चिचवड (पुणे) बन गई। वर्तमान में आपके परिवार में दो विवाहित पुत्री वनिता दरगड़ (पुणे) तथा रेशमा जाखेटिया (जलगांव) तथा पुत्र सुशील सारडा का पौत्र-पौत्री, नौती-नातिन आदि से भरापूरा परिवार शामिल है। श्री सारडा पुणे में राठी इंजीनियरिंग तथा टेल्को (टाटा मोटर्स) में वर्ष 2000 तक सेवारत रहकर सेवानिवृत्त हो चुके हैं।

समाजसेवा में सदैव सक्रिय

श्री सारडा वर्ष 1978 से समाज के प्रति समर्पित हो गये। उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर पिंपरी चिंचवड माहेश्वरी समाज की स्थापना की और ये संस्थापक के रूप मे उभर कर सामने आये। इसके साथ ही आप संस्थापक-महेश सांस्कृतिक मंडल पिंपरी चिंचवड, कार्याध्यक्ष-महेश सांस्कृतिक मंडल पिंपरी चिंचवड, सलाहकार-संस्थापक महेश सांस्कृतिक मंडल पिंपरी चिंचवड, कार्यकारणी सदस्य-महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी समाज तथा उपाध्यक्ष-पुणे जिल्हा माहेश्वरी प्रगती मंडल पुणे के रूप में सेवा दे चुके हैं। 1990 में मित्रों सतीश सोमाणी, शिरीष माणुधने, अशोक जाखेटिया आदि के साथ मिलकर सामाजिक उद्देश्य से श्री मंगल केंद्र (बर्तन किरायेपर देने की सुविधा) की नींव रखी। इसमें सभी समाज को सामाजिक कार्य हेतु निःशुल्क बर्तन दिये जाते हैं। इस संस्था को 31 साल पुरे हो चुके है। श्री सारडा की धर्म पत्नी रत्नमाला सारडा का इसमें बहुत बड़ा योगदान है।

नांदेड़ (महाराष्ट्र) में समाज सेवा के क्षेत्रमें वरिष्ठ किशनप्रसाद दरक एक ऐसे नाम हैं, जिन्होंने शिक्षादान को एक महादान का अभियान तक बना डाला। यह उनका योगदान ही है कि उनकी प्रेरणा व सहयोग से बड़ी संख्या में समाज के युवाओं ने प्रशासनिक सेवा तक में बड़ी सफलता हांसिल की।

■ टीम SMT

शिक्षादान के ''महादानी''
किशन प्रसाद दरक

लक्ष्मी एवं सरस्वती पुत्रों के इस समाज में आज भी ऐसे अनेक बालक हैं जिनमें ज्ञान की ललक है किंतु आर्थिक कठिनाइयों के कारण उनके ज्ञानार्जन में बाधाएं आ रही हैं। इस बात को समझ कर नांदेड जिला माहेश्वरी समाज ने श्री हरिकिशनजी बजाज मेमोरियल माहेश्वरी शिक्षण विकास संस्था की स्थापना करने का निर्णय लिया तथा श्री किशनप्रसाद दरक की क्षमताओं को पहचान कर उन्हें इस संस्था के सचिव पद का कार्यभार सौंपा। वर्ष 2008 में स्थापित इस संस्था के माध्यम से अब तक 550 से अधिक युवाओं को रु 77 लाख से अधिक का आर्थिक सहयोग किया जा चुका है। दरकजी की कार्यशैली एवं समर्पण भाव को देखते हुए गत तीन सत्र से सचिव पद का कार्य उन्हीं के पास रखा गया है। अपने पारिवारिक कार्य रूप में आप 1977 से दरक कॉमर्स क्लासेस संस्था चलाते हैं। आपके जेष्ठ पुत्र डॉक्टर रामनारायण अब इस संस्था का कार्य देखते हैं। आपके कनिष्ठ पुत्र भरतकुमार एसबीआई लाइफ कंपनी में सिनियर अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं। आप की धर्मपत्नी गीता देवी का भी सदैव सहयोग प्राप्त हैं।

संस्कारों में मिली समाजसेवा

मूलतः नागौर जिला के अलनियावास निवासी दरकजी का परिवार लगभग 200 वर्ष पूर्व महाराष्ट्र में नांदेड जिला के छोटे से कस्बे आष्टी में पहुंचा। किशन प्रसादजी के पिताजी हीरालालजी सुविख्यात वैद्य होने के साथ ही स्वतंत्रता सेनानी भी थे। तत्कालीन निजाम स्टेट से मुक्ति हेतु हुए संग्राम में उन्होंने बढ़-चढ़कर योगदान दिया था। श्री दरकजी की माताजी सीताबाई स्वयं अशिक्षित थी किंतु उन्हें शिक्षा का महत्व पता था। इस कारण अपने पुत्र को लेकर वह नांदेड शहर में आयी। यहाँ शिक्षा ग्रहण करते हुए महाविद्यालय जीवन में मराठवाड़ा कृषि विद्यापीठ आंदोलन, मराठवाडा विकास आंदोलन, ब्रॉडगेज आंदोलन आदि में सक्रिय रहते हुए दरकजी ने समाज कार्य में भी अपना योगदान देना प्रारंभ किया। वर्ष 1975 में नांदेड़ में पहली माहेश्वरी कंज्यूमर कोऑपरेटिव सोसाइटी की स्थापना हुई और इस संस्था के उपाध्यक्ष पद पर आपका चयन हुआ।

प्रशासनिक सेवा के लिये बने प्रेरणा

मारवाड़ी युवा मंच के सचिव के नाते श्री डोंगरे महाराज की भागवत कथा में सक्रिय सहयोग, समाज से घुंघट प्रथा हटाने हेतु किए गए प्रयासों में योगदान, आदि कार्य नांदेड जिला माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष के नाते किये। माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल पुणे के सिविल सर्विस कमेटी सदस्य तथा महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा प्रशासनिक सेवा समिति प्रमुख के नाते महाराष्ट्र के लगभग सभी जिलों के साथ ही मध्य प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों के माहेश्वरी युवाओं को सिविल सर्विसेस का महत्व समझाकर इस क्षेत्र से जुड़ने का आवाहन करने का कार्य गत 6 वर्षों से सतत रूप से कर रहे हैं। इस कार्य में समाज के अनेक आईएएस, आईपीएस, आईआरएस अधिकारियों का सक्रिय सहयोग मिल रहा है। आज समाज के न केवल युवक अपितु अनेक युवतियां भी सिविल सर्विसेस की परीक्षाओं की तैयारियां कर रही हैं। गत 6 वर्षों के इन प्रयासों से प्रेरणा लेकर आज अनेक माहेश्वरी युवक युवतियां सफलता प्राप्त कर अधिकारिक पद पर विराजमान हो चुके है।

सेवा के वृहद आयाम

समाज सेवा करते समय अनेक परिवारों से संपर्क होता है। तब आर्थिक कठिनाइयों के कारण इन परिवारों को आवश्य औषधोपचार, दैनंदिन जीवन यापन एवं सुख दुख में अनेक परेशानियों से रूबरू होना पड़ रहा है, यह अनुभव श्री दरकजी को काम आया। उनके विचारों से सहमति रखने वाले उनके साथी गोपाललाल लोया, ओमप्रकाश इन्नानी, रामप्रसाद मूंदड़ा, जगदीश बियानी आदि ने समाज के गरीब और जरूरतमंद परिवारों की मदद के लिए नांदेड़ के भामाशाह रामलाल बाहेती की प्रेरणा से ''केशरबाई गणेशलाल बाहेती चैरिटेबल ट्रस्ट'' की स्थापना की। दरकजी की सिद्धहस्त लेखन शैली, कानूनी जानकारी एवं संस्था संचालन का दीर्घ अनुभव देखते हुए इस संस्था का सचिव पद भी उन्हें ही सौंपा गया। विविध संस्थाओं के कार्य के साथ ही आप वर्तमान में महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा प्रशासनिक सेवा समिति के प्रमुख, अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के कार्यकारी मंडल सदस्य, ओंकारनाथ मालपानी महाराष्ट्र महेश सेवा निधि के न्यासी के रूप में भी सेवारत हैं।

उज्जैन (म.प्र.) में 75वर्षीय ओ.पी. तोतला की पहचान न सिर्फ सबसे वरिष्ठ सी.ए. के रूप में है बल्कि एक ऐसे सी.ए. के रूप में भी हैं, जिन्होंने न सिर्फ 5 कार्यालयों तक अपनी फर्म का विस्तार किया बल्कि राष्ट्र स्तर पर व्यवसाय करके उज्जैन को इस व्यवसाय में एक विशेष प्रतिष्ठा भी दिलवाई।

■ टीम SMT

उज्जैन के सबसे वरिष्ठ सी.ए.

ओ.पी. तोतला

उज्जैन निवासी 75वर्षीय सी.ए. ओ.पी. तोतला उम्र के इस पड़ाव पर भी न सिर्फ उज्जैन बल्कि इंदौर आदि क्षेत्रों में स्थित अपनी फर्म के समस्त 5 कार्यालयों का नेतृत्व कर रहे हैं। उन्हें शहर में गत 51 वर्ष से व्यवसायरत रहने का गौरव प्राप्त है। वर्तमान में आपके इंदौर कार्यालय को आपके पुत्र राजेंद्र तोतला तथा अनुज जी.आर. तोतला सम्भाल रहे हैं। उम्र के इस पड़ाव पर भी गत 20 वर्षों से चला आ रहा पौधारोपण का उनका अभियान भी सतत जारी है जिसमें वे प्रतिवर्ष स्वयं के खर्च से पौधारोपण करवाते हैं।

पुस्तकों ने दी प्रेरणा

श्री तोतला का जन्म 30 जुलाई 1946 को चित्तौड़गढ़ (राज.) के छोटे से गाँव कन्नौज में स्व. श्री ओंकारलाल व श्रीमती यशोदाबाई तोतला के यहाँ हुआ था। वर्ष 1966 में युनिवर्सिटी राजस्थान से बी.कॉम उत्तीर्ण किया। ग्रेजुएशन के दौरान कुछ, अच्छी जिंदगी बनाने वाली किताबें हाथ लगी जैसे 'हाऊ टू विन फ्रेंड्स' बाई डेलकारनेगी, ''थिंक एण्ड ग्रो रिच'' बाई नेपोलियन हिल आदि जिनके पढ़ने और जीवन में लागू करने से ही मेहनत से जिंदगी बनाने की प्रेरणा मिली। इसी दौरान रुझान होने से वर्ष 1970 में सीए मेरिट में पास किया और बॉम्बे में एक ''ए-क्लास'' सीए फर्म ज्वाइन की। 1970 एवं 1971 तक दो वर्ष उस फर्म के साथ प्रेक्टिस की। उस फर्म के साथ बड़ी-बड़ी कम्पनियों का ऑडिट किया। इससे उनके ज्ञान में बहुत समृद्धि आई।

ऐसे हुआ उज्जैन आगमन

श्री तोतला अपने उज्जैन आने की दिलचस्प कहानी बताते है। उनका कहना है कि वर्ष 1972 के शुरू में मैने उस फर्म की प्रेक्टिस छोड़ पसारी जी के साथ आकर बिनोद मिल में कम्पनी सेक्रेटरी का कार्य किया। श्री पसारी जी एक अच्छे एडमिनिस्ट्रेट थे जो बीमार बिनोद मिल को अच्छी करने अपनी टीम मुंबई से लाए थे जिसमें मैं भी शामिल था। लेकिन वे जरा कच्चे कान के थे इसलिए दो माह बाद ही मुझे काम से निकाल दिया। यहीं से मेरी मुश्किल भरी जिंदगी शुरु हुई। वापस मुंबई जाकर सर्विस के बजाय अपनी स्वयं की प्रेक्टिस करना ही उचित लगा। मैंने सीए अच्छी मेरिट से पास किया था। अतः जबकि मुझे नौकरी तो आराम से मिल जाती। लेकिन मैंने आसान रास्ता न चुनकर सीए प्रेक्टिस करने का निर्णय लिया। सभी जानते हैं कि प्रेक्टिस में केस ऐसे ही नहीं मिल जाते। 5 वर्ष का कम से कम समय लगता है। मैं इनकम टैक्स केसेस के लिये कई क्षेत्रों में गया। तब के समय में 3 जिलों का इनकम टेक्स कार्य उज्जैन में होता था उज्जैन, शाजापुर एवं राजगढ़ जिले का। प्रेक्टिस के लिये मैंने उज्जैन ही चुना, जहां मेरे न कोई रिश्तेदार थे, न कोई दोस्त। लोगों ने सुझाया कि इंदौर प्रेक्टिस करना अच्छा रहेगा, पर मैंने नहीं सुनी।

ऐसे बढ़े सफलता की ओर कदम

उनके लिये यह संघर्ष का समय आसान नहीं था लेकिन ईश्वर कृपा से स्व. श्री मोहनलाल गुप्ता का ऑफिस कार्य के लिये एवं स्व. श्री लक्ष्मण सोनी का घर का आश्रय मिला। इस सहयोग से कठिन और दुख का समय निकलता गया। 1972 में प्रेक्टिस शुरू की थी। 1977 में समझ आया कि प्रेक्टिस बढ़ाना हो तो पास के बड़े शहर इंदौर को नहीं छोड़ सकते, वहां भी अपनी प्रेक्टिस फैलाना चाहिये। अतएव एक ऑफिस अपने लंगोटिया दोस्त, जो वहां नौकरी करते थे, श्री रामनारायण बाहेती, उनके घर पर ही खोला ताकि किराया न लगे। करीब 10 वर्षों बाद बैंकों के ब्रांच आडिट किए, हीरामिल का काम करने को मिला। 1989 में फर्म को स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर का सेंट्रल आडिट मिला। सेंट्रल ऑडिट से फीस भी अच्छी मिलती है और अनुभव भी। इसके पांच वर्ष बाद ऑरिएण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स का सेंट्रल ऑडिट, 2002 में भारतीय स्टेट बैंक का सेंट्रल ऑडिट एवं साथ ही बीएसएनएल का भी सेंट्रल ऑडिट हाथ लगा। फिर उनकी फर्म को म.प्र. में बड़ा स्थान प्राप्त हो गया एवं देश में भी बड़ी रेंक मिलने लगी।

समाजसेवा में भी रहे सक्रिय

श्री तोतला अपनी व्यावसायिक व्यस्तता के बावजूद केवल पैसा कमाने की मशीन नहीं बने बल्कि किसी तरह समय निकालकर समाजसेवा में भी सतत योगदान देते ही रहे। आप माहेश्वरी मेवाड़ा थोक पंचायत उज्जैन के अध्यक्ष रहे। वर्ष 2014-16 तक उज्जैन जिला माहेश्वरी सभा के भी अध्यक्ष रहे। आपने उज्जैन में बन रहे ''महेश धाम'' में भी बड़ा योगदान दिया है। लायंस क्लब उज्जैन मेन के वर्ष 1990 में अध्यक्ष रहे। लायंस क्लब में कई महत्वपूर्ण पदों पर रहते हुए कई विदेश यात्राऐं भी की। व्यवसायिक क्षेत्र में सीए एसोसिएशन के अध्यक्ष भी रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी गीता तोतला भी आपके साथ सामाजिक कार्यो में अग्रणी रहती है। आप वर्तमान में अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन में कार्यसमिति के पद पर अपना दायित्व निभा रही है।

उम्र का उत्तरार्द्ध व्यक्तिगत जिम्मेदारियों से मुक्ति का पड़ाव अवश्य है लेकिन मानव मूल्यों के कर्त्तव्यों से विमुख होने का नहीं। अजमेर निवासी वरिष्ठ दम्पत्ति डॉ. विनोद - विद्या सोमानी ऐसे ही युगल हैं, जो उम्र के उत्तरार्द्ध में तो हैं लेकिन साहित्य व समाजसेवा का कोष वे सतत रूप से परिपूरित कर रहे हैं, अपने मूलभूत कर्त्तव्य की तरह। आईय जानें उनकी कहानी उनकी सुपुत्री उदयपुर निवासी डॉ. श्रद्धा गट्टानी की जुबानी।

टीम SMT

साहित्य व समाज को समर्पित युगल

डॉ. विनोद-विद्या सोमानी

जीवन की वास्तविकता से दो चार होते मेरे पापा ने एक मधुर गीत लिखा था, जिसका मुखड़ा है -

''जीवन तो वैसे ही बंधु कष्टों का इतिहास है।
साहस का अश्व थाम ले, पतझड़ भी मधुमास है।।''

यह उनके जीवन पर शत प्रतिशत खरा उतरता है। मेरे पापा एवं मम्मी माहेश्वरी समाज के घरों में जन्मे, थपेड़े खाते हुए बड़े हुए और अनवरत संघर्ष करते हुए इधर उधर देखे बिना आगे बढ़ते रहे। यह सब कुछ इतना आसान नहीं था पर, प्रभु कृपा से इन दोनों का मिलन अप्रैल 1963 में अजमेर में हुआ। विवाह हुआ और किराये के मकान से जीवन का प्रारंभ हुआ। पिता भारतीय जीवन बीमा निगम में कार्यरत थे और माँ विद्या जन्मी तो अजमेर में लेकिन विवाह के समय जयपुर निवासी स्व. श्रीलक्ष्मीकुमार बिड़ला की सुपुत्री के रूप में पली बड़ी हुई थी। पांच बहनें और एक भाई, संघर्षों भरा जीवन रहा। प्राईवेट अध्ययन किया लेकिन अधिक नहीं पढ़ पाई पर संगीत, चित्रकला, गृहकार्य, सेवा भावना व व्यवहार कुशलता में अव्वल रही। आकर्षण व्यक्तत्व की धनी तो थीं, ही। पिताजी विनोदजी को भा गई और दो अभावों में जूझते साथ हो लिये जीवन के संघर्ष में कंधे से कंधा मिलाकर।

संघर्ष में भी जज्बा व कलम साथ-साथ

पिताजी कवि, कहानीकार, उपन्यासकार रहे। उनका लेखन सर्विस के साथ-साथ चलता रहा। मेट्रिक प्राईवेट, इन्टर प्राईवेट फिर बी.ए., एम.ए. मॉर्निंग क्लासेस से किया। साईकिलों से भागदौड़ की। माँ विद्या ने घर संभाल लिया। सौभाग्य किसी न किसी रूप में साथ नहीं छोड़ता। लगातार सात पुत्रियां पैदा हुई पर ये कभी हीनता से ग्रस्त नहीं हुए। पति-पत्नी में भी कभी इस मुद्दे पर विवाद न हुआ। मिल-जुलकर उनका भविष्य बनाने में लगे रहे। माँ उन्हें पढ़ाती, नहलाती, उनकी ड्रेसें स्वयं सिलती, कापियाँ पुस्तकें लाती, उनके कवर चढ़ाती और ऐसा कभी नहीं लगने दिया कि ये अभावों में जी रहे हैं। एक वेतन में सब कुछ। सायंकाल श्री दाता की भगवान की सामूहिक आरती करना, भजन गाना और बच्चों को सही मार्ग पर चलने का संदेश देना। एक जज्बा था जो सातों बहनों का भविष्य बनाने में लगा था।

पुत्र-पुत्रियों में भेदभाव नहीं

पुत्रियों के बाद एक पुत्र का जन्म हुआ। न उल्लास न हंगामा। जन्मदिन पुत्रियों के नहीं मनाये तो पुत्र का भी नहीं मनाया। एक सा व्यवहार। माँ सस्ती से सस्ती साड़ी पहनती पर कलर संयोग ऐसा कि वे अमीर लगतीं। समाज में पुत्रियों को संगीत, स्वास्थ्य, कविता पाठ, नाटक, पढ़ाई में प्रवीणता प्राप्त होती तो स्कूल में सोमानी सिस्टर्स की धाक रही। सबमें मिले पुरस्कार। माँ के इस त्याग व तपस्या का फल पुत्रियों को मिला। सबका समय पर प्रतिष्ठित परिवारों में विवाह हुआ और समाज में अपना वर्चस्व बनाया। आज सभी बहनें गर्व से समाजसेवा कर रही हैं, यश कमा रही हैं और अपने माता-पिता, सास-ससुर व पतियों का नाम उज्जवल कर रही हैं। मेरे पापा एवं मम्मी ने कम खाया, सस्ता पहना, फिजूलखर्ची नहीं की और समाज में सातों बेटियों को सम्मान दिलाया। भाई श्यामकुमार सोमानी सी.ए. है, पी. एच.डी तथा शिक्षित हैं और प्रसिद्ध अस्पताल के वाईस प्रेसिडेंट हैं। भाभी संजना एम.कॉम., बी.एस.सी., बी.एड है। होनहार भतीजी-भतीजा हैं जो हर क्षेत्र में आगे रहते हैं, वसुंधरा-आशुतोष।

समाजसेवा व लेखन के प्रति समर्पित

मेरी मम्मी ने इन अभावों को झेलते हुए भी समाज में अपना उल्लेखनीय स्थान बनाया। सन् 1972 में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के कोलकाता अधिवेशन में पापा के साथ सक्रियता से भाग लिया। कवि सम्मेलन में भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किये। अनेक बार समाज की महत्वपूर्ण बैठकों की अध्यक्षता की और समाज सुधार व बेटियों के उत्थान, दहेज प्रथा को मिटाने के सुझाव दिये। बड़ी-बड़ी बारातों के विरोध स्वरूप अपनी राय रखी। कई पुस्तकों का प्रकाशन किया व पाठशालाओं व पात्र विद्वानों को निःशुल्क पुस्तकें प्रदान की। दैनिक भास्कर में साढ़े चार वर्षों तक हर सप्ताह राजस्थानी में "धनचकरी" नाम से कॉलम लिखकर समाज में जागृति पैदा की। राजस्थान के कवि संकलन में इन्हें स्थान मिला। हमें भी सदा हर क्षेत्र में प्रोत्साहित करती रहती हैं। आज मैं जो कुछ हूँ मम्मी व पापा के उत्साहवर्धन के परिणामस्वरूप हूँ। पापाजी इस समय 83 वर्ष के हो चुके हैं परंतु, सक्रिय हैं। साहित्य जगत में अनेकों पुरस्कार प्राप्त किये। कोर्स में उनकी लिखी रचनाएं पढ़ाई जा रही हैं। 11वीं तथा एम.ए. में इनकी कृतियाँ हैं। अजमेर के सर्वाधिक और सबसे अधिक श्रेष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाले पापा आकाशवाणी, दूरदर्शन से दर्जनों बार प्रसारित हो चुके हैं। राजस्थानी व हिन्दी में 32 पुस्तकें प्रकाशित हैं और अनवरत लेखन में व्यस्त रहते हैं। महासभा के कार्यकारी मण्डल के सदस्य रह चुके हैं। मेरे पापा एवं मम्मी प्रचार प्रसार से दूर मौन साधना के हामी हैं। समाज में सकारात्मक विचार फैलें, दिखावा न हो, सादगी हो, भाईचारा हो ये इनके भाव रहते हैं। दोनों नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों के प्रचार प्रसार में व्यस्त रहते हैं।

वर्तमान में छोटे से गांव चिखली जिला बुलडाना (महाराष्ट्र) का नाम एक वरिष्ठ सदस्या के कारण 'इंडिया बुक आफ' रिकार्ड में गौरवान्वित हो रहा है। ये सदस्या हैं, 71 वर्षीय कमलाबाई भूतड़ा, जिन्होंने मंत्र लेखन में उम्र के इस पड़ाव पर भी एक कीर्तिमान बना दिया।

■ टीम SMT

'इंडिया बुक ऑफ रेकॉर्ड' में शमिल
कमलाबाई भूतड़ा

71 वर्षीय श्रीमती कमलाबाई शिवरतन भूतड़ा (चिखली) के कार्य को हाल ही में सन 2021 के 'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड' में दर्ज किया गया। इसके साथ ही उन्हें पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया। उन्होंने 71 वर्ष की उम्र में अपने हाथों उनका यह योगदान वास्तव में दोहरा कीर्तिमान है, एक उम्र के कारण और दूसरा मंत्रों की संख्या के कारण 'ओम नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र 18 रजिस्टर में 2 लाख 20 हजार बार लिखकर एक कीर्तिमान स्थापित किया। इसके लिये श्रीमती भूतड़ा को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। श्रीमती भूतड़ा ने 'मनोहर भजनावली' पुस्तक का भी लेखन किया है। भजन, प्रवचन, सत्संग में भी वे विशेष रुचि रखती हैं। मुरलीधर भूतड़ा, राजेश भूतड़ा, डॉ. दिनेश भूतड़ा, दुर्गा टावरी, सुनीता चांडक आदि की आप माताजी हैं।

धार्मिक आयोजनों में सदैव आगे

श्रीमती भूतड़ा धार्मिक कार्यक्रम में हमेशा सबसे आगे रहती हैं। वे बचपन से ही लिखती आ रही हैं और उन्होंने कई मंत्र लिखें हैं। 21 जनवरी 2014 को उन्होंने' ओम नमो भगवते वासुदेवाय नमः' मंत्र लिखना शुरू किया। उन्होंने इस मंत्र को 18 रजिस्टरों में 2 लाख 20 हजार बार लिखा। उसे लिखने में 20 जनवरी, 2020 तक का समय लगा। उन्होंने इस लेख के बारे में इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के प्रबंधन को सूचित किया। उन्होंने सब कुछ ऑनलाइन और दो राजपत्रित अधिकारियों का सर्वेक्षण किया प्रमाण पत्र स्वीकार कर श्रीमती कमलाबाई भूतडा को उनके कार्यों की स्वीकृति स्वरूप यह सम्मान दिया गया। उन्होंने 3 लाख 60 हजार बार 'विट्ठल नाम' मंत्र का जाप भी किया। इसे 20,000 बार लिखा जा चुका है। उनके द्वारा पूर्व में लिखे गए विभिन्न मंत्रों के रजिस्टर मंदिर में दिये गये है। उनके इस लेखन पर कई मंदिरों का जीर्णोद्धार किया गया है।

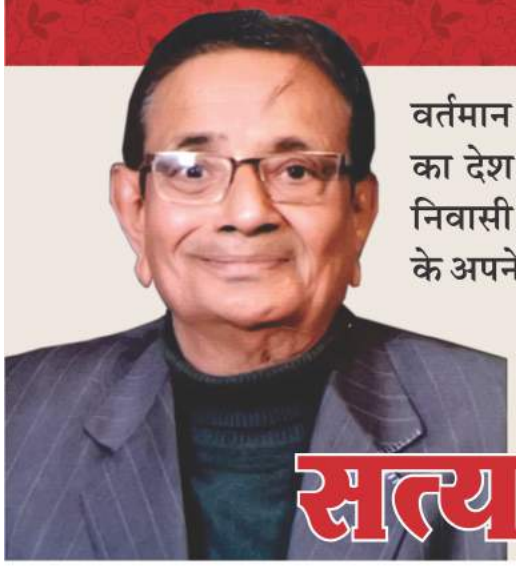

वर्तमान में समाजसेवा और उसमें भी विशेष रूप से नेत्रदान में नीमच (म.प्र.) का देश भर में शीर्ष स्थान है। यह गौरव दिलाने का श्रेय जाता है, डिकेन निवासी वरिष्ठ समाजसेवी सत्यनारायण गगरानी को जिन्होने लायंस अध्यक्ष के अपने कार्यकाल में यह इतिहास बनवाकर ही दम लिया।

■ टीम SMT

नेत्रदान से नीमच को देश में पहचान

सत्यनारायण गगरानी

समाजसेवा के क्षेत्र में लायन सत्यनारायण गगरानी की पहचान एक ऐसे समाजसेवी के रूप में है, जिन्होनें मानवता की सेवा में नीमच को शीर्ष स्थान दिलाने में कोई कमी नही रख छोड़ी। लायंस क्लब के 1983 से 1985 तक आप अध्यक्ष रहे। आपके अध्यक्षीय काल में क्लब की दिन दूनी और रात चौगुनी प्रगति हुई। अपनी टीम के सहयोग से नेत्रदान को अपना मिशन बनाया। आज नेत्रदान में नीमच का नाम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। विगत 30 वर्षों से लायंस प्रांतीय कार्यकारिणी के सदस्य रहे हैं। आप 1985-86 में लायंस उपप्रांतपाल रहे। डिकेन में भी श्री रघुनाथ मंदिर सार्वजनिक ट्रस्ट आपका निजी ट्रस्ट है, इसके आप अध्यक्ष हैं। इस ट्रस्ट के माध्यम से विद्यार्थियों को पुस्तकें, निर्धन छात्रों को यूनिफार्म, स्कालरशिप आदि प्रदान की जाती है। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो श्री गगरानी के पास आशा लेकर आया और निराश लौट गया हो। पिताजी स्व. श्री कन्हैयालाल गगरानी की स्मृति में नेत्र शिविर भी आयोजित किया गया था जिसमें 290 ऑपरेशन हुए थे। नीमच स्थित किलेश्वर मंदिर के सुरम्य स्थल का जो वर्तमान स्वरूप है, उसमें भी श्री गगरानी का बहुमूल्य योगदान है।

कृष्ण की तरह बदला जीवन

5 सितम्बर 1941 को जावद में जन्मे सत्यनारायण गगरानी डिकेन के समृद्ध परिवार में गोद आ गये। इस तरह कृष्ण जैसा परिवर्तन जीवन में आ गया। अपने पिता श्री कन्हैयालाल गगरानी के धार्मिक कार्यों और समाजसेवा के प्रति उनकी विशेष रूचि का गहरा प्रभाव पड़ा। इंटर तक शिक्षा के दौरान बैडमिंटन से आपको विशेष लगाव रहा। तहसील व जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में विजय हासिल की। कृषि के लिये आपने वैज्ञानिक प्रणालियों का प्रश्रय लिया। इसके अतिरिक्त लघु उद्योगों से भी जुड़े रहे हैं। समाजसेवी होने के कारण आपको न्याय पंचायत रतनगढ़ का प्रधान बनाया गया। प्रधान के रूप में आपके द्वारा दिए गए निर्णय इतने न्यायसंगत रहे, कि जो जिला न्यायालय, उच्च न्यायालय तक में यथावत रहे। अच्छा साहित्य पढ़ने की रूचि आपमें शुरू से ही थी जिसकी उत्तरोत्तर प्रगति होती गई। आपने वेद पुराण, उपनिषद, बाइबिल, कुरान आदि सभी धर्मग्रंथों का अध्ययन किया है। आपके पास नीमच और डिकेन में 2500 पुस्तकों का उत्तम संग्रह है। प्रकृति से अपरिमित लगाव होने के कारण कई प्रकार के पेड़-पौधे भी आपके घर में देखने को मिलते हैं। गत तीन वर्षो मे पूरे ग्राम में स्कूल, अस्पताल, कब्रिस्तान, मुक्ति धाम व सार्वजानिक स्थान पर 300 से अधिक पौधे ट्री गार्ड सहित लगाये हैं। पूरे वर्ष उन्हें टेंकर द्वारा पानी पिलवाते है एवं यह वृक्षारोपन प्रकिया सतत् जारी है।

सेवा के वृहद आयाम

यह आपकी दानशीलता का उदाहरण ही है कि अपने पिताजी की पुण्य स्मृति में 56 बीघा तालाब की भूमि का सार्वजनिक हित में दान कर पुण्य कार्य किया। लगभग 14 वर्ष तक आप माहेश्वरी समाज नीमच के अध्यक्ष रहे हैं। जिला माहेश्वरी सभा के भी दो बार अध्यक्ष रहे। वर्ष 2004 में एक सफल सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया। श्री गगरानी 'व्यास बाल मंदिर' शिक्षण समिति के भी 25 वर्ष तक अध्यक्ष रहे। नीमच की बहुत सी संस्थाओं से जुड़े हैं एवं ज्ञान मंदिर व जीवाजीराव छात्रावास आदि कई संस्थाएं आपके सहयोग से संचालित हो रही हैं। अभी गत 5 सितम्बर को अपने जनमदिन पर आपने ग्राम डिकेन को एक नई एम्बुलेंस की सौगात दी। यह बगैर किसी शुल्क के अंचल के मरीजों के लिए उपलब्ध रहेगी। धार्मिक क्षेत्र में आप स्वामीजी श्रीनिवासाचार्यजी महाराज, शाहपुरा पीठाधीश्वर पूज्य रामदयालजी महाराज, पूज्यपाद सत्यमित्रानंदगिरीजी महाराज के प्रवचन आदि आयोजनों से भी सम्बद्ध रहे हैं।

बीकानेर निवासी वरिष्ठ समाज सदस्य गोवर्धनदास बिन्नानी की पहचान वर्तमान में एक ऐसे लेखक के रूप में है, जिनकी लेखनी ने उन्हें सदैव सम्मानित करवाया। यहाँ पर भी उनके लेखन की विशेषता यह है कि वे विनियोजन अर्थात इन्वेस्टमेंट के क्षेत्र में भी अपनी लेखनी से सतत न सिर्फ आमजन अपितु बैंकों तक को मार्गदर्शन करते रहे हैं। ■ टीम SMT

''लेखनी'' से ''लक्ष्मी'' की सेवा

गोवर्धनदास बिन्नानी

बीकानेर समाज के वरिष्ठ गोवर्धनदास बिन्नानी की मूल पहचान वैसे तो बिरला ग्रुप के सेवानिवृत्त लेखापाल के रूप में है लेकिन अब इस पर लेखक की पहचान हावी हो चुकी है। हर कोई उन्हें ऐसे लेखक के रूप में जानता है, जिनकी लेखनी समाज सुधार का आगाज तो करती ही है, साथ ही वे आर्थिक उन्नति के लिये ''अर्थ निवेश'' को लेकर भी मार्गदर्शक की भूमिका निभा रहे हैं, प्रत्यक्ष रूप से तो अप्रत्यक्ष रूप से अपनी लेखनी द्वारा भी। आपको प्यार से 'राजाबाबू' कलकत्ता वाले इस नाम से ज्यादा जानते है। उम्र एक पड़ाव भी हो सकती है, परंतु जब कोई व्यक्ति विशेष उसे सिर्फ एक अंक से ज्यादा कुछ ना मानता हो तो वह सब कुछ वो कर सकता है, जो युवा कर सकते हैं। अतः ऊर्जा के क्षेत्र में श्री बिन्नानी किसी युवा से कम नहीं है।

नौकरी से जीवन की शुरूआत

बीकानेर निवासी श्री बद्रीदास बिन्नानी के यहाँ कोलकाता में जन्मे गोवर्धनदास बिन्नानी ने बी.कॉम. (ऑनर्स) तक शिक्षा ग्रहण की तथा आईबीएम की कोलकाता शाखा से कम्प्युटर कोर्स किया और फिर बिरला ग्रुप कोलकाता से शेयर विभाग के माध्यम से सम्बद्ध हो गये। तत्पश्चात अपनी मेहनत एवं लगन से लेखा विभाग में लेखापाल का पद संभाला। अपने कार्यकाल से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात अपने सारगर्भित अनुभव से आप वित्त विनियोजन परामर्शक के रूप में कार्य कर रहे हैं। आपको 'दि सोसाइटी फॉर कैपिटल मार्केट रिसर्च एंड डेवलपमेंट' दिल्ली, भारत सरकार से मान्यता प्राप्त वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान संगठन द्वारा 'चतुर्थ हाउसहोल्ड सर्वे-2000' के लिए भारतीय स्तर पर द्वितीय पुरस्कार मिला। आपने विगत दो वर्षों में कोरोना जैसी महामारी के विषय पर अपने सकारात्मक एवं जानकारी युक्त लेखन से माहेश्वरी समाज को गौरवान्वित किया है। इस जागरूक लेखन के लिए भी उन्हें 'कोरोना कर्मवीर पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।

सुधार व उन्नति ही लेखन का लक्ष्य

आपने समय-समय पर बैंकिंग से जुड़े मुद्दों पर भी आवाज उठायी है जैसे कि बैंक शुल्क, बैंकिंग सॉफ्टवेयर उन्नतिकरण आदि। इन मुद्दों पर आलेख एवं केन्द्रीय बैंक एवं सरकार को सीधे भी लिखा है। कुछ मुद्दों में सुधार भी हुआ है जबकि कुछ में अभी भी प्रयास जारी है। आपको हिन्दी में साहित्यिक प्रयास एवं रचना सृजन हेतु 'हिन्दी भाषा.कॉम' द्वारा श्रेष्ठ सृजनकर्ता से भी सम्मानित किया है। आपके सामाजिक कार्यों को देखते हुए माहेश्वरी एकता परिवार की चयन समिति ने आपका 'माहेश्वरी एकता गौरव सम्मान' के लिए हाल ही में चयन किया है। आपकी उम्र 75 के लगभग होने के पश्चात भी आप आज के उन्नत संचार माध्यमों से एक रूप हो चुके हैं। अतः अपने प्रबुद्ध विचारों को साझा करने में व्हाट्सएप, ब्लॉग, वेब साइट्स, ईमेल इत्यादि का प्रयोग करके सामाजिक उत्थान के भरसक प्रयास आज भी अनवरत जारी हैं।

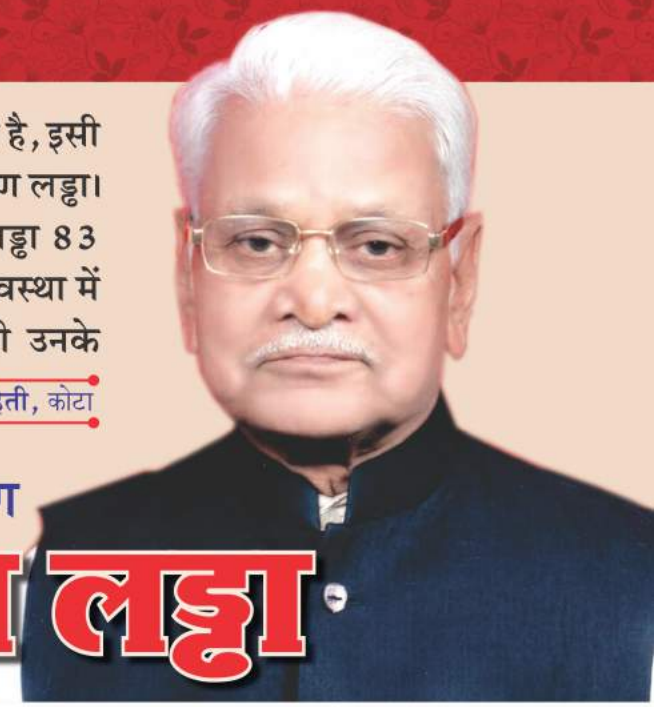

जब मन में जज्बा हो तो उम्र भी किस तरह नतमस्तक होती है, इसी का उदाहरण बने हुए हैं कोटा (राज.) निवासी रामकल्याण लड्ढा। एक सफल उद्यमी के रूप में उद्यम जगत में ख्यात श्री लड्ढा 83 वर्ष की अवस्था में आज भी वैसे ही सक्रिय हैं, जैसे युवावस्था में थे। उद्योग के साथ ही संस्कृति व साहित्य के क्षेत्र भी उनके योगदानों से पोषित हो रहे हैं।

मधु-ललित बाहेती, कोटा

उद्योग, संस्कृति व साहित्य के त्रिकोण

रामकल्याण लड्ढा

बूंदी के प्रतिष्ठित समाज सेवी श्री श्रीलाल लड्ढा के यहाँ 16 अक्टूबर 1938 को जन्मे रामकल्याण लड्ढा बचपन से ही बहुत मेधावी, मेहनती एवं व्यवहारिक रहे। इनका विवाह 21 अप्रैल 1954 को अजमेर निवासी श्री गोपाल बिरला की सुपुत्री श्रीमती कांता के साथ संपन्न हुआ। 21 नवम्बर 1947 को महात्मा गांधी को कोटा में देखने का अवसर मिला। सन् 1952 में छात्र संघ बूंदी के उपाध्यक्ष व सन् 1967 में महेश युवा मण्डल का गठन करके 3 वर्ष अध्यक्ष रहे। इनके कार्यकाल में दशहरे-मेले में प्याऊ का शुभारम्भ किया गया जो अभी तक चालू है।

साहित्य के क्षेत्र में भी योगदान

अपने कार्यकाल में गणपतलाल डांगी का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम कराया तथा त्रिकोण के नाम से विनोद सोमानी 'हंस' की कविताओं का प्रकाशन कराया। सन् 1970 में डिवीजनल चेम्बर ऑफ कॉमर्स के सदस्य बने तथा बाद में उपाध्यक्ष बने। सन् 1978 में राजस्थान व्यापार उद्योग मण्डल की स्थापना कराई जिसमें सचिव, अध्यक्ष तथा राजस्थान की कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष रहते हुए 16 वर्ष कार्य किया। सन् 1978 में सांस्कृतिक संस्था 'साहित्यिक' का गठन किया तथा पाँच वर्ष अध्यक्ष रहे। इसके पश्चात आपके नेतृत्व में चार अखिल भारतीय कवि सम्मेलन भी आयोजित हुए। सन् 1986 एवं 1988 में दो बार माहेश्वरी पंचायत के अध्यक्ष बने। इनके कार्यकाल में अन्नकूट का सामूहिक भोज शुरू हुआ जो अभी तक चल रहा है तथा मंदिर को बड़ा करने के लिये दो मकान खरीदे जो लोगों के शादी-विवाह में काम आते हैं।

कई संगठनों द्वारा वृहद सेवा

सन् 1980 से 1992 तक जनकल्याण सेवा समिति का गठन किया जिसके माध्यम से कोटा में बड़े स्तर पर 7-8 धार्मिक कथाओं का आयोजन कराया। सन् 1986 में कोटा जिला माहेश्वरी समाज के प्रथम जिला अध्यक्ष बने। सन् 1984 से 1992 में हाड़ौती माहेश्वरी सामूहिक विवाह समिति का गठन हुआ, जिसमें कोषाध्यक्ष बने तथा कोटा-बूंदी केकड़ी में सामूहिक विवाह संपन्न कराये जिसमें पूरी सक्रियता से कार्य किया तथा समारोह को सफल बनाया। सन् 1987 से 1993 तक फैडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स, नईदिल्ली के सदस्य एवं कार्यसमिति के सदस्य बने। इसके माध्यम से देश के कई बड़े नेताओं एवं उद्योगपतियों से मिलने का अवसर मिला तथा फिक्की की ओर से ऑल इंडिया दूर-संचार समिति एवं ऑल इण्डिया पर्यटन समिति के सदस्य रहे। आप अखिल भारतीय ऑटो मोबाईल डीलर्स ऐसोसिएशन, दिल्ली के सदस्य रहे। तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा एसोसिएशन के पदाधिकारियों को राष्ट्रपति भवन में चाय पार्टी पर बुलाया, जिसमें शामिल होने का अवसर मिला। नेशनल यूनिटी हर वर्ष नेशनल अवार्ड देश के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता को प्रदान करती है तथा अवार्ड राष्ट्रपति द्वारा

दिये जाते हैं। इस अवार्ड हेतु श्री लड्ढा का नाम देश के प्रमुख 30 सामाजिक कार्यकर्ताओं में था, परंतु राजनीतिक कारणों से इनका नाम एनवक्त पर काटा गया। आप सन् 1991 से 1997 तक भारतीय जनता पार्टी के व्यापार एवं उद्योग प्रकोष्ठ के अध्यक्ष रहे।

कई शीर्ष हस्तियों से रहे सम्बंध

अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा द्वारा राष्ट्रीय अधिवेशन पूना में आयोजित हुआ जिसमें देश के प्रसिद्ध उद्योगपति जी.डी. बिरला से मिलने का अवसर मिला। लालकृष्ण आडवाणी के कोटा आगमन पर निजी निवास पर साथ में भोजन करने का अवसर मिला। अटल बिहारी वाजपेयी से उनके कोटा आगमन पर मुलाकात हुई तथा साथ में अल्पाहार करने का अवसर मिला। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के कोटा आगमन पर उनके साथ व्यापारिक मीटिंग में शामिल होने तथा उनका स्वागत करने का अवसर मिला। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री तथा उपराष्ट्रपति भैरूसिंहजी के साथ व्यक्तिगत सम्बंध रहे। इनके सेवा कार्यों को देखते हुए अखिल भारतीय मारवाडी महासभा का संभागीय अध्यक्ष मनोनीत किया जिसके तत्वावधान में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, लक्ष्मी स्वागत निधि, नीम महोत्सव आदि अभियान चलाया जाता है। बूंदी में मारवाड़ी महासभा की ओर से ग्यारह कन्याओं की माताओं का सम्मान किया तथा उन्हें एक लाख रुपये मियादी अमानत प्रदान की जाती है। श्री लड्ढा के सेवा कार्यों को देखते हुए अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन द्वारा अभिनन्दन किया गया। माहेश्वरी समाज की ओर से तीन बार महेश गौरव की उपाधि से सम्मानित किया गया। इसके अलावा राजस्थान चेम्बर ऑफ कॉमर्स व डिवीजनल चेम्बर ऑफ कॉमर्स, फेडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एण्ड इण्डस्ट्री, ऑटो मोबाईल डीलर्स ऐसोसिएशन जयपुर एवं कोटा द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है।

वर्तमान में भी पूर्ण रूप से सक्रिय

वर्तमान में आप डिवीजनल चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री, कोटा के पिछले 13 वर्षों से अध्यक्ष हैं। राजस्थान चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री, जयपुर के उपाध्यक्ष, भारतीय उद्योग व्यापार मण्डल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री एवं मारवाडी महासभा के संभागीय अध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं। इसके साथ मौजी बाबा लोक कल्याण ट्रस्ट, कोटा के मुख्य ट्रस्टी है। आपने लेखन कार्य भी बहुत प्रमुखता से किया। आपके लिखे विभिन्न आलेख सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। व्यापारिक समस्याओं के निराकरण के लिये प्रेस विज्ञप्तियां बराबर आती रहती हैं तथा संबंधित अधिकारियों से मिलवाकर समस्याऐं दूर कराने की कोशिश में लगे रहते हैं। श्री लड्ढा ने अपने जीवन के 50 वर्ष विभिन्न व्यापारिक संस्थाओं के माध्यम से पूरे किये तथा अभी भी सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में पूर्ण रूप से सक्रिय हैं। आपके परिवार में दो विवाहित पुत्र राजकुमार व नवीन तथा दो विवाहित पुत्री जोधपुर निवासी रेखा कालानी व इचलकरंजी निवासी कृष्णा का पौत्र-पौत्री तथा नाती नातिन आदि का भरा पूरा परिवार शामिल है। सम्पूर्ण परिवार आपके पदचिन्हों पर चलता हुआ अपना योगदान दे रहा है।

गुरू वे होते हैं, जो लोगों को प्रशिक्षण प्रदान कर आगे बढ़ाते हैं। यही कारण है कि उन्हें भगवान से भी पहले पूजा जाता है। मुम्बई निवासी अरूण चितलांग्या एक ऐसे गुरू हैं, जो ''गुरूओं'' को तैयार करते हैं। प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने का उनका ग्रुप ''ट्रेनिंग ट्री'' वर्तमान में आगे बढ़ने वालों के लिये सहायता का दूसरा नाम बन गया है।

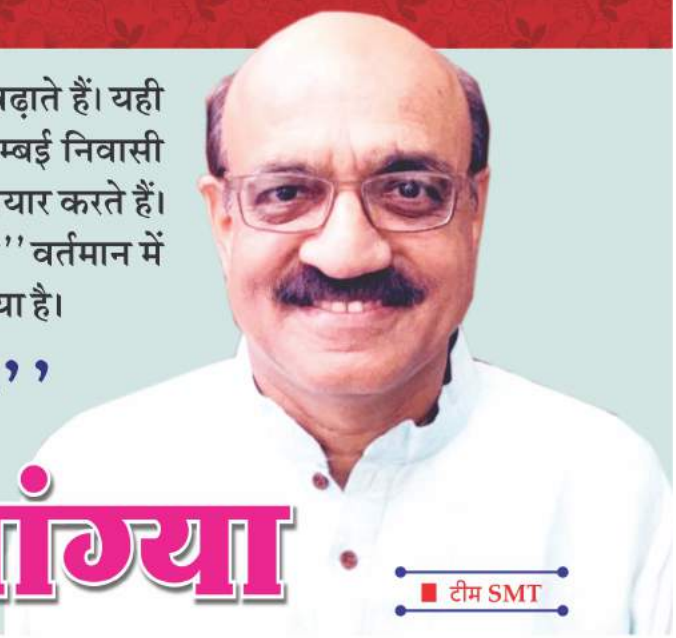

''गुरूओं'' के ''गुरू'' अरूण चितलांग्या

टीम SMT

देश के व्यवसाय जगत में ट्रेनर्स तैयार करने वाले ''अरूण चितलांग्या'' की पहचान एक ऐसे गुरू के रूप में हैं, जो व्यवसायों की आवश्यकता के अनुरूप न सिर्फ मानव संसाधन को प्रशिक्षित करते हैं, बल्कि ऐसे प्रशिक्षक भी तैयार करते हैं, जो सुप्रशिक्षित तकनीकी विशेषज्ञों को प्रशिक्षण प्रदान कर तैयार कर सकें। वे अभी तक 30 हजार से अधिक लोगों को प्रशिक्षित कर प्रोफेशनल बना चुके हैं। इनमें विभिन्न उद्योगों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप चपरासी से लेकर कम्पनी के प्रेसिडेंट तक उन्होंने प्रशिक्षित कर दिये हैं। उम्र के 65 वर्ष के पड़ाव पर भी उनकी सेवा यात्रा सतत जारी है।

संस्कारों में मिले प्रबंधन के गूर

श्री चितलांग्या का जन्म वर्ष 1956 में कोलकाता के माहेश्वरी परिवार में हुआ। इससे उन्हें बचपन से ही संस्कारों में व्यवसायी प्रबंधन के गूर मिल गये थे। इसके बाद उनके जीवन का कर्मक्षेत्र मुंबई बन गया। यहीं से श्री चितलांग्या ने जमनालाल बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज से एडमिनिस्ट्रेशन मेनेजमेंट में डिप्लोमा किया। इसके पश्चात इंडो-अमेरिकन सोसायटी से ''इफेक्टिव पब्लिक स्पीकिंग'' में सर्टिफिकेशन किया। यही उनके जीवन का सबसे बड़ा टर्निंग पाइंट बन गया। इसने उन्हें सम्पूर्ण विश्व से सम्बद्ध किया, वहीं सम्बद्ध होने के गूर भी सिखायें। उन्होंने अपने कैरियर की ''बॉलबेयरिंग'' विक्रय के अपने पारिवारिक व्यवसाय से शुरूआत की लेकिन फिर मेन्युफेक्चरिंग, स्टॉक मार्केट, विज्ञापन एजेंसी, जॉब्स और 2000 तक एल एण्ड डी व्यवसाय से सम्बद्ध हो गये।

ऐसे बढ़े ''ट्रेनिंग ट्री'' की ओर कदम

प्रोफेशनलिज्म को प्रशिक्षण से और भी प्रोफेशनल बनाने की सोच को उनके अनुभवों ने पंखा लगाये तथा वर्ष 2009 में ''ट्रेनिंग ट्री'' तथा वर्ष 2010 में ''एसोसिएशन ऑफ ट्रेनर्स'' की स्थापना कर दी। वर्तमान में फ्रेंकफिन, आईसीबीआई, एस्सार, बजाज ऑटो तथा रोनक ग्रुप सहित कई प्रख्यात उद्योग समूह तथा कई उच्च शिक्षण संस्थान उनके क्लाईंट के रूप में उनसे सम्बद्ध हैं। उनकी संस्था इनके कर्मचारियों तथा ट्रेनर्स को प्रशिक्षित कर प्रोफेशनल बनाती है।

कैसे देते हैं प्रशिक्षण

उनकी टीम ऑफ ट्रेनर्स में वर्तमान में शीर्ष स्तर पर आपके सहित 4 विशेषज्ञ हैं। स्व. श्री चितलांग्या गत 17 वर्षों से कम्पनियों के सीईओ स्तर के कर्मचारियों तथा ट्रेनर्स को प्रशिक्षित करते हैं। अभी तक वे स्वयं 25 हजार से अधिक लोगों को प्रशिक्षित कर चुके हैं। उनके प्रशिक्षण में विशेष रूप से प्रबंधन शामिल होता है। इनके प्रशिक्षण देना का तरीका कुछ भिन्न है वे पावर स्लाईड प्रेजेन्टेशन और लेक्चर्स को ज्यादा पसंद नही करते बल्कि गेम्स और ग्रुप डिस्कशन्स आदि की सहायता से उन्हे सीखाने में मदद करते है। हास्य कहानियां जीवन के अनुभव आदि के सब बाते उनके लेक्चर्स का हिस्सा होती है। अन्य विशेषज्ञ में अजीत कॉमत 'लॉ व थियेटर'' से सम्बद्ध रहे हैं और विशेष रूप से उनके क्लाईंट में ब्लूचिप कम्पनियाँ शामिल हैं। ग्रिष्मा थाम्पी ''ईमेज कंसल्टेंट तथा सॉफ्ट स्कील ट्रेनर'' हैं जो खानपान के एटीकेट्स की विशेषज्ञा हैं। वे अभी तक कई टीवी शोज में भी दिखाई दे चुकी हैं। मानसी सेठ चितलांग्या फ्रेंच भाषा की विशेषज्ञ के रूप में सेवा दे रही हैं।

चाहे व्यवसाय जगत में रहे या लेखनी चलाई अथवा समाजसेवी संस्थाओं द्वारा मानवता की सेवा की, जो भी किया वह इतिहास बन गया। इंदौर निवासी दिनेशकुमार रणधर एक ऐसे ही वरिष्ठ समाजसेवी हैं, जो उम्र के 77वें पड़ाव पर भी मानवता की सेवा में पीछे नहीं है। यही कारण है कि लायंस क्लब उन्हें उनकी सेवाओं को लेकर ''हीरो ऑफ क्लब'' सम्मान से भी सम्मानित कर चुका है।

■ टीम SMT

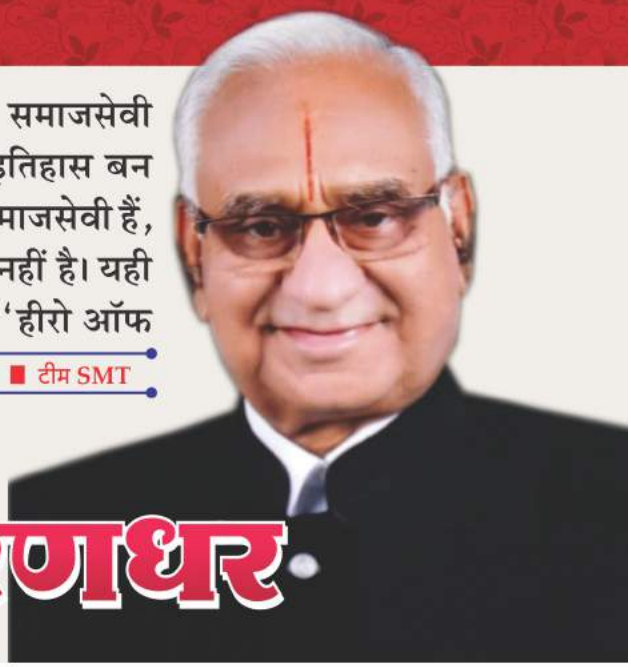

समाजसेवा के ''हीरो''

दिनेश कुमार रणधर

दिनेश कुमार रणधर का जन्म इंदौर में 20 अप्रैल 1944 में हुआ था। पिता स्व.श्री सी.एम. रणधर ख्यात हाई कोर्ट एडवोकेट थे एवं माताजी विदुषी गृहिणी थी। साइंस स्नातक करने के पश्चात ही आपने बिजनेस शुरू कर लिया, जिसमें मल्टीनेशनल कम्पनी के इंजीनियरिंग उत्पादों का कॉर्पोरेट इंडस्ट्रीज में वितरण प्रारम्भ किया। सन् 1994 में आपने अमेरिका, कनाडा व युरोप की यात्रा के दौरान वहां की मल्टीनेशनल कम्पनी से संपर्क कर इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट व्यापार के तहत इंजीनियरिंग व फ्लोरिंग स्टोन का निर्यात किया। उसी दौरान आपने टेलिकॉम की अग्रणी कम्पनी मोटोरोला के साथ वायरलेस टेलिकॉम कम्पनी के दूरसंचार दिल्ली से लाईसेंस प्राप्त किये व सन 1996 में सर्वप्रथम सेल्युलर कम्पनी आर.पी.जी. की फ्रेचांइजी लेकर मोबाईल फोन सर्विसेस का वितरण किया। साथ ही विडियो कांफ्रेंसिंग, केसियो जापान के फोन व कॉइंन फोन का वितरण किया।

लक्ष्मी के साथ सरस्वती की भी साधना

सन् 2007 से 2010 तक 3 वर्ष आप महाराजा कॉलेज डायरेक्टर रहकर एम.बी.ए., एम.एड., बी.एड आदि पाठ्यक्रमों का संचालन किया। श्री रणधर सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक गतिविधियों में सक्रिय रहे व कई संस्थाओं से जुड़कर अध्यक्ष आदि कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रहे। साहित्य पठन व लेखन में भी आपकी रूचि रही। आपके लिखे हुए कई लेख समाचार पत्र, पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे। कई पत्रिकाओं के संपादक मंडल में भी आप पदस्थ रहे। आकाशवाणी इंदौर में तथा परामर्श मंडल में सम्मिलित रहे हैं। युवावस्था से ही आप योगाभ्यासी रहे हैं व कई योग शिविर का संचालन तथा आयोजन देश व विदेश में किया है।

मानवता की सेवा का भी समर्पण

पिछले कुछ वर्षों से लायंस क्लब इंटरनेशनल के भी आप सक्रिय सदस्य रहे हैं। इसके साथ ही डिस्ट्रीक्ट गर्वनर सहित अध्यक्ष, झोन चयरमेन, पी.आर.ओ. व केबिनेट सदस्य रहकर लायंस क्लब द्वारा संचालित सेवा गतिविधियों में निष्ठापूर्वक व कर्मठता से कार्य करते रहे हैं। इन समर्पित सेवाओं के लिए उन्हें डिस्ट्रीक्ट गर्वनर व लायंस मल्टीपल कौंसिल द्वारा सर्वश्रेष्ठ अध्यक्ष, सर्वश्रेष्ठ झोन चेयरमेन, बेस्ट डिस्ट्रीक्ट पी.आर.ओ. व हीरो ऑफ क्लब सम्मान से स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया है। इस वर्ष सन् 2021-22 में डिस्ट्रिक्ट गवर्नर द्वारा रीजन चेयरमेन मनोनित किये गये हैं।

लघु कथा

रिटायरमेन्ट

आज उसके परिवार वाले तथा मित्रगण ढोल नगाड़ों की थाप पर खूब नाच कूद कर रहे थे। वह भी फूल मालाओं से लदा न जाने किस सोच में डूबा हुआ यन्त्रवत उनके साथ चल रहा था। सहकर्मियों ने भी उसके रिटायरमेन्ट को एक यादगार बनाने में कोई कसर नहीं रखी थी। निवास के करीब पहुँचने तक ढोल ढमाकों की आवाज और अधिक तेज हो गई।

मुख्य द्वार पर सजी-धजी उसकी पत्नी, मोहल्ले की अन्य महिलाओं के साथ थाल में दीपक सजाये अपने रिटायर्ड पति की बाट जोह रही थी। घर पहुँचते ही बैण्ड-बाजे के साथ उसकी आरती उतारी गई। इतने उमंग भरे वातावरण के बावजूद उसके चेहरे पर उदासी स्पष्ट झलक रही थी। रिटायरमेन्ट से एक सप्ताह पूर्व कुछ इस प्रकार का घरेलू वार्तालाप रह-रहकर उसके कानों में गूँज रहा था-

बड़ी बेटी ''मम्मी, मम्मी, पापा का तनिक रिटायरमेन्ट होने दो। मुझे तो पापा से सोने का सेट जरूर लेना है।''

बड़ा बेटा- 'चल हट, बड़ी आई सोने का सेट लेने वाली। मैंने तो पापा से पिछले साल ही कह दिया था, रिटायरमेन्ट के बाद कैसे भी पापा से मुझे तो बाइक लेनी है।''

पत्नी - ''अरे तुम लोग अपनी-अपनी करते हो। कभी मुझसे भी पूछा है, तुम लोगों ने? सारा जीवन यूँ ही बीत गया। तुम्हारे पापा ने मुझसे वादा किया हुआ है, रिटायरमेन्ट पर हीरों वाला सेट दिलाने का। बिल्कुल वैसा ही जैसा कि मिसेज वर्मा पहनती हैं।''

▸ रमेशचंद्र माहेश्वरी ''राजहंस''

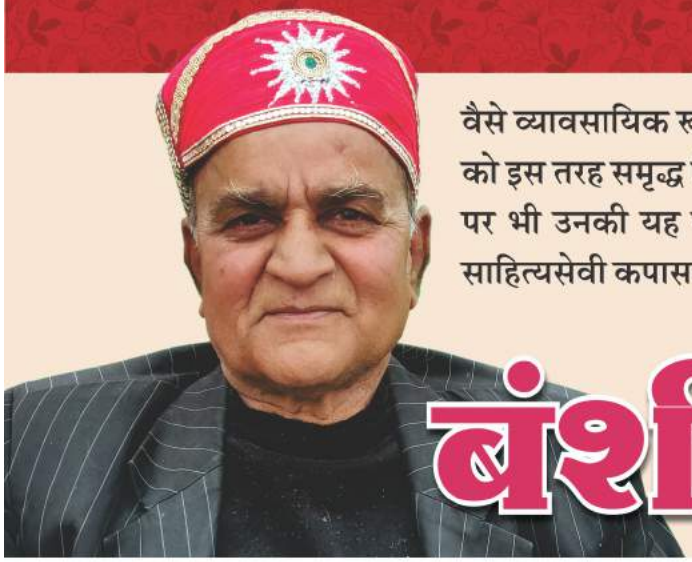

वैसे व्यावसायिक रूप से तो एडवोकेट रहे लेकिन जब लेखनी उठाई तो साहित्य को इस तरह समृद्ध किया कि जैसे कोई कमी ही नहीं छोड़ेंगे। उम्र के 74वें पड़ाव पर भी उनकी यह साहित्य सेवा की यात्रा सतत रूप से जारी है। आईये जानें साहित्यसेवी कपासन निवासी बंशीलाल लड्ढा की कहानी।

■ टीम SMT

साहित्य के सच्चे सेवक बंशीलाल लड्ढा

आजीवन वरिष्ठ एडवोकेट के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले कपासन निवासी 74 वर्षीय वरिष्ठ बंशीलाल लड्ढा उम्र के इस पड़ाव पर साहित्य की सेवा को समर्पित हो चुके हैं। आपने इसे ही साधना बना धर्म, संस्कृति तथा स्वास्थ्य आदि से सम्बंधित कई पुस्तकों का सृजन कर डाला। अभी तक आपकी पुस्तकें स्वस्थ, सुंदर एवं निरोगी रहने के अचूक उपाय, बालक देश की धरोहर है, बंशी का बिगुल, स्वास्थ्य गीतमाला, जीना इसी का नाम है, सौ तालों की इक चाबी, सुखदायक अन्त्याक्षरी व बुढ़ापे की टॉनिक आदि प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके साथ उनके द्वारा लगभग 20 पुस्तकें लिखकर तैयार हैं, जो शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली हैं। इनमें कई कविता, दोहा, गजल, भजन आदि के रूप में धर्म, संस्कृति, स्वास्थ्य तथा दर्शन आदि की विशद व्याख्या कर रही है।

शिक्षक परिवार में लिया जन्म

श्री लड्ढा का जन्म 3 अक्टूबर 1947 में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक स्व. श्री मथुरालाल लड्ढा तथा स्व. श्रीमती नानीबाई लड्ढा के यहाँ हुआ था। उन्हें उच्च संस्कार परिवार से सहज ही प्राप्त हो गये। पिताजी श्री लड्ढा एक ऐसे शिक्षक थे, जिन्हें वर्ष 1960 में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा सम्मानित भी किया गया था। बी.ए. तथा एलएलबी तक शिक्षा प्राप्त कर श्री लड्ढा वर्ष 1972 से वकालात के व्यवसाय से सम्बद्ध हो गये। इस व्यवसाय में भी अपनी ईमानदारी से आपने विशिष्ट पहचान बनाई।

साहित्य सेवा के वृहद आयाम

श्री लड्ढा ने कई कवि सम्मेलनों में कविता पाठ किया है। बच्चों के लिये निबंध एवं वाद विवाद तैयार करना और उनको दक्षता हासिल कराना भी उनकी विशेषता रही। साहित्य सेवा के लिये साहित्यांचल संस्थान व सामयिकी पत्रिका सहित कपासन सब डिविजनल मजिस्ट्रेट द्वारा सम्मानित हो चुके हैं। समय-समय पर हिन्दी जागरण गोष्ठियों में भाग लेना, हिन्दी दिवस पर साहित्य मण्डल, नाथद्वारा के माध्यम से समय-समय पर आयोजित सभाओं में भाग लेना और हिन्दी के लिये अपनी कविताओं की मंचों पर प्रस्तुति तथा प्रसारण करवाना आपकी साहित्य सेवा का अंग रहा है। नाथद्वारा साहित्य मण्डल द्वारा बृज भाषा के सम्मान से आयोजित सभाओं में लगातार भाग लेते रहे हैं। साहित्य मण्डल नाथद्वारा द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''हर श्रृंगार'' के सदस्य हैं तथा भावाभूषण हिन्दी पदवी से विभूषित तथा साहित्य मण्डल नाथद्वारा से भी हिन्दी भाषा भूषण की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। जिला स्तर पर श्रेष्ठ साहित्य सेवा के लिये वर्ष 2013 में सम्मानित हो चुके हैं।

विदिशा माहेश्वरी समाज के लिये जब भी खेल की बात होती है, तो हर किसी की जुबान पर 68 वर्षीय दिनेश माहेश्वरी का नाम आये बिना नहीं रहता। कारण यह है कि अपने बचपन व युवावस्था में तो उन्होंने खेलों के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया ही, आज उम्र के इस पड़ाव पर भी उनकी स्थिति 'खेल के जादूगर' से कम नहीं है।

■ टीम SMT

68 वर्ष के "खेल के जादूगर" दिनेश माहेश्वरी

विदिशा निवासी दिनेश माहेश्वरी की पहचान खेल के जादूगर के रूप में यूं ही नहीं है। वर्तमान में भी वे 68 वर्ष की वरिष्ठावस्था में होने के बावजूद न सिर्फ हॉकी, फूटबॉल तथा एथलेटिक्स आदि खेलते हुए युवावर्ग के लिये प्रेरणा बने हुए हैं, बल्कि उनकी खिलाड़ी के रूप में उपस्थिति निर्णायक सिद्ध होती है। यही कारण है कि उन्हें खेल के जादूगर के रूप में जाना जाता है। अर्थात ऐसा खिलाड़ी जो किसी भी मैच को निर्णायक मोड़ पर पहुँचाने का सामर्थ्य रखते हैं।

बचपन से रही खेल के प्रति रूचि

विदिशा (म.प्र.) में स्व. श्री रामगोपाल माहेश्वरी के यहाँ जन्में श्री माहेश्वरी प्रारंभ से ही खेलों में विशेष रुचि रखते हैं। आपने स्कूल, कालेज स्तर की बहुत सी प्रतियोगिता में भाग लिया तथा कई पुरस्कार हासिल किए। श्री माहेश्वरी ने कालेज तथा विश्वविद्यालय की टीम का प्रतिनिधित्व भी किया। आपकी रुचि एथलेटिक्स (दौड़, जेबलिन थ्रो, गोला फैंक आदि) में विशेष रूप से रही। आपने राष्ट्रीय स्तर की एथलेटिक्स प्रतियोगिता में म.प्र. की टीम में शामिल होकर हैदराबाद, गोवा में आयोजित प्रतियोगिता में पुरुस्कृत हुए। इसके साथ ही हॉकी तथा फूटबॉल में भी उन्हें अच्छी महारथ हासिल रही। जिला ओलंपिक हॉकी स्पर्धा के आयोजन के अवसर पर हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के हाथों सम्मानित होने का सुअवसर भी मिला था। फूटबॉल में श्री माहेश्वरी विश्वविद्यालय चेम्पियन भी रहे।

68 वर्ष की उम्र में भी खिलाड़ी

श्री माहेश्वरी वर्तमान में 68 वर्ष की उम्र में हैं। ऐसे में वे स्वस्थ रहने के लिये नियमित रूप से योग-प्राणायाम तो करते ही हैं, साथ ही खेलने से भी नहीं चूकते। उनकी खेल-खेलने की यही आदत उन्हें इस उम्र में भी बनाये हुए है, युवाओं की तरह बिल्कुल फीट। युवा वर्ग उन्हें अपनी प्रेरणा मानते हैं। इस उम्र में भी वे वरिष्ठजनों के लिये आयोजित विभिन्न खेल स्पर्धाओं में भाग लेने में पीछे नहीं रहते। जोधपुर में आयोजित समाज के महाकुंभ में भी उन्होंने अपनी खेल उपलब्धियों का लोहा मनवाकर कई पुरस्कार प्राप्त किये। इन विशिष्ट खेल उपलब्धियों के लिये इस आयोजन में लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन तथा महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र फडनवीस द्वारा श्री माहेश्वरी का सम्मान भी किया गया था।

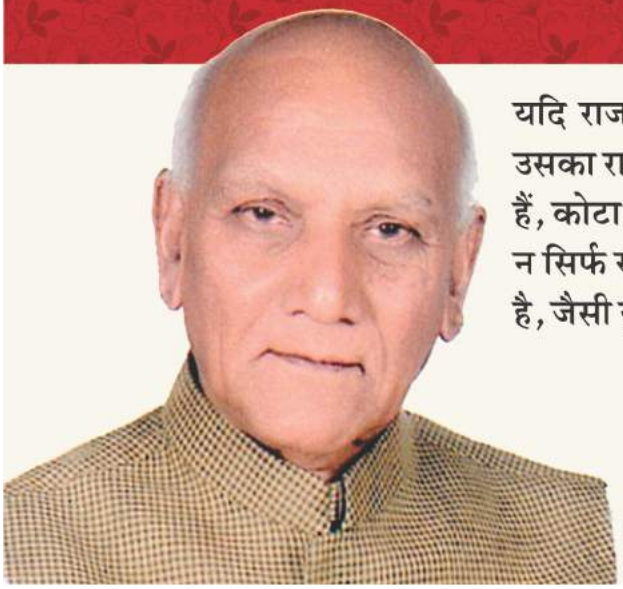

यदि राजनेता के मन में मानवीय संवेदनाऐं हिलोरें लेने लगें तो कैसे उसका राजनीति का पथ भी समाजसेवा बन जाता है, इसी का उदाहरण हैं, कोटा निवासी वरिष्ठ भाजपा नेता राम मंत्री। उम्र के इस पड़ाव पर भी न सिर्फ राजनीति बल्कि उनकी समाजसेवी की यात्रा भी वैसी ही जारी है, जैसी युवावस्था में जारी थी।

मधु-ललित बाहेती, कोटा

समाजसेवी "मन" के राजनेता

राम मंत्री

जब भी राजनीति के क्षेत्र में योगदानों की चर्चा होती है, तो कोटा में न सिर्फ भाजपा बल्कि उसकी प्रतिस्पर्धी पार्टी के नेता भी वरिष्ठ भाजपा नेता राम मंत्री के योगदानों के प्रति नतमस्तक हुए बिना नहीं रहते। तत्कालीन भारतीय जन संघ से वर्ष 1967 में सक्रिय कार्यकारिणी सदस्य के रूप में जो जुड़ाव हुआ तो वह आजीवन चलता ही चला गया। उम्र के इस पड़ाव पर भी उनकी भाजपा की सेवा वैसी ही जारी है। कुछ समय पूर्व श्री मंत्री भाजपा प्रकोष्ठ कोटा शहर की आजीवन सहयोग निधि संयोजक की भूमिका निभाते हुए पार्टी के लिये सुनियोजित ढंग से अर्थ संग्रह करवा चुके हैं।

उच्च शिक्षा के बावजूद राजनीति की राह

झालरापाटन, जिला झालावाड के प्रतिष्ठित व्यवसायिक परिवार में जन्में श्री मंत्री ने बी.ए. (राजस्थान के अग्रणी शिक्षा संस्थान बिरला कॉलेज ऑफ आर्ट्स पिलाने से) तथा एम.ए. (समाजशास्त्र) दयानंद एग्लोवैदिक कॉलेज अजमेर से पूर्ण किया फिर अंतर्राष्ट्रीय स्तर की संस्थान नेशनल कॉउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनोमिक रिसर्च, नईदिल्ली में रिसर्च इंटरव्यूर के नाते वर्ष 1962-1965 तक सेवा की। किशोरावस्था से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े थे अतएव राष्ट्र सेवा की अटूट आस्था से प्रेरित होकर त्याग पत्र देकर स्वतंत्र व्यक्तित्व निर्माण हेतु निजी व्यवसाय करने के लिए कोटा आकर संघ की सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रियता से भागीदारी निभाने लगे। आपातकाल के 19 माह में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ कोटा विभाग प्रचारक राजेंद्र भाई के सानिध्य में भूमिगत आंदोलन में सक्रिय रहे।

सतत चली राजनीतिक यात्रा

सन् 1967 से ही भारतीय जनसंघ एवं तत्पश्चात भाजपा पार्टी, कोटा की कार्यकारिणी में लगातार सक्रिय भागीदारी निभाई। साथ ही पार्टी द्वारा संचालित प्रत्येक आंदोलन व प्रदर्शन में अग्रणी रहे। कोटा महानगर के भाजपा के कोषाध्यक्ष पद पर रहकर 7 वर्ष तक पार्टी को आर्थिक सम्बल दिलवाने में योगदान रहा। कोटा महानगर के व्यापार व उद्योग प्रकोष्ठ के संयोजक रहे। कोटा महानगर के भाजपा के चार वर्ष तक प्रवक्ता रहकर इस चुनौतीपूर्ण दायित्व को गंभीरता से प्रतिदिन दो घंटे कार्यालय में बैठकर निभाया। राजस्थान सरकार द्वारा मनोनीत जेल सलाहकार समिति के सदस्य का दायित्व निभाया। कोटा दिल्ली रेल चलाओ आंदोलन हेतु कोटा के सम्पूर्ण भाजपा के शीर्षस्थ नेतृत्व के साथ 7 दिन की जेल यात्रा की। राम मंदिर निर्माण आंदोलन के प्रथम चरण में कोटा के शीर्षस्थ नेता स्व.श्री रघुवीरसिंह कौशल एवं स्व. श्री मणिभाई पटेल एवं अन्य नेताओं के साथ आगरा जेल में रहे। कश्मीर में धारा-370 को हटाने को लेकर पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी के साथ जम्मू जाकर हाड़ौती का प्रतिनिधित्व किया।

समाजसेवा में सतत योगदान

कोटा नगर माहेश्वरी समाज के दो बार महामंत्री रहे। साथ ही वर्तमान में भी अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के कार्यकारी मण्डल सदस्य हैं। पूर्वी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी कार्यकारिणी सदस्य, माहेश्वरी पब्लिक स्कूल प्रबंध समिति सदस्य, दादावाड़ी माहेश्वरी समाज के संस्थापक अध्यक्ष तथा कोटा शहर पंचायत के कार्यकारिणी सदस्य रहे हैं।

व्यावसायिक क्षेत्र में कोटा की 150 व्यापारी व औद्योगिक संस्था की प्रतिनिधि संस्था कोटा व्यापार महासंघ द्वारा कोटा में आई.आई.टी. लाने हेतु सर्वदलीय संघर्ष समिति के संयोजक रहे। शीघ्र वायु सेवा प्रारंभ करने हेतु भी आंदोलन किया। कोटा व्यापार महासंघ के उपाध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया। राजस्थान प्रदेश की प्रतिनिधि व्यापारिक संस्था फेडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड इण्डस्ट्री के अनेक वर्षों तक कार्य समिति सदस्य रहे। व्यावसायिक संगठन कोटा पाईप व सेनेट्री एसोसिएशन के भी वर्षों तक अध्यक्ष रहे।

वर्तमान की अपेक्षाकृत एक दशक पूर्व परिवार में वरिष्ठ सदस्यों का मान-सम्मान और महत्व बहुत अधिक था। हर छोटी-बड़ी बात के लिए घर-परिवार के बड़े-बुजुर्गों से राय ली जाती थी। आज की पीढ़ी को वरिष्ठजनों के अनुभव अथवा शिक्षा की अपेक्षाकृत गूगल ज्ञान पर अधिक भरोसा है। अपनी हर छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी जिज्ञासा की पूर्ति के लिए हमारी भावी पीढ़ी गूगलपर निर्भर है। परिवार में वरिष्ठ सदस्यों से कोई बात पूछना आज की पीढ़ी को गवारा नहीं। गूगल में ज्ञान तो मनुष्य ने अपने ज्ञानकोष से ही भरा है, फिर भी गूगल ज्ञान के सम्मुख वरिष्ठजनों के ज्ञान की अहमियत कमतर आंकी जाती है। इस प्रकार वरिष्ठजनों के अनुभव और ज्ञान के अनमोल खजाने का तिरस्कार उचित है अथवा अनुचित? आइये जानें इस स्तम्भ की प्रभारी सुमिता मूंदड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

''गूगल ज्ञान'' के समक्ष वरिष्ठजनों के ''अनुभवी ज्ञान'' का तिरस्कार उचित या अनुचित?

गूगल क्या जाने हमारे संस्कार और हमारी संस्कृति?

वास्तविक दुनिया से अधिक हमें आभासी दुनिया प्रिय लगने लगी है। आभासी दुनिया के सम्मुख हम अपनी अनमोल धरोहर यानि हमारे परिवार के वरिष्ठजनों को भी नजरंदाज करते जा रहे हैं। वरिष्ठजनों की महत्ता और आवश्यकता कमतर होने लगी है और वृद्धावस्था में हमारा हाल तो उनसे भी बुरा होना निश्चित है क्यूंकि हमारे पदचिन्हों पर चलते हमारे बच्चे हमसे एक कदम आगे ही रहेंगे। गूगल में ज्ञान का भंडार भरकर हमने स्वयं को मशीन का गुलाम बना लिया है। निरंतर ज्ञान-विज्ञान-तकनीकी प्रगति होना गर्व की बात है पर इसके लिए मशीनों को सर्वोच्च समझना अज्ञानता है। गूगल के पास संचित ज्ञान भंडार में शत-प्रतिशत सच्चाई नहीं होती है। साथ ही कभी-कभी तो गूगल स्वयं भ्रमित प्रतीत होता है, जो अपने सीमित ज्ञान से हमें एक ही प्रश्न के भिन्न-भिन्न जबाब देता है। पर अगर हम अपने सवालों को हमारे वरिष्ठजनों के समक्ष रखें तो उनसे अनुभवी और संतोषप्रद जवाब प्राप्त होता है। हमारी हर जिज्ञासा का निवारण भी वरिष्ठजनों से अनेकानेक उदाहरणों के साथ मिलता है। गूगल हमारे परिवार के संस्कार और संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी नहीं ले जाता, अपने परिवार के संस्कार और संस्कृति को आनेवाली पीढ़ी तक पहुंचाने की नैतिक जिम्मेदारी हमें स्वयं ही निभानी होगी और इसके लिए परिवार में हर पीढ़ी को एक-दूसरे से जुड़ाव और लगाव बनाये रखना आवश्यक है। ध्यान रखें कि पश्चिमी संस्कृति की तरह पराये गूगल को सर आंखों पर बैठाकर अपनों का तिरस्कार, हम भारतीयों के संस्कार न बन जायें। हमारे वरिष्ठजनों का मान-सम्मान हमारे लिए सर्वोपरी है तो उनका अनुभवी-ज्ञान है, हमारी अक्षुण्ण धरोहर।

■ **सौ. सुमिता मूंधड़ा,** मालेगांव

दोनों का ही अपना महत्व

आज के परिवेश के अनुसार हम अत्यंत संवेदनशील हैं और जरूरी भी। जैसे कि हर आविष्कार के फायदे और नुकसान दोनों होते हैं वैसे ही हम इस गूगल ज्ञान को टेक्नोलॉजी का बड़ा नुकसान ही कहेंगे कि आज की भावी पीढ़ी अपने वरिष्ठजनों के अनुभवों को दरकिनार कर ऐसे ज्ञान को महत्व दे रही हैं जिनका वास्तविकता से थोड़ा दूर का नाता है। मेरी राय में इसका फायदा यह है कि हमारे अभिभावकों का जो भी अनुभव है वो कहीं ना कहीं सीमित तौर पर है और जो ज्ञान गूगल के पास है वो असीमित है। आज की पीढ़ी के लिए वरिष्ठजनों के अनुभव को महत्व देते हुए गूगल ज्ञान का उपयोग करके निष्कर्ष निकालना बहुत ही लाभदायक हो सकता है।

■ **सुरेश राठी,** जोधपुर

गूगल ज्ञान वास्तव में मनुष्य का ही ज्ञान

एक दशक पूर्व घर-परिवार में एक ऐसा भी समय था जब वरिष्ठजनों को परिवार में पूरा मान-सम्मान मिलता था। हर कार्य में उनके अनुभवी ज्ञान को ही प्रमुखता दी जाती थी, उनकी राय के बिना चाहे कार्य छोटा हो या बड़ा, घर परिवार में करना हो या बाहर करना हो, बिना उनकी राय के कोई भी कार्य नहीं होता था। किंतु वर्तमान में आज की युवा पीढ़ी की तो ऐसी हालत हो गई है कि वह अपने ही घर के वरिष्ठजनों से बात करना पसंद नहीं करता है। हम यह क्यों भूल जाते हैं कि माता-पिता की कृपा से ही हम मानव योनि में जन्म ले सके हैं। जन्म के बाद भी हर प्रकार से हमारे लालन-पालन में, हमारी शिक्षा-दीक्षा में, व्यापार व्यवसाय में चहुँ ओर की प्रगति में उन्होंने अपनी समस्त प्रतिभा का व अपने अनुभवी ज्ञान का समर्पण किया। अतः उनके ऋण से मुक्त हो सकना इस जीवन में तो सम्भव ही नहीं है। अतएव हमें तो उनका आदर व मान सम्मान करना चाहिये, उनकी आज्ञा का भी पालन करना चाहिये, उनके अनुभवी ज्ञान से लाभ उठाना चाहिये। मनुष्य ने ही अपने अनुभवी ज्ञान कोष से गूगल में ज्ञान भरा है फिर भी आज की युवा पीढ़ी को गूगल ज्ञान पर अधिक भरोसा है। याद रहे परिवार में जो आज युवा हैं, उन्हें कल वृद्धावस्था में आना है, फिर वरिष्ठजनों के अनुभवी ज्ञान का अपमान व तिरस्कार क्यों?

■ **आनंदीलाल गांधी,** उज्जैन (म.प्र.)

अनुभव को भी महत्व दें

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो गूगल ज्ञान अनुभवी ज्ञान पर हावी होता जा रहा है। आधुनिक पीढ़ी छोटी से छोटी जिज्ञासा या समस्या के समाधान के लिए गूगल ज्ञान का ही सहारा लेती है और वरिष्ठजनों का अनुभवी ज्ञान उपेक्षित रह जाता है जो कि उचित नहीं है। गूगल ज्ञानी बाबा है, उसके पास ज्ञान का भंडार अवश्य है, लेकिन अनुभव नहीं। अनुभव तो इंसान को कर्म करके ही प्राप्त होता है। हमारे बुजुर्गों ने जीवन में जो कुछ भी कर्म किए सही या गलत, उन्होंने उस अनुभव से सीखा। उन्हें पता है कि कौन सा काम कैसे करना है? उसके क्या परिणाम होंगे? उन्हें यह भी पता है कि अगर काम गलत हो गया तो अब उसे सही कैसे करना है? यह आपको कभी गूगल नहीं बता पाएगा। काम के दौरान आपको जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा वह भी आपको गूगल नहीं बता पाएगा। उन चुनौतियों से कैसे बाहर निकलना है। किसी भी कार्य को करने पर उसके मापदंड होते हैं सफल या असफल। असफलता की स्थिति में व्यक्ति का समय, पैसा सब कुछ दांव पर लग जाता है व दिमाग पर संयम कर विवेकपूर्ण निर्णय लेने में गूगल कतई आपकी मदद नहीं कर सकता। उन परिस्थितियों में तो आपको आपके अपने वरिष्ठजन ही अनुभवी ज्ञान के आधार पर उस चक्रव्यूह से बाहर निकाल पाएंगे। अतः गूगल बाबा से ज्ञान जरूर लें लेकिन अनुभवी ज्ञान को कमतर न आंकें।

■ **स्वाति मानधना 'सुहासिनी'** बालोतरा

बुजुर्गों के ज्ञान की अपनी महत्ता

जानकारी के साथ विवेक का योग होने पर वह ज्ञान होता है। गूगल एक सर्च इंजन है। वह केवल जानकारी देता है। जो जानकारी किसी ने अपने अनुसार अपलोड की है वह खोजने वाले के सामने गूगल प्रस्तुत करता है। वास्तव में वरिष्ठजन और गूगल प्रतियोगी हैं ही नहीं। वरिष्ठजन जानकारी के साथ-साथ उस जानकारी को कब कैसे कहां प्रयुक्त करना है, किस हद तक प्रयुक्त करना है, इसका विवेक भी देते हैं। कौन सी चीज कौन सी आयु में सिखानी चाहिए यह निर्णय वरिष्ठ जन कर सकते हैं। सीखना एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। बुजुर्ग अनुभव में हमेशा ही आगे रहेंगे। कहते हैं आजकल गूगल पर सब उपलब्ध है, तो सीखने की क्या आवश्यकता? किन्तु आजकल जानकारियां जितनी सरलता से प्राप्त हो रही है उतनी ही भ्रामक जानकारियां भी प्राप्त हो रही है। इसलिए नीर-क्षीर विवेक के लिए मतलब सही गलत में अंतर कर पाने के लिए बुजुर्गों का अनुभव आवश्यक है। यदि किसी विषय पर कोई जानकारी चाहिए तो गूगल की सहायता लेना बुरा नहीं है, किन्तु इसे बुजुर्गों का प्रतिस्थापन मानना गलत है। वैसे दोनों का क्षेत्र ही अलग है। किसी रेलगाड़ी का सही समय गूगल सही बता सकता है और जीवन का कोई निर्णय लेना हो तो बुजुर्गों का अनुभव ही सहायक है।

■ **नम्रता माहेश्वरी,** पाली

प्रथम सम्मान वरिष्ठों के ज्ञान को मिले

वरिष्ठों के ज्ञान की बुनियाद अनुभव मजबूत नींव से बनी होती है, जो हर परिस्थिति में उनके साथ होती है और उसके लिए उन्हें किसी अन्य बाहय वस्तु के आश्रय की जरूरत नहीं रहती। वे हर समय हर स्थिति में तुरंत समस्या अथवा प्रश्न का हल सुलझाने में समर्थ होते है और उनके द्वारा समझाई हुई बात हमें लंबे अंतराल तक स्मरण रहती है क्योंकि वे हमारे प्रश्न को गहराई से समझते हुए उससे संलग्न अन्य बातों की उदाहरणों द्वारा पुष्टि करते हैं। इसलिए उनके ज्ञान का सम्मान होना ही चाहिए। वरिष्ठों से हमें अपनी जिज्ञासा के अतिरिक्त कुछ अन्य बातें भी पता चलती हैं जो व्यवहारिक जीवन हेतु महत्त्वपूर्ण होती हैं। वर्तमान युग गूगल पर निर्भर रहता है, गूगल में ज्ञान की पूर्ति का माध्यम मानव ही होता है किसी का अनुभव कम तो किसी का ज्यादा रहता है। ऐसे हालात में कई बार हमें गूगल से गलत जानकारी मिलने की भी संभावना रहती है। साथ ही गूगल नेटवर्क वाय फाय पर अवलंबित रहता है। किसी कारणवश अगर नेटवर्क में तकनीकी बाधा आती है तो हमारे सारे कार्य ठप्प हो जाते है। अतः प्रथम प्राधान्य तो वरिष्ठों के अनुभवी ज्ञान को ही मिले। घर में बड़े बुजुर्गो की अनुपस्थिति में गूगल का सहयोग लेना पड़े तो बात अलग है।

■ **राजश्री राठी,** अकोला

दोनों एक दूसरे के पूरक

इंटरनेट की दुनिया का पहला नाम गूगल है। गूगल में जो वेबसाइट/प्रोग्राम बनाए जाते हैं वह भी तो मानव निर्मित ही हैं ना? गूगल में ज्ञान भी मानव निर्मित वेबसाइट अपने स्केनिंग द्वारा डाटा भरा जाता है। जैसे जैसे वेबसाइट अपडेट होती है, हमें नए-नए डिटेल्स मिलते हैं। जब हम सर्च करते हैं, एक सवाल उठता है कि जब गूगल नहीं था, तब क्या ज्ञान की कमी थी? वरिष्ठों के अनुभवी ज्ञान के द्वारा ही तो गूगल की उत्पत्ति हुई है। परंतु घर में अगर कोई वरिष्ठ नहीं है और तुरंत हमें कुछ जानकारी चाहिए तो हम गूगल से ही तो हासिल कर सकते हैं, ना। इसमें हमें सही जानकारी कम समय में और उचित मार्गदर्शन के साथ मिलती है। अब बातें आती है, वरिष्ठजनों के अनुभव की तो उनका ज्ञान प्रिंट होने से पहले ही लुप्त हो जाता है, क्योंकि बुढ़ापे में यादें कमजोर हो जाती है और गूगल में सब कुछ सेट होने से हमें जब चाहिए तब वह साइट खोल कर हम पढ़ सकते हैं। अगर हम कुछ भूल जाते हैं तो हम गूगल में सर्च करके सही जवाब ढूंढ सकते हैं। वरिष्ठजन और गूगल एक दूसरे के पूरक हैं। इसलिए मेरा कहना है कि वरिष्ठजनों के ज्ञान का तिरस्कार अनुचित है।

■ **मीना कलंत्री,** वसई-मुंबई

वरिष्ठों का ज्ञान प्रामाणिक

आज मीडिया के क्षेत्र में अभूतपूर्व तरक्की हुई है। पहले जहाँ हमें छोटी सी बात जानने के लिए बहुत प्रयास करना होता था। आज वहीं पलक झपकते ही सारे उत्तर हमें गूगल से मिल जाते हैं, पर इसका मतलब यह कदापि नहीं है कि हम अपने वरिष्ठ जनों के अनुभवी ज्ञान का तिरस्कार करें। गूगल द्वारा मिला ज्ञान एक सामान्य ज्ञान होता है, जिसकी कोई प्रामाणिकता भी नहीं होती, जबकि अपने वरिष्ठजनों का अनुभव जनित ज्ञान अपने परिवार, अपने परिवेश, अपनी भावनाओं के अनुकूल होता है। उसमें प्रेम और संस्कार का मिश्रण होता है। वरिष्ठ जन हमारे स्वभाव, हमारी जरूरतों, हमारी जिम्मेदारियों और हमारी योग्यताओं को समझते है, इसलिए वे हमारे हिसाब से जो उचित है, वही सलाह देते हैं। अतः हमें अपने बुजुर्गों के अनुभवों का सम्मान करते हुए उनसे अवश्य सीख लेनी चाहिए।

■ **सुनीता माहेश्वरी,** नाशिक

गूगल ज्ञान भी वरिष्ठो का ज्ञान

यह सच है कि युवा पीढ़ी गूगल ज्ञान पर निर्भर है। क्योंकि गूगल पर हर तरह के विषय की जानकारी संभव है। गूगल पर हर समस्या का समाधान और निदान संभव है। गूगल पर हर बात सर्च करने की आदत ही उनकी जिज्ञासा का कारण है। वरिष्ठजनों का अनुभवी ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी चलता है, जो सत्य है। उनका ज्ञान किसी इंटरनेट का मोहताज नही है। उनके ज्ञान मे शिक्षा के साथ अपनत्व भी झलकता है। यह युवा पीढ़ी भी समझती है। युवा पीढ़ी अनुभवी ज्ञान को ही गूगल पर सर्च करती है। उनका इरादा वरिष्ठजनो का तिरस्कार करने का नही होता है। जो युवा पीढी वरिष्ठजनों के अनुभवी ज्ञान का तिरस्कार करती है, उनके संस्कारो मे कमी होती है। इसमे गूगल ज्ञान को दोष देना गलत है। आजकल के बच्चो को काम के सिलसिले में वरिष्ठजनों के साये से दूर रहना पड़ता है। गूगल ज्ञान ही वरिष्ठजनों के अनुभवी ज्ञान को अलग-अलग अंदाज में बतलाता है।

■ **किरण कलंत्री**, रेनुकूट (U.P.)

दोनों के ज्ञान का सामंजस्य जरूरी

जैसा कि सर्वविदित है कि परिवर्तन सदैव प्रभावशाली रहता है। वर्तमान का दौर तकनीकीकरण का दौर है। आज बच्चे हों या जवान या फिर वृद्ध सभी का ज्यादातर समय सदैव मोबाईल के इर्द-गिर्द घूमता है। ऐसे में ''गूगल ज्ञान'' को जीवन में उतारना स्वाभाविक है, परंतु वरिष्ठजनों का ''अनुभवी ज्ञान'' भी अपने आपमें बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है। अनुभव से मिला ज्ञान ऐसा ज्ञान होता है, जो कि जीवन के हर एक उतार-चढ़ाव में आगे बढ़ता हुआ हमें प्राप्त होता है। अतः अनुभवी ज्ञान को नकारना मेरे हिसाब से उचित नहीं है, यदि सम्भव हो सके तो ''गूगल ज्ञान'' और ''अनुभवी ज्ञान''दोनों का उचित सामंजस्य बैठाकर यदि हम उसे अपनायें तो सदैव हमारे लिए सार्थक सिद्ध होगा। गूगल ज्ञान भी कुछ विशेषज्ञों के ज्ञान पर आधारित है और वरिष्ठजनों का ज्ञान उनके द्वारा अपने जीवन से प्राप्त ज्ञान है। अतः उन्हें नकार कर नहीं अपितु सामंजस्य बैठाकर ज्ञान प्राप्त करना तथा अपने जीवन में उतारना हमें सफल बनायेगा।

■ **ममता लखाणी**, बीकानेर

जो सही और जल्दी जानकारी मिले वह ठीक

गूगल एक तकनीकी ज्ञान है। वह तथ्यों के साथ वेबसाइट में फिट किया जाता है। उसमें शत प्रतिशत सत्य की संभावना है। वह मानव द्वारा विभिन्न रिसर्च के डाटा के आधार पर गूगल तक कम्युनिकेट किया जाता है। इस प्रक्रिया में कई विद्वानों का सहयोग रहता है और पूरे विश्व में यह जानकारी पहुंचाई जाती है। कोई भी व्यक्ति अपने समय अनुकूल इससे कम्युनिकेट कर सकता है। बात रही वरिष्ठ जनों की, वह तो हमारे आदरणीय है। उनके अनुभव उनके जीवन में घटित घटना के अनुरूप हैं। उनकी कार्यशैली उनके रीति रिवाज के अनुरूप है। आज सभी नई पीढ़ी पढ़ी लिखी हैं। वह कंप्यूटर और गूगल एक्सेस बहुत अच्छे और सरल तरीके से कार्य में लेते हैं। जीवन में जो कार्य सरल और जल्दी तथा सर्वमान्य हो, वह अपनाना चाहिए, क्योंकि जीवन बहुत छोटा है और कार्य अधिक हैं।

■ **पूजा काकाणी**, इंदौर

श्रीमती बसंती चांडक साहित्यिक पुरस्कार वर्ष-2021

श्रीमती बसंतीबाई चांडक ट्रस्ट
एवं
अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के अंतर्गत

श्रीमती बसंतीबाई चांडक साहित्य पुरस्कार समिति का लक्ष्य
वर्तमान में जब पढ़ने-लिखने का शौक घट रहा है,
अच्छे साहित्य सृजन के लिये माहेश्वरी महिलाओं को प्रेरित करना है।

इस वर्ष माहेश्वरी समाज से आने वाली महिलाएँ इस पुरस्कार के लिए पात्र होंगी।

रुपए एक लाख की राशि एवं चांदी का 100 ग्राम सिक्का।

माहेश्वरी समाज में इस प्रकार का महिलाओं के लिए दिया जाने वाला प्रथम पुरस्कार है।

नामांकन के लिए आमंत्रित सभी इच्छुक माहेश्वरी लेखिकाएँ
श्रीमती बसंतीबाई चांडक साहित्य पुरस्कार 2021 के विचारार्थ अपनी प्रकाशित पुस्तक
31 अक्टूबर 2021 तक प्रेषित कर सकती हैं

श्रीमती बसंती चांडक साहित्यिक पुरस्कार समिति
बसंती हॉस्पिटल, रामदास पेठ, अकोला-444005
मो. 8007720747
Email : puraskarsamiti@gmail.com

राह जिंदगी की...

इस स्तम्भ में अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन की पूर्व अध्यक्ष तथा मुम्बई विश्वविद्यालय की सेवानिवृत्त प्रोफेसर कल्पना गगडानी ''जिन्दगी की नई राह'' दिखायेंगी। इसके अंतर्गत अपनी ओजस्वी वाणी व लेखनी के लिये ख्यात श्रीमती गगडानी इस बार दिखा रही हैं, वरिष्ठजनों की ऊर्जा को एक नया आयाम।

बदलता वानप्रस्थ

सिटीजन नागरिक होता है और सीनियर विशेष क्षेत्र में वरीयता प्राप्त व्यक्ति होता है। वरीयता अनुभव से, ज्ञान से और काम से प्राप्त होती है और बुद्धिमता इसमें है कि हम प्राप्त का प्रयोग किसी हित कार्य में करें और इससे उसमें वृद्धि करें। इस जीवन यात्रा में हमने उम्र में भी वरीयता प्राप्त की है तो उससे मिले अनुभव, ज्ञान का बुद्धि से प्रयोग करना होगा। भारतीय संस्कृति सुंदर वर्णाश्रम व्यवस्था पर टिकी थी। आश्रम व्यवस्था अर्थात सौ वर्ष की आयु के 25-25 के चार समूह ब्रह्मचर्य के 25, ज्ञानार्जन व गृहस्थ के 25 कर्म क्षेत्र तथा वानप्रस्थ के 25- कितना सुनियोजित विधान वन गमन- जंगल की ओर प्रस्थान। विकासवाद ने व्यवस्था का विकास किया। शाश्वत मूल्य वही हैं परस्थिति अनूरूप बदलने का चलन हमेशा चला। मूल्यों और बदलाव का सामंजस्य अब हमें समझना और समझाना है।

क्यों जरूरी था वानप्रस्थ

वानप्रस्थ इसलिये आवश्यक था क्योंकि जब हम पचास के अगली पीढ़ी में कदम रखते हैं। ऐसे में ब्रह्मचर्य में ज्ञान अर्जित कर ग्रहस्थ के द्वार पर दस्तक देने लगी, कर्मक्षेत्र में उतरने को तैयार। अब हम यही जगह उन्हें नहीं देंगे तो ट्रेफिक जाम हो जायेगा वो बेचारे हमारे अनुभव का हार्न सुन-सुनकर परेशान हो जायेंगे। सामाजिक व्यवस्था को संयोजित करने हेतु आश्रम व्यवस्था थी। राष्ट्र, समाज और परिवार सुनियोजित रहेगा तब ही सबका जीवनसुखी रहेगी।

वर्तमान में वानप्रस्थ का यह रूप

पारिवारिक नियोजन धक्कामार के ट्रेफिक हटाने की नौबत न आये हम अपने आप धीरे से किनारा कर लें। गृहस्थी की बागडोर नये गृहस्थ के हाथों में सौंप दे। हमारे अनुभव की राय यदि वे चाहें तो जरूर दे वर्ना हमारे जमाने में का राग न अलापें। उन्हें उनकी योग्यता और ज्ञान से काम करने दें। मन में निश्चय कर लें कि हमने हमारी पारी खेल ली है। अब दूसरे को उसके ढंग से खेल खेलने दें।

सामाजिक नियोजन

वानप्रस्थ का भाव था कि गृहस्थ में जो अर्जित किया है अब उसे बांट दें, धन, ज्ञान सेवा सब बांटें। वनगमन अब सुख सुविधा के हम अभ्यस्तों के लिये संभव नहीं परंतु घर में ही वानप्रस्थ की भावना का अनुसरण करें। घर में आपके बच्चों को यदि आपकी इस धन, ज्ञान, कर्म, संपदा की आवश्यकता नहीं है तो समाज में बांटें। समाज आपका ऋणी रहेगा।

व्यक्तिगत नियोजन

यह आज सबसे अधिक जरूरी है। संयुक्त परिवार में हम उम्र भाइयों, रिश्तेदारों के बीच अकेलेपन का अहसास नहीं होता था। बोलने-बताने वाले बहुत थे। अब बेटे-बहू पोते-पोती कर्मक्षेत्र की जद्दोजहद में व्यस्त हैं। उनसे नाराज मत होइये, अपने दोस्त बनाइये, अपने शोक जगाइये ये बोनस है, इसे मनमर्जी से खर्च कीजिये।

स्वास्थ्य नियोजन

ये बहुत जरूरी है, स्वस्थ नहीं रहे तो बोनस का मजा कैसे उड़ायेंगे? उम्र के साथ जो बीमारियां आनी हैं, वो तो अब तक खूब आ ही गई हैं, उन्हें मनाते बैठेंगे तो कैसे चलेंगे, हां वॉकिंग, योगा, एक्सरसाइज करेंगे तो पिकनिक पार्टी का हर दिन मजा लेंगे। डर-डर के क्यों जिएं, अब भी क्या सौ साल की चाह में प्यारे आठ दस साल गवां दें। अरे पूरी जिंदगी तो भागदौड़ करते रहे, अब तो हम छककर जियेंगे, जब तक जियेंगे, अनुभव की डोर, संतोष का साथ, सुविधाओं की लकड़ी थाम, जिंदगी खूब जियेंगे, खुशियों को लेकर चारों धाम।

सुदिनं सुदिनं जन्मदिनम् तव, भवतु मंगलम् जन्मदिनम्।
विजयी भव सर्वत्र सर्वदा, जीवेत् शरदः शतम्।

हम सबके आत्मीय

दिनेश माहेश्वरी

की 64वीं वर्षगांठ (8 अक्टूबर)
के अवसर पर हार्दिक मंगलकामनाएँ एवं बधाई
बाबा महाकाल आपको प्रसिद्धि और समृद्धि के साथ
आरोग्य एवं गतिमान रखें।

शुभेच्छु
श्री माहेश्वरी टाईम्स एवं माहेश्वरी सोशल क्लब परिवार, उज्जैन

खुश रहें - खुश रखें

परिवार बचाना हो तो प्रेम जरूर बचाएँ

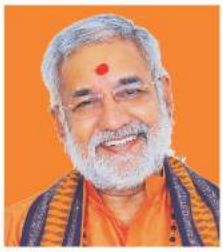

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

एक सवाल उठता है कि परिवार क्यों अशांत हो जाता है। दरअसल, परिवार बनता है अनेक सदस्यों से। पति-पत्नी, पिता-पुत्र, माँ-बेटी सबमें अपना-अपना अहंकार और अपनी-अपनी कामनाएँ होती हैं। कम या अधिक हो सकती हैं पर होती जरूर हैं। देखा जाए तो प्रेम ही परिवार का आधार है। परिवार में जितना अधिक प्रेम होगा उतनी अधिक शांति और स्वर्ग की अनुभूति होगी। परिवार के प्रेम को ठिकाने लगाने के लिए अहंकार और स्वार्थ कैंची की तरह काम करते हैं।

अहंकार के कारण परिवार के सदस्य एक-दूसरे पर अपना अधिकार जमाने का प्रयास करते हैं और स्वार्थ के कारण हर सदस्य अपने हित व सुख की बात सोचने लगता है। ऐसे में सदस्यों के बीच जो पारिवारिक राग होता है वह द्वेष में बदलने लगता है और प्रेम बैर का रूप ले लेता है। देखा गया है कि मतभेद की शुरुआत हँसी-मजाक के साथ टीका-टिप्पणी से शुरू होती है और यहीं से अंतरमन में दरारें पड़नी शुरू हो जाती हैं।

व्यक्तिगत टिप्पणियाँ व्यक्तियों के बीच दूरी बढ़ाती है। इस दौर में द्वेष को प्रवेश की जगह मिल जाती है। परिवार में अधिकांश संबंध राग से शुरू होते हैं। जिन्हें लोग प्रेम कहते हैं किंतु यह विशुद्ध प्रेम नहीं होता, सिर्फ राग होता है। राग धीरे-धीरे द्वेष में बदलता है और इसमें अहंकार की बड़ी भूमिका रहती है।

अहंकारी के मन का स्वभाव होता है कि वह अपने मनपसंद काम कराने के लिए दूसरों को बाध्य करता है। ठीक यही बात दूसरे सदस्य के मन में भी होती है। यदि इसका उल्टा हो, मन में प्रेम, सेवा अपनेपन की भावना हो तो सामने वाले में भी वैसी भावना जागने लगती है। मन संक्रमण करता है। इसीलिए परिवार बचाना हो तो प्रेम बचाएँ और प्रेम को अहंकार तथा राग से बचाएँ।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'। इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित **डॉ. विवेक चौरसिया** के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'.

जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.

Rs. 150/-
डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है. बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ... इसी के सूत्र बताती है

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी की पुस्तक "खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद".

Rs. 120/-
डाक खर्च सहित

आपसे कहा जाता है -

- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?
aisa kyon

जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - "**ऐसा क्यों?**" लेकिन इसका उत्तर देगा कौन? **इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक**

Rs. 100/-
डाक खर्च सहित

ऋषि मुनि प्रकाशन

90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

नवरात्रि स्पेशल फरियाली व्यंजन

पनीर पुडिंग

सामग्री : दो कप पनीर, 1-1/2 कप दूध पाउडर, एक कप मलाई, दो कप दूध, आधा कप सुखा मेवा कतरन, एक चम्मच इलायची पाउडर, आधा चम्मच केवडा एसेंस या गुलाब जल, पुडिंग बनाने का पॉट (पात्र), दो कप शक्कर ।

विधि : दूध को एक उबाल आने तक गर्म करें फिर उसने दूध पाउडर, शक्कर और किसा हुआ पनीर डाल दें। थोड़ा गाढ़ा हो जाए तब उसमें मलाई, इलायची पाउडर और सुखा हुआ मेवा कतरन थोड़ा डालकर गाढ़ा होने तक पकाएं। नीचे उतारकर उस में गुलाब जल या केवड़ा जल (इसेंस) डालें। पुडिंग के बर्तन को थोड़ा सा ग्रीस करके बचा हुआ मेवा नीचे डाल दे, ऊपर से तैयार मिश्रण डालकर फ्रिज में सेट करने के लिए रख दें। आधे घंटे बाद प्लेट में डिमोल्ड कर दीजिए। आपका पुडिंग तैयार है।

आप इसमें थोड़ा सा केशर भी डाल सकते हो और चेरी से सजा कर पेश करें। माता रानी को भोग लगा कर आप सब इस पुडिंग का आनंद लीजिए।

शेफ पूनम राठी, नागपुर
विविधा कुकिंग क्लासेस
9970057423

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

सम्मान री परंपरा ने मत भूलजो

खम्मा घणी सा हुकम आप सगळा ने ध्यान है आपाणे सांस्कृतिक देश बुजुर्गों रो सम्मान पौराणिक काल की देन है और इण बात ने स्वीकार करण में कतई संकोच नहीं हुवणो चाहिजे कि.. प्राण जाए पर वचन नहीं जाए.. इण देश में 21वीं शताब्दी की शुरुआत में कुछ धुंधली तस्वीरां इण तरह री सामने आ रही है जठे बुजुर्गों री सेवा ने पुण्य कार्य मान्यों जा रियो थो वठे मानों अब एक अभिशाप बण ग्यों है सहारा देवण वाला या भूल गया है कि वृद्धावस्था ईश्वर द्वारा रचियोड़ो इण दुनिया रो वो रंगमंच है जठे सगळा ने जाणों है आपणी पीढ़ी या देख रही है कि वाणे माता-पिता द्वारा नाना-नानी अथवा अन्य रिश्तों में बुजुर्गों रे साथ किण तरह रों व्यवहार करणों चहिजे क्योंकि या ही पीढ़ी आवण वालों भविष्य में सहारो बणेला श्रवण कुमार सूं लेने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम, भीष्म पितामह री सेवा ... आपाणा संत ग्रंथों में बुजुर्गों की सेवा रो बखूबी महत्व बतायों है हुकम...आधुनिकता री चकाचौंध ने आपाणी पारिवारिक मूल्यों ने बहुत गहराई तक रुद्रनावस्था में लाने छोड़ दियों है।

हुकम सच कहूं जीवन री अंतिम संध्या अंधकार में नहीं बिते इण वास्ते घर में मजबूत कंधों ने अपना कर्तव्य समझनों पड़ी साथे घर रा बुजुर्गों ने भी परिस्थितियों रें अनुसार सामंजस्य बिठानें आपरी प्रतिबद्धता दिखानी पड़ेला।

हुक्म, वृद्धावस्था एक ऐड़ी अवस्था है जो भरपूर सहानुभूति री अपेक्षा करें हुकुम किन्ही रे प्रति सहानुभूति प्रकट करणों भी मानवता रो बड़ो गुण है। एक बुजुर्ग पुरुष या महिला ने सुबह शाम ऊनि तकलीफ रे बारे में पूछ लियों जावे तो वह भी बड़ी औषधि रो काम करें वाणें खाने-पीने री चिंता वाणी किन्ही प्रकार री चिंता ने टटोलनों वाणें वो ताकत दे जावें जिनी वे सपने में कल्पना भी नहीं की हुवेलां ।

हुक्म...

बुजुर्गों रो आपा करा मान सम्मान..
या हीं आपाणी संस्कृति रो अभिमान..
आओ आपा अपनाओं यों ज्ञान..
माता-पिता दादा दादी
सभी बुजुर्गा ने देवां प्रेम..
जो देवो वो ही मिलेला
यों ही है इण जीवन रे कर्म रो सिद्धान्त।

मुलाहिजा फ़रमाइये

▸▸ ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

- रखने की जगह न होगी, इतना बेहिसाब मिलेगा
  जिसके पास माल है, उसे और असबाब मिलेगा
- भूखे के आगे ना करना तुम, बातें रोटी की
  अगर चुप भी रहोगे,तो उसका भी सवाब मिलेगा
- तुम छू कर भी न जान पाए, मेरे हाथों की तंगी
  तुम्हारी इस बेदिली का, एक दिन खिताब मिलेगा
- अजी लगाता नहीं है कोई भी,सलीके से इसको
  यूं तो हर चेहरे पर लटका हुआ, नक़ाब मिलेगा
- देखकर तुम्हारी आंखें, चौंधिया जायेंगी जरूर
  हर घर में कम से कम एक, महताब मिलेगा
- खाली कमरे में ही सही, चीख लिया करो जनाब
  तुम्हारी हर आवाज को, यकीनन जवाब मिलेगा
- यूं तो बेसब्र होकर, बरस रहा है आसमान
  मगर हर एक बूंद का, वहां हिसाब मिलेगा

कार्टून कौतुक

राशिफल संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

यह माह आपको पुराने रोग से मुक्ति प्रदान करने वाला होगा। न्यायालयीन प्रकरण में विजयश्री प्राप्त होगी। विरोधी परास्त होंगे। लंबी यात्रा के शुभ अवसर प्राप्त होंगे। खर्च की अधिकता जरूर रहेगी परंतु मन प्रसन्न रहेगा। उन्नति के नवीन अवसर प्राप्त होंगे। कार्य व्यवसाय में वृद्धि होगी। लंबी यात्रा पर खर्च करना पड़ेगा। नौकरी में पद प्रतिष्ठा में वृद्धि, पदोन्नति के अवसर एवं स्थान परिवर्तन के योग रहेंगे। राजकीय पक्ष में रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। आंखों से कष्ट रहेगा। स्थाई संपत्ति में वृद्धि तथा आय के नए स्त्रोत की प्राप्ति होगी एवं परिवार में विवाह संबंध तय होने से मन में हर्ष-उल्लास का वातावरण रहेगा।

वृषभ

यह माह आपके लिए आर्थिक दृष्टि से श्रेष्ठ रहेगा। आय के नए स्त्रोत की प्राप्ति होगी। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। संपत्ति से संबंधित प्रकरण में सफलता मिलेगी। विरोधी परास्त होंगे। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। रुका हुआ पैसा प्राप्त होगा। विवाह संबंध के योग प्रबल रहेंगे। भौतिक सुख सुविधा में खर्च करेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अनुकूलता रहेगी। पुराने मित्रों से मुलाकात होगी। पाचन तंत्र पेट गैस की तकलीफ का सामना करना पड़ सकता है। कर्ज के माध्यम से संपत्ति में वृद्धि होगी। संतान के कार्यों को लेकर एवं प्रगति में आ रही रुकावट से आप चिंताग्रस्त रहेंगे।

मिथुन

यह माह आपको विशेष नौकरी प्रदान करने वाला रहेगा। इस माह में शासकीय नौकरी या स्थाई आय के स्त्रोत की प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। लंबी यात्रा करेंगे। आंखों से कष्ट रहेगा। माता-पिता के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेंगे तथा इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। किसी देव विशेष की आराधना से ईस्ट साधना की प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। निर्विवाद व्यक्ति के रूप में सफल रहेंगे। आय के साधनों से पर्याप्त आय होगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। शुभ-मांगलिक कार्यों में खर्च करेंगे। वाणी पर नियंत्रण रखना आवश्यक रहेगा। परिवारजनों का स्नेह एवं सहयोग प्राप्त होगा।

कर्क

यह माह आपको विजय प्रदान करने वाला रहेगा। भाग्योदय होगा। रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। मन प्रसन्न रहेगा। हर्ष उल्लास का वातावरण निर्मित होगा। आय के स्थायी स्त्रोत की प्राप्ति होगी। धार्मिक भावना से परिपूर्ण रहेंगे। धर्म के प्रति अभिरुचि रहेगी। मांगलिक एवं धार्मिक उत्सव में भाग लेंगे तथा लोकप्रियता प्राप्त करेंगे। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होगी। संतान के रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। नवीन वाहन क्रय करने के योग प्रबल रहेंगे। चुनौती भरे कार्यों को हाथ में लेंगे एवं उसको युक्तियुक्त तरीके से करने में सफलता प्राप्त होगी।

सिंह

इस माह में आपको स्थायी संपत्ति से संबंधित प्रकरण में सफलता मिलेगी। न्यायालयीन प्रकरण में भी अनुकूलता रहेगी एवं शाम, दाम, दंड, भेद कोई भी नीति अपनाकर विजय प्राप्त कर लेंगे। आपके द्वारा दी गई सलाह से लोग लाभान्वित होंगे। पाचन तंत्र, पेट, गैस से कष्ट हो सकता है। सुस्वाद व्यंजनों का लुत्फ उठाएंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। शासन में रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे तथा राजनीतिक संपर्क का लाभ मिलेगा। खर्च पर पूर्ण नियंत्रण बना रहेगा। पुराने मित्रों से भेंट होगी। कला के क्षेत्र में लोकप्रियता प्राप्त होगी।

कन्या

इस माह में आपको दौड़-धूप अधिक करना पड़ेगी तथा उसकी तुलना में सफलता कम मिल पाएगी। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। स्थान परिवर्तन होगा। स्थायी संपत्ति में वृद्धि होगी। आर्थिक संपन्नता बढ़ेगी। भौतिक सुख-सुविधाओं शौक, मौज मस्ती एवं यात्रा पर खर्च करना होगा। विरोधियों को कब, कहां और कैसे परास्त करना, इस नीति में आप सफलता अर्जित करेंगे। संतान के रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे परंतु परिश्रम भी करना पड़ेगा। राजनीतिक संपर्क का लाभ मिलेगा। परिश्रम तो कठिन करना पड़ेगा परंतु भाग्य साथ देगा। परिवारजनों का स्नेह एवं सहयोग प्राप्त होगा।

तुला

यह माह आपको भौतिक सुख-सुविधा की दृष्टि से उत्तम रहेगा। भौतिक सुखों पर खर्च करेंगे। लंबी यात्रा होगी। मित्रों का स्नेह एवं सहयोग मिलेगा परंतु संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में अनावश्यक विलंब एवं तनाव बढ़ेगा। नौकरी एवं कार्य व्यवसाय में भी थोड़ा अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। समय की बर्बादी अधिक होगी। स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठाएंगे। अचानक धन प्राप्ति के योग रहेंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। खूब कमाएंगे एवं खूब खर्च भी करेंगे। भाई परिवारजनों का स्नेह एवं सह योग मिलेगा। दांपत्य जीवन उत्तम रहेगा। विवाह संबंध होने के योग प्रबल रहेंगे।

वृश्चिक

यह माह आपके लिए मान सम्मान में वृद्धि प्रदान करने वाला रहेगा। नवीन मित्रों का स्नेह एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही उनके माध्यम से धन प्राप्ति के भी योग प्रबल रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। संतान के रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। संतान सुख की प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से संपन्नता में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और निरंतर प्रगति पथ पर आगे बढ़ते चले जाएंगे। समाज में लोकप्रियता प्राप्त होगी किंतु विरोधी षड्यंत्र रचाएंगे हालांकि कुछ बिगाड़ नहीं पाएंगे परंतु सावधानी रखना नितांत आवश्यक रहेगा। असामाजिक व्यक्तियों से दूरियां बनाए रखें।

धनु

यह माह आपके लिए राजकीय पक्ष की अनुकूलता प्रदान करने वाला रहेगा। भौतिक सुख-सुविधा में वृद्धि होगी। लंबी यात्रा के योग प्रबल रहेंगे। स्थान परिवर्तन, पद प्रतिष्ठा, पदोन्नति के योग प्रबल बने रहेंगे। राजकीय पक्ष से सम्मान की प्राप्ति होगी। आय के नवीन साधनों की प्राप्ति एवं परिश्रम की तुलना में श्रेष्ठ धन लाभ की प्राप्ति के योग प्रबल बने रहेंगे। शुभ व मांगलिक काम का निर्धारण होगा। स्थाई संपत्ति में वृद्धि होगी। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। पाचन तंत्र से कष्ट के योग रहेंगे। विरोधी परास्त होंगे भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे एवं स्वादिष्ट व्यंजनों का लुप्त उठाएंगे। दांपत्य जीवन की अनुकूलता रहेगी।

मकर

यह माह आपके लिए राजकीय पक्ष की अनुकूलता प्रदान करने वाला रहेगा। रुके हुए कार्यों में प्रगति होगी परंतु कार्य में प्रथम बाधा आने के बाद कार्य सफलता की ओर अग्रसर होगा। परिजनों से वियोग सहन करना पड़ेगा। आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होगी। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। परिश्रम की तुलना में धन प्राप्ति से पूर्ण संतोष प्राप्त नहीं होगा। आपके द्वारा दी गई सलाह लोगों को लाभ प्रदान करेंगी। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे। अचानक धन लाभ और हानि दोनों के योग प्रबल रहेंगे। अतः शीघ्र लाभ-हानि प्रदान करने वाले कार्यों से दूरियां बनाकर रखें। संतान के रुके कार्य पूर्ण होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी।

कुम्भ

यह माह आपको भाग्योदय कारक रहेगा। रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। आय के स्थायी स्त्रोत की प्राप्ति होगी। नवीन कार्य, व्यवसाय में भी अच्छी सफलता के योग प्रबल रहेंगे। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। धार्मिक कार्यों में खर्च करेंगे। भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी व्यय होगा और वाणी के कारण कई बनते हुए कार्य बिगड़ सकते हैं। कर्ज के माध्यम से स्थायी संपत्ति में वृद्धि होगी। जीवनसाथी/ससुराल के माध्यम से धन प्राप्ति के योग रहेंगे। मित्रों का स्नेह प्राप्त होगा। जीवनसाथी से अनुकूलता रहेगी। स्वास्थ्य से संबंधित परेशानी आ सकती है। मन में किसी विषय को लेकर दुविधा बनी रहेगी।

मीन

यह माह आपको चुनौती भरे कार्यों के माध्यम से सफलता प्रदान करने वाला रहेगा। आप अदम्य साहस का परिचय देते हुए विपरीत धारा में विजयश्री प्राप्त करेंगे। दांपत्य जीवन मिलाजुला रहेगा। विवाह संबंध होने के योग प्रबल रहेंगे। अचानक लंबी यात्रा के योग रहेंगे। आय के स्थायी स्त्रोत की प्राप्ति होगी। राजकीय पक्ष से लाभ एवं सम्मान मिलेगा। प्रबंधन में आपकी बराबरी कोई नहीं कर पाएगा। पदोन्नति होगी एवं नेतृत्व करने का अवसर प्राप्त होगा। रक्त विकार के योग रहेंगे। मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। कानूनी प्रकरणों में सफलता मिलेगी। राजनीतिक संपर्क एवं राजकीय पक्ष से अनुकूलता बनी रहेगी।

इस बार करें पूर्ण शास्त्रोक्त सामग्री से लक्ष्मी पूजन

सुरक्षित दीपावली पूजन के लिए

ऋषि मुनि

लक्ष्मी पूजन सामग्री

- 44 शास्त्रोक्त पूजन सामग्री
- पूजन विधि पुस्तिका के साथ
- प्रामाणिक एवं गुणवत्ता युक्त
- आकर्षक गिफ्ट पेकिंग
- पाए मुफ्त ऋषि मुनि पंचाग

RISHI MUNI
LAXMI PUJAN KIT

amazon meesho

Rishi Muni Creations

90, Vidya Nagar Ujjain, MP
rishimunicreations@gmail.com
96372 87416

Aditya Birla Group: Making a life changing difference

We work in 7000 villages. Reach out to 9 million people. A glimpse:

HEALTHCARE

Over 100 million Polio vaccinations

5,000 Medical camps / 20 Hospitals: 1 million patients treated

Over 50 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant

Reach out to over 4,000 children. Extending financial support for the chemotherapy sessions. Encouraging them in a holistic manner to get back quickly on the road to recovery.

Engaged in prevention of cervical cancer through the administration of the HR-HPV vaccines in Maharashtra. Over 1800 girls have been vaccinated.

More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India

100,000 persons tested on 32 health parameters through HealthCubed

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students

Mid-day meals provided to 74,000 children

Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland

Foster the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets

45,000 women empowered through 4500 SHGs

200,000 farmers on board our agro-based training projects

And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spearheaded by Mrs. Rajashree Birla. Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP
Engage. Uplift. Empower

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2020-2022
Despatch Date - 02 October, 2021

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com